चौथा भाग

(१)

कारेनिन पति-पत्नी एक ही घर में रहते जा रहे थे, हर दिन मिलते थे, मगर एक-दूसरे के लिये सर्वथा अजनबी थे। अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच कारेनिन ने पत्नी के साथ हर दिन मिलने का इसलिये नियम-सा बना लिया था कि नौकरों-चाकरों को किसी तरह के अनुमान लगाने का आधार न मिले, लेकिन वह घर पर दिन का भोजन करने से कन्नी काटता। व्रोन्स्की कारेनिन के घर नहीं आता था, किन्तु आन्ना उससे घर के बाहर कहीं मिलती थी और पति यह जानता था।

इन तीनों के लिये यह यातनापूर्ण स्थिति थी और अगर उन्हें इस बात की आशा न होती कि यह स्थिति बदल जायेगी, कि यह अस्थायी दुखद कठिनाई है, जो दूर हो जायेगी, तो इन तीनों में से कोई भी इसे एक दिन भी बर्दाश्त न कर पाता। कारेनिन को यह उम्मीद थी कि जैसे हर चीज़ का अन्त होता है, ऐसे ही आन्ना की भावनाओं का यह तूफ़ान भी ख़त्म हो जायेगा, कि सभी इसके बारे में भूल जायेंगे और उसका नाम निष्कलंक ही रह जायेगा। आन्ना, जिस पर यह स्थिति निर्भर करती थी और जिसके लिये यह सबसे ज़्यादा यातनाप्रद थी, इसे इसलिये सहन कर रही थी कि उसे न केवल आशा ही, बल्कि इस बात का दृढ़ विश्वास था कि बहुत जल्द यह सारी स्थिति सुलझ जायेगी, स्पष्ट हो जायेगी। वह निश्चय ही यह नहीं जानती थी कि कैसे यह उलझन सुलझेगी, मगर उसे पक्का यक़ीन

था कि बहुत जल्द ऐसा हो जायेगा। अनचाहे ही उसका अनुकरण करते हुए व्रोन्स्की भी किसी ऐसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रहा था, जो उसपर निर्भर नहीं करती थी, मगर फिर भी जो इन सारी कठिनाइयों को स्पष्ट कर देगी।

जाड़े के मध्य में व्रोन्स्की को बहुत ही ऊब-भरा एक सप्ताह बिताना पड़ा। पीटर्सबर्ग आनेवाले एक विदेशी राजकुमार के साथ उसकी ड्यूटी लगा दी गयी और उसे पीटर्सबर्ग के दर्शनीय स्थान दिखाने को कहा गया। व्रोन्स्की स्वयं भी विशिष्ट व्यक्तित्व रखता था, इसके अलावा अपने मान-सम्मान की रक्षा करते हुए दूसरे का आदर करने की कला तथा ऐसे लोगों के साथ पेश आने का ढंग भी जानता था। इसीलिये राजकुमार के साथ उसे नियुक्त किया गया था। लेकिन उसे अपना यह कर्त्तव्य बहुत बोझिल प्रतीत हुआ। राजकुमार कुछ भी ऐसा नहीं छोड़ना चाहता था, जिसके बारे में घर पर उससे यह पूछा जा सकता था कि उसने रूस में वह देखा या नहीं। इसके अलावा वह यथासम्भव रूसी मनोरंजनों का भी आनन्द पाना चाहता था। व्रोन्स्की को उसके लिये दोनों चीज़ों की चिन्ता करनी होती थी। सुबहों को वे दर्शनीय स्थान देखने जाते और शामों को राष्ट्रीय मनोरंजनों में भाग लेते। राजकुमारों के नाते भी इस राजकुमार की सेहत ग़ैरमामूली थी। उसने कसरत और अपने शरीर की अच्छी देखभाल से अपने को ऐसा मज़बूत बना लिया था कि मौज मनाने के मामले में ज़्यादतियां करने के बावजूद वह बड़े, हरे-भरे और चमकते हुए हालैंडी खीरे के समान लगता था। राजकुमार ने बहुत देशों की यात्रा की थी और यह मानता था कि यातायात के आधुनिक साधनों का मुख्य लाभ यह है कि विभिन्न राष्ट्रीय मनोरंजनों का मज़ा लिया जा सकता है। वह स्पेन हो आया था, जहां उसने प्रेम-गीत गाये थे और एक स्पेनी मेंडोलिन वादिका से उसकी घनिष्ठता रही थी। स्विटज़रलैंड में उसने सांभर का शिकार किया था। इंगलैंड में वह लाल फ़ाक कोट पहनकर बाड़ों पर घोड़े को कुदाता, शिकार खेलता रहा और उसने शर्त लगाकर दो सौ तीतर मारे थे। तुर्की में वह हरम में गया और भारत में उसने हाथी पर सवारी की। अब वह रूस में सभी विशेष रूसी मनोरंजनों का मजा लेना चाहता था।

चूंकि राजकुमार के मनबहलाव की मुख्यतः व्रोन्स्की पर ज़िम्मेदारी

थी, इसलिये विभिन्न लोगों द्वारा सुझाये गये मनोरंजनों की व्यवस्था करने के लिये उसे बड़ी मेहनत करनी पड़ी। दुलकी चाल की घुड़दौड़ें, पूड़ों की दावत, भालुओं का शिकार, त्रोइका की सवारी, बंजारों का नाच-गाना और नशे में धुत्त होकर बर्तन तोड़ने तक – सभी तरह के मनोरंजन। राजकुमार बहुत आसानी से रूसी रंग का आदी हो गया, उसने ट्रे में रखे बर्तनों को तोड़ा, बंजारिन को गोद में बिठाया और मानो यह पूछता हुआ प्रतीत हुआ – कुछ और भी या बस, यही है रूसी रंग?

वास्तव में सभी रूसी मनोरंजनों में से राजकुमार को सबसे ज़्यादा पसन्द आईं फ़्रांसीसी अभिनेत्रियां, बैले-नर्तकी और सफ़ेद निशानवाली शेम्पेन। व्रोन्स्की राजकुमारों का अभ्यस्त था, लेकिन या तो इसलिये कि पिछले कुछ अर्से से वह ख़ुद बहुत बदल गया था या फिर इस राजकुमार के बहुत ज़्यादा निकट रहने के कारण उसे यह सप्ताह बहुत ही बोझिल लगा। हफ़्ते भर उसे उस आदमी जैसी अनुभूति होती रही, जिसे किसी ख़तरनाक पागल के साथ रहने को कह दिया गया हो, जो उस पागल से डरता रहे और साथ ही उसकी निकटता के कारण उसे अपनी अक्ल की भी फ़िक्र बनी रहे। व्रोन्स्की को लगातार इस बात की ज़रूरत महसूस होती रही कि राजकुमार के साथ उसके कड़े औपचारिक आदर के अन्दाज़ में क्षण भर को भी ढील न आये, ताकि उसका अपमान न हो। व्रोन्स्की को यह देखकर हैरानी होती थी कि जो लोग राजकुमार को रूसी मनोरंजन का आनन्द देने के लिये अपना एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाते थे, उनके प्रति उसका रवैया तिरस्कारपूर्ण था। रूसी नारियों से सम्बन्धित, जिन्हें वह समझना चाहता था, राजकुमार की विवेचना से व्रोन्स्की कई बार गुस्से से लाल-पीला हो चुका था। व्रोन्स्की को राजकुमार क्यों बहुत अखरता था, इसका मुख्य कारण यह था कि उसमें वह ख़ुद अपने को देखता था। इस दर्पण में उसे अपनी जो सूरत दिखाई देती थी, उससे उसके आत्माभिमान को सन्तोष नहीं होता था। यह बहुत ही बुद्धू, बहुत ही आत्मविश्वासी, बहुत ही हृष्ट-पुष्ट और बहुत ही सफ़ाईपसन्द आदमी था और इससे अधिक कुछ नहीं। वह जेंटिलमैन था – यह सच था और व्रोन्स्की इससे इन्कार नहीं कर सकता था। अपने से ऊंचे दर्जे वालों के साथ वह

सहजभाव और आत्मसम्मान से पेश आता था, अपने बराबर वालों के साथ खुला और सादगी का बर्ताव करता था और अपने से नीचे वालों के प्रति तिरस्कारपूर्ण कृपालुता का रवैया रखता था। व्रोन्स्की ख़ुद भी ऐसा था और इस बात पर बड़ा गर्व करता था, लेकिन राजकुमार के मामले में वह नीचे दर्जे वाला था और अपने प्रति उसके तिरस्कारपूर्ण कृपालुता के रवैये से उसे झल्लाहट होती थी।

"ख़रदिमाग़ भैंसा! क्या मैं ऐसा ही हूं?" वह सोचता था।

ख़ैर, जो भी हो, राजकुमार के मास्को के लिये रवाना होने के सातवें दिन जब उसने उससे विदा ली और राजकुमार ने उसके प्रति आभार प्रकट किया, तो उसे ख़ुशी हुई कि इस अटपटी स्थिति तथा इस अप्रिय दर्पण से उसे मुक्ति मिली। भालू के शिकार और रातभर रूसी रंग-रेलियों के बाद रेलवे स्टेशन पर उसने राजकुमार को विदा किया।

(२)

घर लौटने पर व्रोन्स्की को आन्ना का एक रुक़्क़ा मिला। उसने लिखा था: "मैं बीमार और बहुत दुखी हूं। मैं बाहर नहीं निकल सकती और आपसे मिले बिना भी नहीं रह सकती। शाम को आ जाइये। अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच सात बजे परिषद की बैठक में जायेगा और दस बजे तक वहीं रहेगा।" क्षण भर को इस अजीब बात पर विचार करके कि पति की मनाही के बावजूद वह उसे अपने यहां बुला रही है, उसने जाने का फ़ैसला किया।

इस जाड़े में व्रोन्स्की को कर्नल बना दिया गया था। वह रेजिमेन्ट से अलग अकेला रहने लगा था। नाश्ता करने के फ़ौरन बाद वह सोफ़े पर लेट गया और पांच मिनट के दौरान पिछले दिनों में देखे गये भद्दे दृश्यों की स्मृतियां उलझ-उलझाकर आन्ना तथा उस देहाती हंकुआ के बिम्बों के साथ घुल-मिल गयीं, जिसने भालू के शिकार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। और व्रोन्स्की की आंख लग गयी। वह डर से कांपता हुआ अंधेरे में जागा और उसने झटपट मोमबत्ती जलाई। "क्या था वह? क्या था? ऐसा क्या भयानक देखा था मैंने सपने में?

हां, हां। लगता है कि बिखरी दाढ़ी वाले नाटे और गन्दे-मन्दे देहाती हंकुए ने झुककर कुछ किया था और फिर अचानक फ़ांसीसी में कुछ अजीब-से शब्द बोलने लगा था। हां, इसके अलावा तो सपने में और कुछ नहीं था," उसने अपने आपसे कहा। "लेकिन वह इतना भयानक क्यों था?" उसे बड़ी सजीवता से पुनः इस देहाती और उन अस्पष्ट फ़्रांसीसी शब्दों की याद हो आयी, जो इस देहाती ने कहे थे और उसे अपनी पीठ पर भय की झुरझुरी-सी अनुभव हुई।

"यह क्या बकवास है!" व्रोन्स्की ने सोचा और घड़ी पर नज़र डाली।

रात के साढ़े आठ बज चुके थे। उसने घण्टी बजाकर नौकर को बुलाया, जल्दी से कपड़े पहने और बाहर आ गया। वह सपने के बारे में बिल्कुल भूल गया था और केवल इसी बात से व्यथित था कि उसे देर हो गयी थी। कारेनिन परिवार के घर के पास पहुंचने पर उसने घड़ी देखी – नौ बजने में दस मिनट बाक़ी थे। ऊंची, संकरी-सी बग्घी, जिसमें दो भूरे घोड़े जुते थे, दरवाज़े के सामने खड़ी थी। उसने आन्ना की बग्घी को पहचान लिया। "वह मेरे यहां जा रही है," व्रोन्स्की ने सोचा, "और यही बेहतर भी होता। इस घर में क़दम रखना मुझे अच्छा नहीं लगता। लेकिन जो भी हो, मैं छिप तो नहीं सकता," उसने अपने आपसे कहा और बचपन से आदी जैसे बन गये उस आदमी के अन्दाज़ में, जिसके लिये शर्म की कोई बात नहीं, वह अपनी स्लेज से निकलकर दरवाज़े के पास पहुंचा। दरवाज़ा खुला और हाथ पर कम्बल डाले हुए दरबान ने बग्घी को बुलाया। व्रोन्स्की यों तो छोटी-मोटी तफ़सीलों की ओर ध्यान देने का अभ्यस्त नहीं था, फिर भी इस समय वह दरबान की नज़र में आश्चर्य के उस भाव की अवहेलना न कर सका, जिससे उसने उसकी तरफ़ देखा। दरवाज़े के बीच व्रोन्स्की लगभग कारेनिन से टकरा गया। गैस की सीधी रोशनी काले टोप के नीचे कारेनिन के पीले, धंसे हुए चेहरे और ओवरकोट की ऊदबिलाव की खाल वाले कालर के पीछे चमक रही सफ़ेद टाई पर पड़ रही थी। कारेनिन की निश्चल और बुझी-बुझी आंखें व्रोन्स्की के चेहरे पर जम गयीं। व्रोन्स्की ने सिर झुकाया और कारेनिन ने मानो होंठों को चुमकारते हुए टोप की ओर हाथ उठाया और आगे चला गया। व्रोन्स्की ने देखा

कि कैसे वह मुड़कर देखे बिना बग्घी में जा बैठा, खिड़की से उसने कम्बल और दूरबीन ली तथा नज़र से ओझल हो गया। व्रोन्स्की ने ड्योढ़ी में प्रवेश किया। उसकी भौंहें तनी हुई थीं और आंखों में ग़ुस्से तथा गर्व की चमक थी।

"कैसी बेहूदा स्थिति है!" वह सोच रहा था। "अगर यह आदमी लड़ता, अपने सम्मान की रक्षा करता, तो मैं भी कुछ कर पाता, अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति दे सकता। लेकिन यह कमज़ोरी या नीचता... वह मुझे दग़ाबाज़ बना देता है, जबकि मैं न तो ऐसा बनना चाहता था और न चाहता हूं।"

व्रेदे के बाग़ में आन्ना के साथ हुई अपनी बातचीत के बाद से व्रोन्स्की के विचारों में बहुत परिवर्तन हो चुका था। अनचाहे ही आन्ना की दुर्बलता को स्वीकार करते हुए, जो पूरी तरह अपने को उसे सौंप चुकी थी और केवल उससे ही अपने भाग्य-निर्णय की राह देख रही थी तथा पहले से ही हर चीज़ के लिये राज़ी थी, व्रोन्स्की ने बहुत पहले से यह समझना बन्द कर दिया था कि उनका सम्बन्ध उस तरह समाप्त हो सकता है, जैसा कि वह तब समझता था। उसकी महत्त्वाकांक्षा की सारी योजनायें फिर से पीछे चली गयी थीं, और उसने यह महसूस करते हुए कि वह गतिविधियों के उस घेरे से, जिसमें सब कुछ स्पष्ट होता है, बाहर जा चुका है, पूरी तरह अपनी भावना के वश में हो गया और यह भावना उसे अधिकाधिक ज़ोर से आन्ना के साथ बांधती जा रही थी।

ड्योढ़ी में ही व्रोन्स्की को दूर जाती हुई आन्ना के पैरों की आवाज़ सुनाई दी। वह समझ गया कि वह उसकी राह देखती रही है, उसकी आहट पर कान लगाये रही है और अब मेहमानख़ाने को वापस जा रही है।

"नहीं!" व्रोन्स्की को देखकर वह चिल्ला उठी और उसके मुंह से पहली ध्वनि निकलते ही उसकी आंखों में आंसू छलछला आये, "नहीं, अगर यह ऐसे ही जारी रहा, तो बहुत पहले, बहुत ही पहले ऐसा हो जायेगा!"

"क्या बात है, मेरी प्यारी!"

"क्या बात है? मैं प्रतीक्षा कर रही हूं, एक घण्टे, दो घण्टे

से परेशान हो रही हूं ... नही, मैं नहीं करूंगी ! .. मैं तुम्हारे साथ झगड़ा नहीं कर सकती। ज़रूर तुम आ नहीं सकते होगे। नहीं, मैं नहीं करूंगी !"

आन्ना ने अपने दोनों हाथ उसके कंधों पर रख दिये और देर तक उसे ग़ौर से, ख़ुशी भरी तथा साथ ही परखती नज़र से देखती रही। जितने समय से उसने उसे नहीं देखा था, मानो उसकी कमी पूरी करते हुए वह उसे निहार रही थी। सभी मुलाक़ातों की भांति इस समय भी वह उसके बारे में अपनी कल्पना में बननेवाले चित्र को (जो कहीं बेहतर और वास्तव में असम्भव था) उसके साथ घुला-मिला रही थी, जैसा कि वह वास्तव में था।

(३)

"तुम उससे मिले?" जब वे मेज़ के पास लैम्प के नीचे बैठ गये, तो आन्ना ने पूछा। "तो यह तुम्हें देर से आने की सज़ा मिली है।"

"लेकिन, यह हुआ कैसे? उसे तो परिषद की बैठक में होना चाहिये था?"

"वह वहां गया था, लौट आया और अब फिर कहीं चला गया है। ख़ैर, यह कोई बात नहीं। इसकी चर्चा नहीं करो। तुम कहां थे? राजकुमार के साथ ही?"

आन्ना को उसके जीवन की सभी तफ़सीलें मालूम थीं। उसने कहना चाहा कि वह सारी रात सो नहीं पाया था और इसलिये उसकी आंख लग गयी, लेकिन उसके भाव-विभोर और ख़ुशी-भरे चेहरे को देखकर उसे लज्जा अनुभव हुई। इसलिये उसने कहा कि उसे राजकुमार की रवानगी के बारे में रिपोर्ट देने जाना था।

"तो अब तो यह सब ख़त्म हो गया? वह चला गया न?"

"शुक्र है भगवान का कि ख़त्म हो गया। तुम विश्वास नहीं करोगी कि मेरे लिये यह सब कितना असह्य था।"

"वह क्यों? आप सब जवान मर्दों की यही तो हर दिन की ज़िन्दगी है," उसने भौंहें चढ़ाकर कहा और मेज़ पर पड़ी हुई अपनी बुनाई को लेकर व्रोन्स्की की ओर देखे बिना उसमें से क्रोशिया छुड़ाने लगी।

"ऐसी ज़िन्दगी से मैं बहुत पहले नाता तोड़ चुका हूं," आन्ना के चेहरे के भाव परिवर्तन से हैरान होते तथा उसके अर्थ का अनुमान लगाते हुए उसने कहा। "और यह स्वीकार करता हूं," उसने मुस्कराकर अपने सुन्दर, सफ़ेद दांतों की झलक दिखाते हुए कहा, "इस सप्ताह में मैं इस तरह के जीवन को देखते हुए मानो ख़ुद को दर्पण में निहारता रहा और मुझे बहुत बुरा लगा।"

आन्ना बुनाई को हाथ में लिये थी, मगर बुन नहीं रही थी और व्रोन्स्की को अजीब चमकती और मैत्रीहीन दृष्टि से देख रही थी।

"आज सुबह लीज़ा मेरे यहां आई थी – ये लोग काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के बावजूद मेरे यहां आते हुए नहीं डरते," उसने इतना और जोड़ दिया, "और उसने मुझे आप लोगों की एथीनी पार्टी के बारे में बताया। कैसी घिनौनी बात है!"

"मैं कहने ही जा रहा था कि..."

आन्ना ने उसे टोक दिया।

"यह Thérèse थी न, जिसे तुम पहले जानते थे?"

"मैं कहना चाहता था..."

"कितने घिनौने हैं आप मर्द लोग! कैसे आप लोग यह नहीं समझ सकते कि औरत इसे कभी नहीं भूल सकती," आन्ना अधिकाधिक गर्म होती और इस तरह अपनी खीझ के कारण से पर्दा हटाती हुई कहती जा रही थी। "ख़ास तौर पर ऐसी औरत, जो तुम्हारी ज़िन्दगी के बारे में नहीं जान सकती। मैं क्या जानती हूं? मैं पहले भी क्या जानती थी?" वह कह रही थी, "वही, जो तुम मुझे बताते हो। मैं भला यह कैसे जान सकती हूं कि तुम सच कहते हो या नहीं..."

"आन्ना! तुम मेरा अपमान कर रही हो। क्या तुम मुझ पर विश्वास नहीं करतीं? क्या मैंने तुमसे यह नहीं कहा था कि मेरे दिमाग़ में एक भी ऐसा विचार नहीं है जिसे मैं तुम्हारे सामने न प्रकट करूं?"

"हां, हां," उसने सम्भवतः ईर्ष्या के भावों को दूर भगाने का यत्न करते हुए कहा। "मगर काश, तुम जान सकते कि मुझ पर कितनी भारी गुज़र रही है! मैं तुम पर विश्वास करती हूं, विश्वास क़रती हूं... हां, तो तुम क्या कह रहे थे?"

लेकिन वह फ़ौरन यह याद नहीं कर पाया कि क्या कहना चाहता

था। पिछले कुछ अर्से से आन्ना को बहुत अक्सर पड़नेवाले ईर्ष्या के इन दौरों से वह दहल उठता था और बेशक वह इसे छिपाने की बहुत कोशिश करता था, फिर भी इससे उसमें उदासीनता आती थी, यद्यपि वह यह जानता था कि उसके प्रति आन्ना का प्यार ही इस ईर्ष्या का कारण है। कितनी बार उसने अपने आपसे यह कहा था कि उसका प्यार उसके लिये परम सुख है और अब, जब वह उसे ऐसे प्यार करती थी, जैसे वह औरत कर सकती है, जिसके लिये प्यार दुनिया की सारी खुशियों से ज़्यादा महत्त्व रखता हो, उस समय की तुलना में उसका सुख कहीं कम था, जब वह उसके पीछे-पीछे मास्को से रवाना हुआ था। तब वह अपने को दुखी मानता था, लेकिन सुख अभी आने-वाला था। लेकिन अब वह यह महसूस करता था कि सुख पीछे रह गया है। वह बिल्कुल ऐसी नारी नहीं थी, जैसी कि उसने पहली बार देखने पर उसे अनुभव किया था। शारीरिक और भावनात्मक, दोनों दृष्टियों से वह पहले की तुलना में बुरी हो गयी थी। वह मोटा गयी थी और जब उसने अभिनेत्री की चर्चा की, तो क्रोध के भाव ने उसके चेहरे को विकृत कर दिया था। वह आन्ना की ओर ऐसे देख रहा था जैसे कोई व्यक्ति अपने द्वारा तोड़े और मुरझा गये उस फूल को देखता है, जिसमें वह मुश्किल से उस सौन्दर्य को देख पाता है, जिसके कारण उसने उसे तोड़ा और नष्ट किया था। और फिर भी वह अनुभव कर रहा था कि जब उसका प्यार बहुत प्रबल था, तब अत्यधिक इच्छा होने पर वह इस प्यार को अपने हृदय से निकाल सकता था, किन्तु अब, जबकि इस क्षण की भांति उसे ऐसा प्रतीत होता था कि उसके प्रति उसे प्यार की अनुभूति नहीं होती है, वह जानता था कि उसके लिये आन्ना से अपना नाता तोड़ना सम्भव नहीं।

"हां, तो तुम मुझसे क्या कहना चाहते थे राजकुमार के बारे में? मैंने भूत को भगा दिया है, भगा दिया है," उसने इतना और कह दिया। इनके बीच ईर्ष्या को भूत कहा जाता था। "हां, तो तुमने राजकुमार के बारे में क्या कहना शुरू किया था? किसलिये तुम्हें इतनी अधिक परेशानी महसूस हुई?"

"ओह, बर्दाश्त के बाहर था!" अपने विचार के तार को जोड़ने की कोशिश करते हुए उसने कहा। "उसे अधिक निकटता से जानने-

पहचानने पर उसका बुरा प्रभाव पड़ता है। अगर अधिक सही तौर पर कहा जाये, तो वह खिला-पिलाकर ख़ूब मोटा-ताज़ा किया हुआ पशु है, वैसा पशु, जो प्रदर्शनियों में प्रथम पुरस्कार पाते हैं, इससे अधिक कुछ नहीं," उसने ऐसे दुखी अन्दाज़ में कहा, जिसमें आन्ना ने विशेष रुचि ली।

"लेकिन यह कैसे हो सकता है?" आन्ना ने आपत्ति की। "आख़िर तो उसने बहुत कुछ देखा-भाला है, पढ़ा-पढ़ाया है?"

"वह दूसरे ढंग की पढ़ाई-लिखाई है – उनकी पढ़ाई-लिखाई। वह शायद केवल इसलिये सुशिक्षित है कि शिक्षा का तिरस्कार कर सके, जिस तरह वे जानवरों जैसे मज़े के अलावा हर चीज़ का तिरस्कार करते हैं।"

"लेकिन जानवरों जैसे ये मज़े तो तुम सभी को पसन्द हैं, उसने कहा और फिर व्रोन्स्की ने आन्ना की वह बुझी-सी दृष्टि देखी, जो उसकी दृष्टि से बच रही थी।

"तुम क्यों उसका ऐसे पक्ष ले रही हो?" व्रोन्स्की ने मुस्कराते हुए कहा।

"मैं पक्ष नहीं ले रही हूं, मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। लेकिन मैं समझती हूं कि अगर ख़ुद तुम्हें ये मज़े पसन्द न होते, तो तुम उनसे इन्कार कर सकते थे। लेकिन तुम्हें तेरेज़ा को हव्वा की पोशाक में देखने में मज़ा आता है..."

"फिर, फिर वही भूत!" आन्ना ने जो हाथ मेज़ पर रख दिया था, उसे अपने हाथ में लेकर चूमते हुए व्रोन्स्की ने कहा।

"हां, लेकिन मैं मजबूर हूं। तुम यह नहीं जानते कि तुम्हारी राह देखते हुए मैं कितनी परेशान रही हूं! मेरे ख़्याल में मैं ईर्ष्यालु नहीं हूं। मैं ईर्ष्यालु नहीं हूं। जब तुम यहां, मेरे साथ होते हो, तो मैं तुम पर भरोसा करती हूं, लेकिन जब तुम अकेले कहीं अपनी, मेरे लिये अनबूझ ज़िन्दगी बिताते हो, तो..."

वह उससे दूर हट गयी, आख़िर उसने अपनी बुनाई में से क्रोशिया छुड़ा लिया, कशीदा कढ़े कफ़ से ढकी उसकी पतली कलाई जल्दी-जल्दी तथा बेचैनी से हिलने-डुलने लगी और अपनी तर्जनी की मदद से लैम्प की रोशनी में एक के बाद एक सफ़ेद-सफ़ेद चमकते ऊन के फंदे क्रोशिये पर डालने लगी।

"हां, यह तो बताओ, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच से तुम्हारी कहां मुलाक़ात हुई?" अचानक उसकी आवाज़ कृत्रिम ढंग से गूंज उठी।

"दरवाज़ा लांघते वक़्त।"

"और उसने ऐसे तुम्हारा अभिवादन किया?"

आन्ना ने अपना मुंह लम्बा-सा किया, आंखों को आधा मूंदा, चेहरे के भाव को झटपट बदला और हाथों को जोड़ लिया। व्रोन्स्की को सहसा आन्ना के सुन्दर चेहरे पर वैसा ही भाव दिखाई दिया, जिससे कारेनिन ने उसका अभिवादन किया था। व्रोन्स्की मुस्करा दिया और आन्ना उस गहरी तथा प्यारी हंसी के साथ खिलखिलाकर हंस दी, जो उसका एक प्रमुख आकर्षण था।

"मैं उसे समझने में बिल्कुल असमर्थ हूं," व्रोन्स्की ने कहा। "अगर देहात में तुम्हारे सब कुछ कह देने के बाद वह तुमसे नाता तोड़ लेता, अगर वह मुझे द्वन्द्व-युद्ध के लिये ललकारता... लेकिन यह मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसी स्थिति को वह कैसे सहन कर सकता है? वह यातना सहन करता है, इतना साफ़ नज़र आता है।"

"वह?" उसने व्यंग्यपूर्वक मुस्कराकर कहा। "वह बहुत ख़ुश है।"

"किसलिये हम सब इतनी यातना सह रहे हैं, जबकि सब कुछ इतना अच्छा हो सकता था?"

"लेकिन वह यातना नहीं सह रहा है। क्या मैं उसे, उस झूठ को नहीं जानती हूं, जिससे वह परिपूर्ण है?.. कुछ भी अनुभव करते हुए क्या ऐसे रहना सम्भव है, जैसे वह मेरे साथ रहता है? वह कुछ नहीं समझता, कुछ अनुभव नहीं करता। जो व्यक्ति कुछ थोड़ा बहुत भी अनुभव करता है, क्या वह अपनी अपराधिनी बीवी के साथ एक ही घर में रह सकता है? क्या उसके साथ बातचीत करना सम्भव है? क्या निकटता दिखाते हुए उसे 'तुम' कहा जा सकता है?"

फिर से अनचाहे ही वह यह कहते हुए उसकी नक़ल उतारे बिना न रह सकी: "तुम, ma chère, तुम, आन्ना!"

"वह मर्द नहीं, इन्सान नहीं, कठपुतला है! कोई यह नहीं जानता, मगर मैं जानती हूं। ओह, अगर उसकी जगह मैं होती, तो कभी की ऐसी, अपने जैसी स्त्री को मार डालती, उसके टुकड़े कर देती और उसे ma chère, आन्ना न कहती। वह इन्सान नहीं, मिनिस्टरी

की मशीन है। वह यह नहीं समझता कि मैं तुम्हारी बीवी हूं, कि वह मेरे लिये पराया है, फ़ालतू है ... नहीं, हम उसकी चर्चा नहीं करेंगे! .."

"तुम्हारी बात ठीक नहीं है, सही नहीं है, मेरी प्यारी," आन्ना को शान्त करने का प्रयास करते हुए व्रोन्स्की ने कहा। "लेकिन हटाओ, हम उसके बारे में बात नहीं करेंगे। मुझे यह बताओ कि तुम क्या करती रही हो? तुम्हें क्या हुआ है? क्या बीमारी है तुम्हें और डाक्टर ने क्या कहा है?"

आन्ना व्यंग्यपूर्ण खुशी से उसकी ओर देख रही थी। शायद उसे पति के कुछ अन्य हास्यास्पद और घिनौने पक्ष याद आ गये थे और वह उन्हें व्यक्त करने के समय की प्रतीक्षा कर रही थी।

लेकिन व्रोन्स्की ने अपनी बात जारी रखी:

"मेरा अनुमान है कि यह बीमारी नहीं, बल्कि तुम्हारी गर्भ की स्थिति है। कब होगा वह?"

आन्ना की आंखों में व्यंग्यपूर्ण चमक बुझ गयी, लेकिन एक दूसरी मुस्कान ने – जिसका अर्थ व्रोन्स्की नहीं जानता था और जिसमें दुख का हल्का-सा पुट था – आन्ना के चेहरे के पहले वाले भाव का स्थान ले लिया।

"जल्द ही, जल्द ही। तुमने कहा था कि हमारी स्थिति यातनापूर्ण है, कि हमें इसका अन्त करना चाहिये। काश, तुम जान सकते कि मेरे लिये यह कितनी बोझिल है, कि तुम्हें बिना रोक-टोक और खुलकर प्यार कर पाने के लिये मैं कौन-सी क़ीमत चुकाने को तैयार न हो जाती! मैं ख़ुद यातना न सहन करती और तुम्हें अपनी ईर्ष्या से यातना न देती ... और जल्द ही यह हो जायेगा, मगर वैसे नहीं जैसे हम सोचते हैं।"

और इस विचार से कि यह कैसे होगा, उसे ख़ुद पर इतनी दया आई कि उसकी आंखों में आंसू छलक आये और वह अपनी बात जारी न रख सकी। उसने लैम्प के नीचे अंगूठियों और गोरेपन से चमकता हुआ अपना हाथ व्रोन्स्की की आस्तीन पर रख दिया।

"यह वैसे नहीं होगा, जैसे हम सोचते हैं। मैं तुम्हें कुछ बताना नहीं चाहती थी, मगर तुमने मुझे मजबूर कर दिया है। जल्द, बहुत जल्द यह सब समाप्त हो जायेगा और हम सभी, सभी को चैन मिल

जायेगा तथा हमें और अधिक यातना नहीं सहनी पड़ेगी।"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा," व्रोन्स्की ने उसे समझते हुए कहा।

"तुमने अभी पूछा था कि कब होगा? बहुत जल्द। और मैं ज़िन्दा नहीं रह पाऊंगी। तुम मुझे टोको नहीं!" और उसने अपनी बात कहने की उतावली की। "मैं यह जानती हूं और पक्की तरह जानती हूं – मैं मर जाऊंगी और बहुत ख़ुश हूं कि मर जाऊंगी, ख़ुद भी मुक्त हो जाऊंगी और तुम्हें भी मुक्त कर दूंगी।"

आन्ना की आंखों से आंसू बहने लगे। व्रोन्स्की अपनी बेचैनी को छिपाने की कोशिश करते हुए, जिसका, जैसा कि उसे मालूम था, कोई आधार नहीं था, मगर जिस पर वह क़ाबू पाने में असमर्थ था, उसके हाथ की ओर झुककर उसे चूमने लगा।

"तो यह बात है, यह बेहतर होगा," ज़ोर से व्रोन्स्की का हाथ दबाते हुए उसने कहा। "बस, यही, यही एक रास्ता बाक़ी है हमारे लिये।"

व्रोन्स्की ने सम्भलते हुए सिर ऊपर उठाया।

"कैसी बेतुकी बात है! कैसी बेसिर-पैर की बात कर रही हो तुम!"

"नहीं, यह सच है।"

"क्या, क्या सच है?"

"यही कि मैं मर जाऊंगी। मैंने सपना देखा है।"

"सपना?" व्रोन्स्की ने दोहराया और तुरंत ही उसे अपने सपने में दिखनेवाला देहाती याद हो आया।

"हां, सपना," आन्ना ने कहा। "बहुत पहले देखा था मैंने यह सपना। मुझे दिखाई दिया था कि मैं अपने सोने के कमरे में भागी गयी हूं, कि मुझे वहां से कुछ लेना था, कुछ जानना था, तुम जानते हो कि सपने में यह कैसे होता है," वह भय से आंखों को फैलाये हुए कहती जा रही थी, "और सोने के कमरे के कोने में मुझे 'कुछ' खड़ा-सा दिखाई दिया।"

"ओह, क्या बकवास है! कैसे यक़ीन किया जा सकता है ऐसी बात ..."

लेकिन आन्ना ने अपने को टोकने नहीं दिया। वह जो कुछ कह रही थी, उसके लिये बहुत महत्त्वपूर्ण था।

"और वह 'कुछ' मुड़ा। मैंने देखा कि वह नाटा-सा और बड़ा भयानक देहाती है, जिसकी दाढ़ी अस्त-व्यस्त है। मैंने भाग जाना चाहा, लेकिन वह एक बोरी पर झुककर उसमें हाथों से कुछ टटोलने लगा..."

आन्ना ने यह दिखाया कि कैसे वह बोरी में कुछ टटोल रहा था। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। व्रोन्स्की को अपना स्वप्न याद आ गया और उसे ऐसे ही भय की अनुभूति हुई।

"वह टटोल रहा था और 'र' वर्ण का फ़्रांसीसी अन्दाज़ में उच्चारण करते हुए जल्दी-जल्दी बड़बड़ाता जा रहा था: 'Il faut le battre le fer, le broyer, le pétrir...'* मैंने डर के कारण जागना चाहा, जाग गयी... लेकिन सपने में ही जागी। मैंने अपने आपसे पूछा कि इसका क्या अर्थ है। हमारे नौकर कोरनेई ने कहा – 'मालकिन, प्रसव में चल बसेंगी, प्रसव में...' और मेरी आंख खुल गयी..."

"कैसी बेतुकी बात है, कैसी बेतुकी बात है!" व्रोन्स्की ने कहा, लेकिन उसे ख़ुद यह महसूस हो रहा था कि उसकी आवाज़ में विश्वास का बल नहीं है।

"ख़ैर हटाओ, हम इस बारे में बात नहीं करेंगे। घण्टी बजाओ, मैं चाय लाने के लिये कह देती हूं। ज़रा रुको, अब बहुत समय नहीं लगेगा, मैं..."

लेकिन वह अचानक ख़ामोश हो गयी। आन की आन में उसके चेहरे का भाव बदल गया। शान्त, गम्भीर और सुखद एकाग्रता ने भय और घबराहट का स्थान ले लिया। व्रोन्स्की इस परिवर्तन का अर्थ नहीं समझ पाया। आन्ना अपने गर्भ में नये प्राणी का हिलना-डुलना सुन रही थी।

---

* लोहे को ढालना चाहिये, कूटना और गूंथना चाहिये। (फ़्रांसीसी)

अपने घर के दरवाज़े पर व्रोन्स्की से भेंट होने के बाद कारेनिन पहले से बने हुए अपने इरादे के मुताबिक इतालवी ऑपेरा देखने चला गया। वह दो अंकों तक वहां बैठा रहा और जिनसे उसे मिलना था, मिल-जुल लिया। घर लौटने पर उसने ध्यान से खूंटी को देखा और वहां फ़ौजी ओवरकोट न पाकर सदा की तरह अपने कमरे में चला गया। किन्तु हर दिन से भिन्न, वह बिस्तर पर न जाकर सुबह के तीन बजे तक अपने कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाता रहा। पत्नी के प्रति क्रोध, जो लोक-लाज को ध्यान में नहीं रखना चाहती थी और अपने घर पर प्रेमी से न मिलने की एकमात्र शर्त को पूरा करने को तैयार नहीं थी, उसे चैन नहीं लेने दे रहा था। उसने उसकी मांग पूरी नहीं की, इसलिये उसे उसको सज़ा देनी और तलाक़ लेने तथा बेटे को छीनने की अपनी धमकी पूरी करनी चाहिये। वह इस मामले से सम्बन्धित सभी कठिनाइयां जानता था, लेकिन चूंकि उसने ऐसा करने की धमकी दी थी, इसलिये अब उसे पूरा करना चाहिये। काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने उसे संकेत कर दिया था कि उसकी स्थिति का यही सबसे अच्छा हल है और पिछले कुछ समय में तलाक़ की क़ानूनी व्यवस्था इतनी सुधर गयी है कि कारेनिन को औपचारिक कठिनाइयां दूर करना सम्भव प्रतीत हुआ। फिर मुसीबत तो कभी अकेली नहीं आती। ग़ैररूसियों से सम्बन्धित मामले और ज़ारायस्काया गुबेर्निया की सिंचाई के सवाल को लेकर कारेनिन को दफ़्तरी काम-काज में इतनी अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ा था कि पिछले कुछ समय में वह बेहद खीझा-खीझा रहा था।

वह रात भर नहीं सोया और सुबह होने तक बहुत ही द्रुत गति से बढ़ता हुआ उसका गुस्सा अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया। उसने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और मानो गुस्से से लबालब भरा प्याला लेकर तथा डरता हुआ कि कहीं वह छलक न जाये, इस बात से डरता हुआ कि गुस्से के साथ वह शक्ति भी न जाती रहे, जो पत्नी से बात करने के लिये ज़रूरी थी, यह जानते ही कि वह जाग गयी है, उसके कमरे में दाखिल हुआ।

आन्ना, जो यह समझती थी कि अपने पति को बहुत अच्छी तरह जानती है, उसके भीतर आने पर उसकी सूरत देखकर दंग रह गयी। उसके माथे पर बल पड़े हुए थे, आंखें आन्ना की नज़र से बचती हुई उदासी से अपने सामने की ओर देख रही थीं और उसके होंठ घृणा से कसकर भिंचे हुए थे। उसकी चाल-ढाल, गतिविधि और आवाज़ में ऐसी दृढ़ता और निर्णय था, ऐसी अडिगता थी, जैसी आन्ना ने उसमें पहले कभी नहीं देखी थी। वह कमरे में दाख़िल हुआ, अभिवादन किये बिना सीधे उसकी मेज़ की तरफ़ चला गया और चाबी लेकर उसने दराज़ खोल ली।

"क्या चाहिये आपको?" आन्ना ने चिल्लाकर पूछा।

"आपके प्रेमी के पत्र," पति ने उत्तर दिया।

"वे यहां नहीं हैं," उसने दराज़ बन्द करते हुए कहा। किन्तु उसके ऐसा करने से वह समझ गया कि उसका अनुमान सही है और कठोरता से उसका हाथ झटककर वह थैला झपट लिया, जिसमें, जैसा कि उसे मालूम था, आन्ना अपने सबसे ज़रूरी काग़ज़ात रखती थी। आन्ना ने थैला छीन लेना चाहा, मगर कारेनिन ने उसे परे धकेल दिया।

"बैठ जाइये। मुझे आपसे बात करनी है," उसने थैले को बग़ल में दबाते और कोहनी से उसे इतने ज़ोर से भींचते हुए कहा कि उसका कंधा ऊपर को उठ गया।

आन्ना आश्चर्य और भय से चुपचाप उसकी तरफ़ देख रही थी।

"मैंने आपसे कह दिया था कि अपने यहां आपके प्रेमी को आने की इजाज़त नहीं दूंगा।"

"मेरे लिये उससे मिलना ज़रूरी था, ताकि..."

वह अपने मन से कोई बात नहीं बना पाई और इसलिये रुक गयी।

"मैं इस बात की तफ़सील में नहीं जाना चाहता कि किस लिये कोई औरत अपने प्रेमी से मिलना चाहती है।"

"मैं चाहती थी, मुझे केवल..." वह भड़क उठी। उसके अशिष्ट व्यवहार से उसे झल्लाहट हो रही थी और उसकी हिम्मत बढ़ रही थी। "क्या आप यह अनुभव नहीं करते कि आपके लिये मेरा अपमान करना कितना आसान है?" आन्ना ने कहा।

"किसी ईमानदार आदमी और ईमानदार औरत का अपमान हो सकता है, लेकिन चोर को चोर कहना तो केवल la constatation d'un fait* है।"

"आपके इस नये – क्रूरता के – लक्षण से मैं परिचित नहीं थी।"

"आप इसको क्रूरता कहती हैं कि पति पत्नी को पूरी आज़ादी और अपने बेदाग़ नाम की आड़ देता है तथा उससे केवल इतनी ही मांग करता है कि वह शिष्टाचार निभाये। यह क्रूरता है?"

"यह क्रूरता से बढ़कर है, अगर जानना चाहते हैं, तो यह नीचता है!" आन्ना क्रोध-विस्फोट से चिल्ला उठी और उसने उठकर बाहर जाना चाहा।

"नहीं!" वह अपनी चिचियाती आवाज़ में, जो अब सामान्य से कुछ ऊंची हो गयी थी, चिल्ला उठा और अपनी बड़ी-बड़ी उंगलियों से ऐसे कसकर आन्ना की बांह पकड़ते हुए कि वहां कंगन का, जिसे उसने दबा दिया था, लाल निशान पड़ गया, उसे ज़बर्दस्ती उसकी जगह पर बिठा दिया। "नीचता? अगर आप इसी शब्द का उपयोग करना चाहती हैं, तो नीचता है प्रेमी के लिये पति और बेटे को छोड़ देना और पति के टुकड़ों पर जीना!"

आन्ना ने सिर झुका लिया। उसने न केवल वह नहीं कहा, जो एक दिन पहले उसने अपने प्रेमी से कहा था कि वही उसका पति है और पति फ़ालतू है, बल्कि उसे इसका ख़्याल तक नहीं आया। वह उसके शब्दों की न्यायसंगतता को अनुभव कर रही थी और धीरे से उसने केवल इतना ही कहा:

"आप मेरी स्थिति का उससे बुरा चित्रण नहीं कर सकते, जैसी कि मैं ख़ुद उसे समझती हूं। लेकिन आप किसलिये यह सब कह रहे हैं?"

"किसलिये? किसलिये कह रहा हूं मैं यह?" वह उसी तरह ग़ुस्से से कहता गया। "ताकि आप यह जान जायें कि शिष्टाचार निभाने के बारे में आपने मेरी इच्छा की अवहेलना की है और इसलिये मैं इस स्थिति को समाप्त करने के लिये ज़रूरी क़दम उठाऊंगा।"

"वह तो वैसे ही जल्द, बहुत जल्द समाप्त हो जायेगी," आन्ना

---

* तथ्य का उल्लेख। (फ़्रांसीसी)

ने जवाब दिया और निकट आती तथा अब वांछित मौत का ख़्याल आने पर फिर से उसकी आंखें डबडबा आयीं।

"तुम और तुम्हारे प्रेमी के मंसूबों से कहीं पहले ही यह स्थिति ख़त्म हो जायेगी! आपको केवल पशु-वासना की तृप्ति की ज़रूरत है..."

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच! मैं यह नहीं कहूंगी कि यह आपके मन का छोटापन है, लेकिन मरे हुए को मारना तो शिष्टता भी नहीं।"

"हां, आपको केवल अपना ही ध्यान है, किन्तु उसकी यातना में, जो आपका पति था, आपकी कोई दिलचस्पी नहीं। आपको इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि उसकी सारी ज़िन्दगी बरबाद हो गयी है, कि उसने बेहद या... याद... यादना... सही है।"

कारेनिन इतनी जल्दी-जल्दी बोल रहा था कि अक्षर गड़बड़ा गये और वह किसी तरह 'यातना' न कहकर आख़िर 'यादना' ही कह पाया। आन्ना को हंसी और उसी क्षण शर्म आई कि ऐसे वक़्त उसके लिये हंसी की भी कोई बात हो सकती है। पहली बार उसे क्षण भर को उसके लिये सहानुभूति हुई, उसने अपने को उसके स्थान पर अनुभव किया और उसे उसपर दया आई। लेकिन वह उसे क्या कह सकती थी, क्या कर सकती थी? उसने सिर झुका लिया और ख़ामोश रही। वह भी कुछ समय तक चुप रहा और बाद में कुछ कम चिचियाती, रूखी आवाज़ में योंही मुंह में आ जाने और कोई विशेष महत्त्व न रखनेवाले शब्दों पर ज़ोर देते हुए बोलता गया।

"मैं आपसे यह कहने आया था..." उसने कहा...

आन्ना ने उसकी तरफ़ देखा। "नहीं, यह मुझे ऐसे ही प्रतीत हुआ था," उसने उसके चेहरे का वह भाव याद करते हुए, जब वह 'यातना' शब्द नहीं कह पाया था, सोचा, "नहीं, ऐसी धुंधली-धुंधली आंखों और आत्मतुष्टि वाला व्यक्ति क्या कुछ अनुभव कर सकता है?"

"कुछ भी बदलना मेरे बस में नहीं," वह फुसफुसाई।

"मैं आपसे यह कहने आया हूं कि कल मास्को जा रहा हूं और इस घर में अब नहीं लौटूंगा। मेरे निर्णय के बारे में आपको वकील से सूचना मिल जायेगी, जिसे मैं तलाक़ का मामला सौंपूंगा। मेरा बेटा

मेरी बहन के पास चला जायेगा," कारेनिन ने बड़े यत्न से वह याद करते हुए कहा, जो वह बेटे के बारे में बताना चाहता था।

"आप मेरा दिल दुखाने के लिये ही सेर्योझा को छीन लेना चाहते हैं न," उसने भौंहें चढ़ाकर उसकी ओर देखते हुए कहा। "आप उसे प्यार नहीं करते ... सेर्योझा को मेरे पास रहने दीजिये!"

"हां, मुझे बेटे से भी प्यार नहीं रहा, क्योंकि वह मुझे आपके प्रति मेरी घृणा की याद दिलाता है। फिर भी मैं उसे अपने पास रखूंगा। तो विदा!"

उसने जाना चाहा, लेकिन इस बार आन्ना ने उसे रोका।

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच, सेर्योझा को मेरे पास रहने दीजिये!" वह फिर फुसफुसाई। "मैं इससे ज़्यादा और कुछ नहीं कह सकती। सेर्योझा को तब तक मेरे पास रहने दीजिये, जब तक ... जल्द ही मेरा बच्चा होनेवाला है, सेर्योझा को रहने दीजिये!"

कारेनिन भड़क उठा और आन्ना से अपना हाथ छुड़ाकर चुपचाप कमरे से बाहर चला गया।

(५)

पीटर्सबर्ग के प्रसिद्ध वकील का प्रतीक्षा-कक्ष उस समय भरा हुआ था, जब कारेनिन उसमें दाख़िल हुआ। तीन महिलायें – एक बुढ़िया, एक जवान महिला और एक व्यापारी की बीवी तथा तीन महाशय – उंगली में अंगूठी पहने हुए एक जर्मन बैंकर, दाढ़ीवाला व्यापारी और वर्दी पहने एक चिड़चिड़ा-सा सरकारी अफ़सर, जिसके गले में एक पदक लटक रहा था, स्पष्टतः काफ़ी देर से वहां इन्तज़ार कर रहे थे। मेज़ों पर बैठे दो सहायक कुछ लिख रहे थे और उनकी क़लमें चीं-चीं की आवाज़ पैदा कर रही थीं। लिखने का सामान, जिसकी कारेनिन को सनक थी, असाधारण रूप से बढ़िया था। कारेनिन का इसकी ओर ध्यान जाये बिना न रह सकता था। एक सहायक ने उठकर खड़े हुए बिना, आंखें सिकोड़कर झल्लाहट के साथ कारेनिन से पूछा:

"क्या चाहिये आपको?"

"मुझे वकील से कुछ काम है।"

"वे व्यस्त हैं," सहायक ने प्रतीक्षा कर रहे लोगों की ओर क़लम से इशारा करते हुए कड़ाई से जवाब दिया और लिखना जारी रखा।

"क्या वे कुछ वक़्त नहीं निकाल सकते?" कारेनिन ने पूछा।

"उनके पास वक़्त नहीं है, वे हमेशा व्यस्त रहते हैं। कृपया इन्तज़ार कीजिये।"

"तो उन्हें मेरा कार्ड देने की कृपा करें," कारेनिन ने अपने को प्रकट करने की आवश्यकता अनुभव करते हुए गरिमापूर्वक कहा।

सहायक ने कार्ड ले लिया और उसपर जो कुछ लिखा था, स्पष्टतः उसे नापसन्द करते हुए दरवाज़ा खोलकर भीतर चला गया।

कारेनिन सैद्धान्तिक रूप से सार्वजनिक न्याय-कार्य के पक्ष में था, लेकिन कुछ उच्च सरकारी कारणों से वह रूस में उसके कुछ पक्षों को लागू करने के हक़ में नहीं था और जिस हद तक ज़ार द्वारा पुष्ट की गयी व्यवस्था की आलोचना करना सम्भव था, उस हद तक उसकी टीका-टिप्पणी करता था। उसका सारा जीवन प्रशासकीय कार्यकलापों में बीता था और इसलिये अगर कोई चीज़ उसे अच्छी न लगती, तो भूलों की अनिवार्यता की स्वीकृति तथा सुधार की सम्भावना से उसकी यह नापसन्दगी कम हो जाती। नई न्याय-व्यवस्था में वकालत के पेशे को जो स्थान दिया गया था, उसे वह पसन्द नहीं था। लेकिन अभी तक उसका वकीलों से वास्ता नहीं पड़ा था और इसलिये उसकी नापसन्दगी सैद्धान्तिक थी। लेकिन वकील के प्रतीक्षा-कक्ष में उसपर जो बुरा प्रभाव पड़ा, उससे उसकी नापसन्दगी और बढ़ गयी।

"अभी बाहर आ रहे हैं," सहायक ने कहा और वास्तव में ही दो मिनट बाद दरवाज़े पर बूढ़े विधिशास्त्री की लम्बी आकृति दिखाई दी, जो वकील के साथ सलाह-मशविरा करता रहा था और उसके पीछे-पीछे वकील भी बाहर आ गया।

वकील नाटा, मोटा, गंजे सिर, काली-लाल दाढ़ी, लम्बी भूरी भौंहों और बन्दर जैसे माथे वाला आदमी था। वह टाई और दोहरी ज़ंजीर वाली घड़ी से लेकर पेटेंट के चमकते जूतों तक एक दूल्हे की तरह बना-ठना हुआ था। उसका चेहरा बुद्धिमत्तापूर्ण तथा देहातिया था, मगर लिबास छैलों जैसा और कुरुचिपूर्ण।

"तशरीफ़ लाइये," वकील ने कारेनिन को सम्बोधित करते हुए

कहा। ख़ुद एक तरफ़ हटकर उदासी से कारेनिन को भीतर आने देते हुए उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

"बैठियेगा," उसने काग़ज़ों से भरी हुई लिखने की मेज़ के पास रखी कुर्सी की तरफ़ इशारा किया और ख़ुद सफ़ेद बालों से ढकी छोटी-छोटी उंगलियोंवाले हाथों को मलते हुए तथा एक ओर को सिर झुकाकर मेज़ के पीछे बैठ गया। लेकिन अपनी मुद्रा में उसने चैन की सांस ली ही थी कि कपड़े काटनेवाला कीड़ा मेज़ के ऊपर उड़ता आया। वकील ने ऐसी फुर्ती से, जिसकी उससे आशा नहीं की जा सकती थी, अपने हाथों को अलग किया, कीड़े को पकड़ा और फिर से पहली मुद्रा में बैठ गया।

"अपने मामले की चर्चा शुरू करने के पहले मैं यह कहना चाहूंगा," वकील की कीड़ा पकड़ने की हरकत को हैरानी से देखने के बाद कारेनिन ने कहा, "कि मैं जिस मामले की आपसे चर्चा करनेवाला हूं, उसे गुप्त रहना चाहिये।"

तनिक दिखाई देनेवाली मुस्कान से वकील की कुछ कुछ लाल और झुकी हुई मूंछें दोनों ओर फैल गयीं।

"अगर मैं लोगों के रहस्यों को गुप्त न रख पाता, तो वकील ही न होता। लेकिन अगर आप इसकी पुष्टि चाहते हैं..."

कारेनिन ने उसके चेहरे पर नज़र डाली और देखा कि उसकी भूरी, बुद्धिमत्तापूर्ण आंखें हंस रही हैं और मानो पहले से ही सब कुछ जानती हैं।

"आप मेरा कुलनाम जानते हैं न?" कारेनिन ने अपनी बात जारी रखी।

"आपको जानता हूं और हर रूसी की भांति आपकी उपयोगी..." उसने एक और कीड़ा पकड़ा, "...गतिविधियों से भी परिचित हूं," वकील ने ज़रा सिर झुकाकर कहा।

कारेनिन ने हिम्मत बटोरते हुए गहरी सांस ली। लेकिन एक बार तय कर लेने पर वह घबराये और रुके बिना तथा कुछ शब्दों पर ज़ोर देते हुए अपनी चिचियाती आवाज़ में कहता गया।

"मैं बीवी की बेवफ़ाई का शिकार होनेवाला बदक़िस्मत पति हूं," कारेनिन ने कहना शुरू किया, "और बीवी से क़ानूनी तौर पर अलग

होना चाहता हूं, यानी तलाक़ लेना चाहता हूं, सो भी ऐसे कि बेटा मां के पास न रहे।"

वकील की भूरी आंखों ने अपनी हंसी को दबाने की कोशिश की, लेकिन वे अदम्य ख़ुशी से उछल रही थीं और अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच ने देखा कि यह लाभदायक आर्डर पानेवाले व्यक्ति की ही ख़ुशी नहीं थी – यह तो विजयोल्लास और ऐसा हर्ष-उत्कर्ष था, ऐसी चमक, ऐसी द्वेषपूर्ण चमक थी, जो उसने बीवी की आंखों में देखी थी।

"आप तलाक़ लेने के लिये मेरी सहायता चाहते हैं न?"

"हां, लेकिन आपको आगाह कर देना चाहता हूं कि शायद मैं आपका वक़्त बरबाद ही करूं। मैं आपसे प्रारम्भिक सलाह-मशविरा करने आया हूं। मैं तलाक़ लेना चाहता हूं, मगर मेरे लिये यह महत्त्व-पूर्ण है कि किन-किन रूपों में वह सम्भव है। बहुत मुमकिन है कि अगर वे रूप मेरी इच्छा के अनुरूप नहीं होंगे, तो मैं क़ानूनी कार्रवाई से इन्कार कर दूं।"

"ओह, सो तो है ही," वकील ने कहा, "हमेशा आपको ही फ़ैसला करना होता है।"

वकील ने यह महसूस करते हुए कि वह अपनी अदम्य ख़ुशी की झलक से मुवक्किल को नाराज़ कर सकता है, अपनी नज़र कारेनिन के पैरों पर टिका ली। उसने अपने बिल्कुल सामने से उड़े जाते कीड़े को देखा, हाथ बढ़ाया, लेकिन कारेनिन की स्थिति का आदर करते हुए उसे पकड़ा नहीं।

"इस विषय के बारे में क़ानूनों को मैं मोटे तौर पर जानता हूं," कारेनिन कहता गया, "मैं उन रूपों को जानना चाहता हूं, जिनमें इस तरह का मामला व्यावहारिक तौर पर निपटाया जाता है।"

"आप यह चाहते हैं," वकील ने नज़र ऊपर उठाये बिना, किन्तु मज़ा लेते और मुवक्किल के बोलने का अन्दाज़ अपनाते हुए जवाब दिया, "कि मैं आपको वे तरीक़े बताऊं, जिनसे आप अपनी यह इच्छा पूरी कर सकते हैं।"

कारेनिन के सिर झुकाकर हामी भरने पर उसने अपनी बात जारी रखी और वह केवल कभी-कभार ही कारेनिन के चेहरे पर उभर आने-वाले लाल धब्बों पर उड़ती-सी नज़र डाल लेता था।

"तलाक़ हमारे क़ानूनों के मुताबिक़," उसने हमारे क़ानूनों के बारे में ज़रा नापसन्दगी ज़ाहिर करते हुए कहा, "जैसा कि आप जानते हैं, इन परिस्थितियों में सम्भव है... रुके रहो!" उसने दरवाज़े में से भीतर झांकनेवाले अपने सहायक से कहा, लेकिन फिर भी उठा, उससे कुछ शब्द कहे और फिर अपनी जगह पर आ बैठा। "इन परिस्थितियों में – पति-पत्नी में से किसी के शारीरिक दृष्टि से अक्षम होने पर, पांच साल तक पूरी तरह लापता हो जाने पर," उसने बालों से ढकी छोटी-सी उंगली को मोड़कर कहा, "इसके बाद परगमन (इस शब्द का उसने स्पष्ट प्रसन्नता के साथ उच्चारण किया)। उप-विभाजन ये हैं (वह अपनी मोटी-मोटी उंगलियों को मोड़ता गया, यद्यपि परिस्थितियों और उप-विभाजनों का एक साथ वर्गीकरण स्पष्टतः सम्भव नहीं था) – पति या पत्नी की शारीरिक अक्षमता, इसके बाद पति या पत्नी का परगमन।" चूंकि सभी उंगलियां मोड़ी जा चुकी थीं, इसलिये उसने उन सभी को सीधा कर लिया और अपनी बात जारी रखी: "यह तो सैद्धान्तिक बात है, लेकिन मैं यह समझता हूं कि आपने इस मामले का व्यावहारिक रूप जानने के लिये मेरे पास आने की कृपा की है। इसलिये पहले की मिसालों को ध्यान में रखते हुए मुझे आपसे यह निवेदन करना है – जैसा कि मैं समझता हूं, शारीरिक अक्षमतायें नहीं हैं? ख़बर के बिना लापता होने का भी सवाल नहीं है?.."

कारेनिन ने सहमति प्रकट करते हुए सिर झुकाया।

"तो नतीजा यह निकलता है – दम्पति में से किसी एक का परगमन और आपसी सहमति से अपराधी पक्ष का उद्घाटन और ऐसी सहमति की अनुपस्थिति में वस्तुगत अपराध-उद्घाटन। मुझे यह भी कहना होगा कि यह अन्तिम बात व्यवहार में बहुत कम पाई जाती है," वकील ने कहा और कारेनिन पर उड़ती-सी नज़र डालकर ऐसे ख़ामोश हो गया, जैसे तमंचाफ़रोश तरह-तरह की पिस्तौलों का गुण-वर्णन करके ग्राहक के चुनाव की प्रतीक्षा करता है। लेकिन कारेनिन चुप रहा और इसलिये वकील कहता गया: "मेरे ख़्याल में तो आपसी सहमति का परगमन सबसे आम तथा समझदारी का व्यावहारिक रास्ता है। कम पढ़े-लिखे आदमी के सामने मैंने अपने को ऐसे अभिव्यक्त न किया होता," वकील ने कहा, "लेकिन मैं समझता हूं कि हमारे लिये यह सब स्पष्ट है।"

किन्तु कारेनिन इतना परेशान हो चुका था कि आपसी सहमति से परगमन की समझदारी को फ़ौरन नहीं समझ पाया और उसने अपनी दृष्टि में यह उलझन प्रकट की। वकील ने उसी समय उसकी मदद की:

"लोग एक साथ नहीं रह सकते – यह एक तथ्य है। अगर दोनों इस बात से सहमत हैं तो तफ़सीलों और औपचारिकताओं का कोई महत्त्व नहीं रहता। साथ ही यह सबसे सीधा-सादा और विश्वसनीय उपाय है।"

कारेनिन अब अच्छी तरह से समझ गया। लेकिन उसकी कुछ धार्मिक शंकायें थीं, जो इस उपाय के उपयोग में आड़े आती थीं।

"इस मामले में इस उपाय का प्रश्न नहीं उठता," उसने कहा। "इस मामले में केवल वस्तुगत अपराध-उद्घाटन सम्भव है और इसके लिये उन पत्रों से उसकी पुष्टि की जा सकती है, जो मेरे पास हैं।"

पत्रों का उल्लेख करने पर वकील ने होंठ दबाये और पतली-सी, सहानुभूति और घृणापूर्ण ध्वनि निकाली।

"यह बताने की अनुमति दीजिये," उसने कहना शुरू किया। "इस तरह के मामले, जैसा कि आप जानते हैं, धार्मिक संस्थाओं के अन्तर्गत आते हैं और छोटे-बड़े पादरी ऐसे मामलों की छोटी से छोटी तफ़सीलों में जाने के फेर में रहते हैं," उसने पादरियों की रुचि के प्रति सहानुभूति प्रकट करनेवाली मुस्कान के साथ कहा। "पत्र निश्चय ही कुछ हद तक इसकी पुष्टि कर सकते हैं, लेकिन सबूत सीधे ढंग से यानी गवाहों के ज़रिये पेश किये जाने चाहिये। वैसे अगर आप मुझपर भरोसा करने का मुझे सम्मान प्रदान करते हैं, तो मुझे इस मामले के लिये इस्तेमाल किये जानेवाले तरीक़ों के चुनाव की भी छूट दीजिये। जो परिणाम चाहता है वह उपायों की भी अनुमति देता है।"

"अगर ऐसी बात है..." कारेनिन ने अचानक ज़र्द पड़ते हुए कहना शुरू किया, लेकिन वकील इसी वक़्त फिर से उठा और दरवाज़े पर प्रकट होनेवाले सहायक की ओर गया।

"उस महिला से कह दीजिये कि हमारे यहां फ़ीस के मामले में सौदेबाज़ी नहीं होती!" उसने कहा और कारेनिन की तरफ़ लौट चला।

अपनी जगह पर लौटते हुए उसने चुपके से एक कीड़ा और पकड़ लिया। "गर्मी तक मेरे फ़र्नीचर की कैसी बुरी हालत हो जायेगी," उसने नाक-भौंह सिकोड़ते हुए सोचा।

"तो आप कुछ कह रहे थे ..." उसने कारेनिन को सम्बोधित किया।

"मैं आपको ख़त द्वारा अपने फ़ैसले की ख़बर दे दूंगा," कारेनिन ने उठते और मेज़ थामते हुए कहा। कुछ देर चुप रहने के बाद वह बोला: "आपके शब्दों से मैं यह परिणाम निकाल सकता हूं कि तलाक़ लेना सम्भव है। मैं आपसे अपनी शर्तें बता देने का भी अनुरोध करना चाहता हूं।"

"अगर आप मुझे अपने ढंग से काम करने की छूट देंगे, तो सब कुछ सम्भव है," वकील ने कारेनिन के सवाल की अवहेलना करते हुए उत्तर दिया। "मैं कब आपका ख़त आने की उम्मीद कर सकता हूं?" वकील ने दरवाज़े की तरफ़ बढ़ते और अपनी आंखें तथा पेटेंट के जूतों की चमक दिखाते हुए पूछा।

"एक हफ़्ते बाद। आप जवाब में यह लिख भेजने की मेहरबानी कीजिये कि इस मामले को अपने हाथ में लेते हैं या नहीं और किन शर्तों पर।"

"ठीक है।"

वकील ने आदर से सिर झुकाया, मुवक्किल के लिये दरवाज़ा खोल दिया और अकेला रह जाने पर ख़ुशी की तरंग में बह गया। वह इतना खुश था कि अपने उसूलों के ख़िलाफ़ उसने सौदेबाज़ी करने-वाली महिला के लिये फ़ीस में कुछ कमी कर दी और यह तय करके कि अगले जाड़े तक सिगोनिन की भांति वह भी अपने सारे फ़र्नीचर पर मख़मल चढ़वा लेगा, उसने कपड़ा खानेवाले कीड़े पकड़ना बन्द कर दिया।

(६)

आयोग की सत्रह अगस्त की बैठक में कारेनिन की बड़ी शानदार जीत हुई, मगर इस जीत के नतीजे उसके लिये बहुत बुरे साबित हुए। कारेनिन के प्रयास के फलस्वरूप ग़ैररूसियों के जीवन का सभी दृष्टियों

से अध्ययन करनेवाला नया आयोग असाधारण शीघ्रता और उत्साह से संगठित करके उस क्षेत्र में भेज दिया गया। तीन महीने बाद उसने अपनी रिपोर्ट पेश कर दी। ग़ैररूसियों के जीवन और रहन-सहन का राजनीतिक, प्रशासकीय, आर्थिक, नृवंशीय, भौतिक और धार्मिक दृष्टियों से अध्ययन कर लिया गया था। सभी प्रश्नों के उत्तर दे दिये गये थे और उत्तर ऐसे थे, जिनके बारे में किसी तरह के शक-शुबहे की गुंजाइश नहीं हो सकती थी। कारण कि वे मानवीय मस्तिष्क की, जो हमेशा ही भूलें कर सकता है, उपज नहीं थे, बल्कि नौकरशाही की गतिविधियों के परिणाम थे। सभी जवाब सरकारी आंकड़ों, गवर्नरों और लाट पादरियों की रिपोर्टों के नतीजे थे, जो ज़िलों के प्रशासकीय संचालकों और धर्माध्यक्षों की रिपोर्टों पर आधारित थीं और ये रिपोर्टें देहात के प्रशासकीय कार्यालयों और पादरियों की रिपोर्टों पर आधारित थीं, और इसलिये ये सभी जवाब सन्देहहीन थे। प्रशासकीय मशीन की सुविधा के बिना सदियों तक हल न होने और हल न हो सकनेवाले ऐसे सभी सवालों, जैसे कि, मिसाल के लिये, फ़सल क्यों नहीं होती, वहां के निवासी अपने धर्म में क्यों आस्था बनाये हुए हैं, आदि, आदि के बिल्कुल स्पष्ट और यक़ीनी जवाब मिल गये। ये सभी जवाब कारेनिन के हक़ में थे। लेकिन स्त्रेमोव ने, जिसने आयोग की अन्तिम बैठक में अपने को बुरी तरह अपमानित अनुभव किया था, आयोग की रिपोर्ट आने पर ऐसी चालाकी से काम लिया, जिसकी कारेनिन ने कल्पना नहीं की थी। स्त्रेमोव ने आयोग के कुछ अन्य सदस्यों को अपने साथ लेकर न केवल कारेनिन के सुझावों को व्यावहारिक रूप देने का ख़ूब ज़ोरदार समर्थन ही किया, बल्कि अति की सीमा तक जानेवाले इसी तरह के कुछ अन्य सुझाव भी पेश कर दिये। कारेनिन के मूल विचार से कहीं आगे जानेवाले ये सुझाव स्वीकार कर लिये गये और तब स्त्रेमोव की चालाकी का पता चला। अति की सीमा तक पहुंचाये गये ये उपाय अचानक ऐसे मूर्खतापूर्ण प्रतीत हुए कि राजकीय कार्यकर्त्ता, जन-मत, बुद्धिमत्तापूर्ण महिलायें और अख़बार – सभी एक साथ इन उपायों पर बरस पड़े और उन्होंने इन उपायों तथा इनके जन्मदाता कारेनिन के ख़िलाफ़ अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की। स्त्रेमोव यह ज़ाहिर करते हुए कि उसने आंखें मूंदकर कारेनिन की योजना का अनुकरण किया था और

अब इसके नतीजे से ख़ुद हैरान तथा परेशान हो रहा है, बच निकला। कारेनिन की प्रतिष्ठा को इससे बड़ा धक्का लगा। लेकिन अपनी बिगड़ती सेहत और पारिवारिक परेशानी के बावजूद कारेनिन ने हिम्मत नहीं हारी। आयोग में फूट पड़ गयी। स्त्रेमोव के निर्देशन में कुछ सदस्यों ने अपनी भूल की यह सफ़ाई पेश की कि उन्होंने जांच-आयोग पर भरोसा किया, जिसका कारेनिन संचालन कर रहा था, और कहा कि आयोग की रिपोर्ट बिल्कुल बकवास तथा काग़ज़ की बरबादी है। दूसरी ओर ऐसे कुछ लोगों के साथ, जो दस्तावेज़ों के प्रति ऐसे क्रान्तिकारी रवैये के ख़तरे को समझ रहे थे, कारेनिन जांच-आयोग द्वारा तैयार किये गये आंकड़ों का समर्थन करता रहा। इसके परिणामस्वरूप ऊंचे क्षेत्रों और समाज में भी सारी स्थिति उलझ-उलझा गयी और इस बात के बावजूद कि सभी को इसमें बड़ी दिलचस्पी थी, कोई भी यह समझ पाने में असमर्थ था कि ग़ैररूसी वास्तव में ग़रीबी और बरबादी का शिकार हो रहे हैं या फल-फूल रहे हैं। इस गड़बड़ और कुछ हद तक उसकी बीवी की बेवफ़ाई के कारण उसके प्रति उत्पन्न होनेवाली तिरस्कार भावना के फलस्वरूप कारेनिन की स्थिति बड़ी डांवांडोल हो गयी थी। ऐसी हालत में भी कारेनिन ने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय किया। आयोग को आश्चर्यचकित करते हुए उसने यह घोषणा की कि वह मामले की जांच करने के लिये ख़ुद वहां जाने की अनुमति पाने का अनुरोध करेगा। और अनुमति पाकर कारेनिन दूर-दराज़ के उन गुबेर्नियाओं के लिये रवाना हो गया।

कारेनिन की रवानगी से काफ़ी शोर मचा, ख़ास तौर पर इसलिये कि प्रस्थान से पहले उसने विधिपूर्वक वह सारी रक़म लौटा दी, जो मंज़िल तक पहुंचने के लिये बारह घोड़ों के ख़र्च को ध्यान में रखकर उसे दी गयी थी।

"मेरे ख़्याल में उसका ऐसा करना बहुत ही प्रशंसनीय है," इस सम्बन्ध में बेत्सी ने प्रिंसेस म्याग्काया से कहा। "डाक-बग्घियों पर इतना पैसा क्यों बरबाद किया जाये, जब सबको यह मालूम है कि अब हर जगह रेलगाड़ी आती-जाती है?"

लेकिन प्रिंसेस म्याग्काया इससे सहमत नहीं थी और प्रिंसेस त्वेरस्काया के मत से उसे बीझ तक अनुभव हो रही थी।

"आपके लिये ऐसा कहना बहुत अच्छा है, जबकि आपके यहां जाने कितने लाख रूबल हैं, लेकिन मेरा पति जब गर्मियों में जांच-कार्य के लिये जाता है, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। उसे यात्रा करना पसन्द है और इससे उसकी सेहत बेहतर होती है तथा मेरे यहां कुछ ऐसी व्यवस्था बनी हुई है कि इस पैसे से मेरी घोड़ा-गाड़ी और कोचवान का ख़र्च चलता है।"

दूरस्थ गुबेर्नियाओं को जाते हुए कारेनिन तीन दिन के लिये मास्को में रुका।

मास्को पहुंचने के अगले दिन वह गवर्नर-जनरल से मिलने के लिये बग्घी में जा रहा था। गाज़ेत्नी गली के चौक में, जहां हमेशा निजी और किराये की बग्घियों की भीड़ रहती थी, कारेनिन को बहुत ऊंची और ख़ुशी भरी आवाज़ में अपना नाम सुनाई दिया और वह मुड़कर देखे बिना न रह सका। फ़ैशनदार छोटा ओवरकोट पहने तथा छोटा-सा फ़ैशनदार टोप सिर पर रखे, जो एक ओर को झुका हुआ था, मुस्कराता और लाल होंठों के बीच सफ़ेद दांतों की झलक दिखाता हुआ जवान, ख़ुशी से उमगता और चमकता ओब्लोन्स्की पटरी के पास खड़ा था तथा दृढ़ता और ज़ोर से उसे पुकारते हुए रुकने की मांग कर रहा था। वह एक हाथ से कोने में खड़ी बग्घी की खिड़की थामे था, जिसमें से मख़मल की टोपी से ढका हुआ एक नारी का सिर तथा बच्चों के दो सिर बाहर झांक रहे थे, और मुस्कराता हुआ दूसरा हाथ बहनोई की ओर हिला रहा था। महिला भी स्नेहपूर्वक मुस्कराती हुई कारेनिन की ओर हाथ हिला रही थी। यह बच्चों के साथ डौली थी।

कारेनिन मास्को में किसी से नहीं मिलना चाहता था और अपनी पत्नी के भाई से तो बिल्कुल ही नहीं। उसने टोप ऊपर उठाया और आगे बढ़ना चाहा, लेकिन ओब्लोन्स्की ने उसके कोचवान को रुकने का इशारा किया और बर्फ़ को लांघता हुआ उसकी तरफ़ भाग चला।

"अपने आने की ख़बर तक न देना तो बड़ी ज़्यादती है! कब आये? मैं कल द्यूस्सो के होटल में गया था, वहां तख़्ते पर लगी सूची में 'कारेनिन' पढ़ा, लेकिन मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकता था कि यह तुम हो!" बग्घी की खिड़की में अपना सिर घुसेड़ते हुए ओब्लो-

न्स्की ने कहा। "नहीं तो मैं तुम्हारे कमरे में आ गया होता। कितनी ख़ुशी हो रही है तुमसे यहां मिलकर!" बर्फ़ झाड़ने के लिये पांव से पांव टकराते हुए वह कह रहा था। "कितनी ज़्यादती है हमें अपने आने की ख़बर न देना!" उसने दोहराया।

"मुझे फ़ुरसत नहीं मिली, बहुत व्यस्त था मैं," कारेनिन ने रुखाई से कहा।

"आओ, मेरी बीवी के पास चलें, वह तुमसे मिलने को बहुत उत्सुक है।"

कारेनिन ने अपनी ठिठुरी हुई टांगों पर लिपटा कम्बल उतारा, बग्घी से बाहर निकला और बर्फ़ लांघते हुए डौली के पास पहुंचा।

"यह क्या बात है, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच, आप हमसे ऐसे कन्नी क्यों काट रहे हैं?" डौली ने मुस्कराते हुए पूछा।

"मैं बहुत व्यस्त रहा। आपसे मुलाक़ात होने पर बहुत ख़ुश हूं," उसने ऐसे अन्दाज़ में कहा, जो यह ज़ाहिर कर रहा था कि उसे ऐसा होने से दुख हुआ। "आपका स्वास्थ्य कैसा है?"

"मेरी प्यारी आन्ना का क्या हाल है?"

कारेनिन कुछ बड़बड़ाया और उसने जाना चाहा। मगर ओब्लोन्स्की ने उसे रोक लिया।

"देखो, कल हम ऐसा करेंगे। डौली, तुम इसे कल दिन के खाने पर बुला लो। कोज़्निशेव और पेसत्सोव को भी बुला लेंगे, ताकि यह ज़रा मास्को के बुद्धिजीवियों को भी चखकर देख ले।"

"हां, कृपया आइयेगा," डौली ने कहा। हम आपका पांच या छः बजे, जैसा आप उचित समझें, इन्तज़ार करेंगे। तो मेरी प्यारी आन्ना कैसी हैं? कितना अरसा हो गया..."

"वह स्वस्थ है," कारेनिन नाक-भौंह सिकोड़कर बड़बड़ाया। "बहुत ख़ुशी हुई!" और वह अपनी बग्घी की तरफ़ चल दिया।

"आयेंगे न?" डौली ने ऊंचे स्वर में पूछा।

कारेनिन ने कुछ जवाब दिया, जिसे डौली आती-जाती बग्घियों के शोर में नहीं सुन सकी।

"मैं कल तुम्हारे पास आऊंगा!" ओब्लोन्स्की ने पुकारकर कहा। कारेनिन बग्घी में चढ़ा और इतना पीछे को हटकर बैठ गया कि न तो ख़ुद किसी को देखे और न नज़र ही आये।

"अजीब आदमी है!" ओब्लोन्स्की ने बीवी से कहा और घड़ी पर नज़र डालकर चेहरे के सामने हाथ से कुछ ऐसा संकेत-सा किया, जिसका अर्थ पत्नी और बच्चों के प्रति स्नेह-प्रदर्शन था तथा बांकपन से पटरी पर चल दिया।

"स्तीवा! स्तीवा!" डौली लज्जारुण होते हुए चिल्लाई।

उसने मुड़कर देखा।

"मुझे ग्रीशा और तान्या के लिये ओवरकोट ख़रीदने हैं। पैसे तो दो!"

"कोई बात नहीं, कह देना कि मैं चुका दूंगा," और वह बग्घी में पास से गुज़रनेवाले एक परिचित को ख़ुशमिज़ाजी से सिर झुकाकर आंखों से ओझल हो गया।

(७)

अगले दिन इतवार था। ओब्लोन्स्की बैले के रिहर्सल के समय बोल्शोई थियेटर गया और प्यारी-सी नर्तकी माशा चीबिसोवा को, जो उसके संरक्षण के फलस्वरूप अभी-अभी वहां काम करने लगी थी, मूंगों का हार भेंट किया, जिसका उसने एक दिन पहले वादा किया था और थियेटर के अंधेरे में पर्दे के पीछे उसका प्यारा और उपहार पाकर चमक उठनेवाला मुंह चूम लिया। हार के उपहार के अलावा उसे बैले के बाद उससे मिलने के बारे में भी तय करना था। उसे यह समझाकर कि बैले के शुरू होने के वक़्त वह नहीं आ सकेगा, उसने वादा किया कि अन्तिम अंक के समय आयेगा और रात के खाने के लिये अपने साथ ले जायेगा। थियेटर से वह अख़ोत्नी रियाद चौक में पहुंचा, जहां उसने तीसरे पहर के खाने के लिये ख़ुद मछली और सब्ज़ी चुनी और बारह बजे द्यूस्सो के होटल में पहुंच गया। वहां उसे तीन व्यक्तियों से मिलना था, जो उसकी ख़ुशक़िस्मती से इसी होटल में ठहरे हुए थे। ये थे – लेविन, जो कुछ ही समय पहले विदेश से लौटा था, उसका नया विभागाध्यक्ष, जो कुछ ही समय पहले इस ऊंचे पद पर नियुक्त हुआ था और मास्को में

जांच-कार्य के लिये आया था और उसका बहनोई कारेनिन, जिसे वह अवश्य ही तीसरे पहर के खाने पर बुलाना चाहता था।

ओब्लोन्स्की को कहीं बाहर भोजन करना अच्छा लगता था, किन्तु छोटी, मगर खाने-पीने और मेहमानों के चुनाव की दृष्टि से बढ़िया दावत करना और भी ज़्यादा पसन्द था। आज की दावत का कार्यक्रम उसे बहुत अच्छा लग रहा था – उसमें ज़िन्दा लाई गयी पर्च मछलियां होंगी, अस्पारागस सब्ज़ी होगी और la pièce de résistance* के रूप में अद्भुत, लेकिन साधारण रोस्टबीफ़ होगा और उचित क़िस्म की शराबें होंगी। बस, खाने-पीने की बात समाप्त। मेहमानों में कीटी और लेविन होंगे और इसलिये कि वे दोनों साफ़ तौर पर लोगों की नज़र में न आयें चचेरी बहन और नौजवान श्चेर्बात्स्की भी होगा तथा मेहमानों में la pièce de résistance के रूप में कोज़्निशेव तथा कारेनिन होंगे। कोज़्निशेव – मास्कोवाला और दार्शनिक है, कारेनिन – पीटर्सबर्गी और व्यावहारिक आदमी है। हां, इनके अलावा जाने-माने सनकी और उत्साही पेसत्सोव को भी बुला लूंगा। यह उदारतावादी, बातूनी, संगीतज्ञ, इतिहासज्ञ और पचास वर्षीय प्यार तरुण कोज़्निशेव और कारेनिन के लिये चटनी का काम देगा। वह उन्हें उकसायेगा और भड़कायेगा।

जंगल ख़रीदनेवाले व्यापारी से पैसों की दूसरी क़िस्त मिल गयी थी और सभी पैसे अभी ख़र्च नहीं हुए थे। पिछले कुछ अर्से से डौली बहुत मधुर और मेहरबान रही थी और आज की दावत का विचार सभी दृष्टियों से ओब्लोन्स्की को ख़ुशी प्रदान कर रहा था। बहुत ही प्रसन्नचित्त था वह। हां, कुछ कुछ परेशानी पैदा करनेवाली दो परिस्थितियां भी थीं। किन्तु ये दोनों परिस्थितियां ओब्लोन्स्की के हृदय में लहरानेवाले ख़ुशमिज़ाजी और प्रसन्नता के सागर में डूब गयी थीं। ये परिस्थितियां थीं – पिछले दिन कारेनिन से सड़क पर मुलाक़ात होने पर उसने महसूस किया था कि उसके प्रति उसके व्यवहार में रूखापन और कठोरता थी। कारेनिन के चेहरे के इस भाव और इस बात को कि वह उनके यहां नहीं आया और अपने आने की सूचना भी नहीं दी और उन

---

* प्रमुख पकवान। (फ़्रांसीसी)

अफ़वाहों को ध्यान में रखते हुए, जो उसने आन्ना और व्रोन्स्की के बारे में सुनी थीं, ओब्लोन्स्की ने अनुमान लगाया कि पति-पत्नी के बीच कुछ गड़बड़ चल रही है।

यह पहली अप्रिय परिस्थिति थी। दूसरी कुछ अप्रिय परिस्थिति यह थी कि सभी नये संचालकों की भांति उसका नया संचालक भी एक भयानक व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध था, जो सुबह के छः बजे उठता और घोड़े की तरह काम करता था और अपने अधीन काम करनेवालों से भी इसी तरह काम करने की आशा करता था। इसके अलावा यह नया, बड़ा अधिकारी अपने व्यवहार में बड़ा अक्खड़ होने की ख्याति रखता था और अफ़वाहों के मुताबिक़ उसके विचार उससे पहलेवाले बड़े अधिकारी और उन विचारों के सर्वथा प्रतिकूल थे, जो अब तक ख़ुद ओब्लोन्स्की के भी विचार थे। पिछले दिन ओब्लोन्स्की सरकारी वर्दी पहनकर दफ़्तर में गया था और नया अफ़सर उसके साथ बहुत ही अच्छे ढंग से पेश आया था, उसने उसके साथ परिचित व्यक्ति के रूप में बातचीत की थी। इसलिये ओब्लोन्स्की फ़ाक-कोट में उससे मिलने के लिये जाना अपना कर्त्तव्य मानता था। यह विचार कि शायद नया बड़ा अधिकारी उसके साथ बहुत तपाक से न मिले, दूसरी अप्रिय परिस्थिति थी। लेकिन ओब्लोन्स्की अपनी सहज प्रेरणा से यह अनुभव कर रहा था कि सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा। "जैसे हम गुनाहगार हैं, वैसे ही बाक़ी सब भी हमारे जैसे इन्सान, सब लोग हैं। आपस में बिगड़ने और उलझने की क्या बात है?" होटल में दाख़िल होते हुए वह सोच रहा था।

"हलो, वसीली," एक ओर को झुका हुआ टोप पहने और गलियारे को लांघते हुए उसने होटल के एक परिचित नौकर को सम्बोधित किया, "तुमने गल-मुच्छे बढ़ा लिये? लेविन सात नम्बर में है न? कृपया मुझे रास्ता दिखा दो। हां, यह भी मालूम कर आओ कि काउंट आनिच्किन (यह उसका नया बड़ा अधिकारी था) से मैं मिल सकता हूं या नहीं?"

"जो हुक्म, हुज़ूर," वसीली ने मुस्कराते हुए जवाब दिया। "बहुत दिनों से हमारे यहां तशरीफ़ नहीं लाये।"

"मैं कल यहां आया था, लेकिन दूसरे दरवाज़े से। यही सात नम्बर है?"

ओब्लोन्स्की जब कमरे में दाख़िल हुआ, तो लेविन त्वेर के एक किसान के साथ कमरे के बीचोंबीच खड़ा हुआ भालू की ताज़ा खाल को माप रहा था।

"अरे, क्या ख़ुद शिकार किया है?" ओब्लोन्स्की ने चिल्लाकर कहा। "बढ़िया चीज़ है! मादा भालू? नमस्ते, अर्ख़ीप!"

उसने किसान से हाथ मिलाया और अपना ओवरकोट तथा टोप उतारे बिना कुर्सी पर बैठ गया।

"कोट उतारो न, कुछ देर तो बैठोगे ही!" लेविन ने उसके सिर पर से टोप उतारते हुए कहा।

"नहीं, मुझे फ़ुरसत नहीं है, मैं तो एक सेकण्ड को ही आया हूं," ओब्लोन्स्की ने जवाब दिया। उसने ओवरकोट के बटन खोल दिये, लेकिन बाद में उसे उतार दिया और लेविन के साथ शिकार और दूसरी दिली बातों की चर्चा करते हुए एक घण्टे तक बैठा रहा।

"कृपया यह बताओ कि विदेश में तुम क्या करते रहे? कहां-कहां गये?" किसान के चले जाने पर ओब्लोन्स्की ने पूछा।

"मैं जर्मनी, प्रशा, फ़्रांस और इंगलैंड हो आया हूं, लेकिन राज-धानियों में नहीं, बल्कि कारख़ानों-फ़ैक्टरियों वाले शहरों में। वहां मैंने बहुत कुछ नया देखा और मुझे ख़ुशी है कि मैं वहां गया।"

"हां, मज़दूर-समस्या के समाधान के बारे में तुम्हारे विचार से मैं परिचित हूं।"

"क़तई ऐसा नहीं है। रूस में मज़दूर-समस्या का प्रश्न ही नहीं उठता। रूस में तो भूमि के प्रति श्रमिक के रवैये का सवाल है। यह प्रश्न वहां भी है, किन्तु वहां तो बिगड़ी हुई चीज़ को सुधारने का प्रश्न है, जबकि हमारे यहां..."

ओब्लोन्स्की बहुत ध्यान से लेविन की बात सुन रहा था।

"हां, हां!" वह बोला। "बहुत सम्भव है कि तुम्हारी बात सही हो," उसने कहा। "मैं तो ख़ुश हूं कि तुम अच्छे मूड में हो, भालुओं का शिकार करते हो, काम करते हो और मन बहलाते हो। वरना श्चेर्बात्स्की ने मुझसे यह कहा था – वह तुमसे मिला था – कि तुम उदास-उदास हो, बस, मौत की ही बात करते हो..."

"हां, मौत के बारे में तो मैं अब भी सोचता रहता हूं," लेविन ने

जवाब दिया। "सच, मरने का वक़्त आ चुका है। और यह सब कुछ बकवास है। तुमसे सच्ची बात कहता हूं – मैं अपने विचार और काम को मूल्यवान मानता हूं, लेकिन वास्तव में तो – तुम इस पर सोचो – हमारी यह सारी दुनिया छोटी-सी फफूंदी है, जो छोटे-से ग्रह पर उभर आयी है। और हम यह सोचते हैं कि हमारे यहां कोई महान चीज़ हो सकती है – महान विचार, महान कार्य! यह सब बालू का एक कण है, छोटा-सा कण!"

"मेरे भाई, यह तो तुम आदम के ज़माने की बात कर रहे हो!"

"यह सही है, लेकिन जब आदमी साफ़ तौर पर यह समझ जाता है, तो सब कुछ तुच्छ हो जाता है। यह समझ जाने पर कि आज नहीं, तो कल मर जायेंगे और कुछ भी बाक़ी नहीं रहेगा, तो सब कुछ महत्त्वहीन हो जाता है। मैं अपने विचार को बहुत महत्त्वपूर्ण मानता हूं और अगर इसे व्यावहारिक रूप दिया जा सकता हो, तो वह उतना ही तुच्छ है, जितना कि इस भालू का शिकार करना। तो ऐसे ही हम अपनी ज़िन्दगी बिताते हैं, शिकार और काम में अपना मन लगाते हुए, ताकि मौत के बारे में न सोचें।"

ओब्लोन्स्की उसकी बातें सुनते हुए स्नेह और अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कराया।

"सो तो ज़ाहिर है! तो तुम आ गये मेरे रास्ते पर। याद है न कि कैसे तुमने इस बात के लिये मेरी आलोचना की थी कि मैं जीवन में आनन्द पाने के फेर में रहता हूं?

"ऐसे कठोर न बनो, ओ, नैतिकतावादी!.."

"नहीं, फिर भी जीवन में कुछ अच्छा है, तो यह..." लेविन के विचार उलझ गये। "मैं कुछ नहीं जानता। सिर्फ़ इतना जानता हूं कि हम जल्द ही मर जायेंगे।"

"जल्द ही क्यों?"

"और सुनो, जब हम मौत के बारे में सोचते हैं, तो जीवन इतना आकर्षक नहीं रहता, मगर चैन बढ़ जाता है।"

"इसके विपरीत, अन्त में तो और भी ज़्यादा मज़ा रहता है। पर ख़ैर, मुझे अब चलना चाहिये," ओब्लोन्स्की ने दसवीं बार उठते हुए कहा।

"ओह नहीं, कुछ देर और बैठो!" लेविन उसे रोकते हुए बोला। "अब फिर कब मुलाक़ात होगी हमारी? मैं तो कल जा रहा हूं।"

"अरे, मैं भी ख़ूब हूं! मैं आया किसलिये था... तीसरे पहर का खाना खाने के लिये आज ज़रूर ही मेरे यहां आओ। तुम्हारा भाई आयेगा, मेरा बहनोई कारेनिन भी आयेगा।"

"वह यहां है क्या?" लेविन ने कहा और उसने कीटी के बारे में पूछना चाहा। उसने सुना था कि जाड़े के शुरू में वह अपनी बहन के पास, जो एक कुटनीतिज्ञ की बीवी थी, पीटर्सबर्ग गयी थी और यह नहीं जानता कि वह लौट आयी या नहीं। लेकिन उसने विचार बदल लिया। "यहां आयेगी या नहीं—क्या फ़र्क़ पड़ता इससे।"

"तो आओगे न?"

"बेशक आऊंगा।

"तो पांच बजे और फ़ाक-कोट पहनकर।"

ओब्लोन्स्की उठा और अपने नये अधिकारी के पास नीचे चल दिया। उसकी सहजबुद्धि ने उसे धोखा नहीं दिया। नया, भयानक अफ़सर ख़ासा मिलनसार आदमी निकला। ओब्लोन्स्की ने उसके साथ कुछ खाया-पिया और इतनी देर तक बैठा रहा कि केवल तीन बजने के बाद ही कारेनिन के कमरे में पहुंचा।

(८)

गिरजे में सुबह की प्रार्थना से लौटने के बाद कारेनिन ने सारी सुबह अपने कमरे में बिताई। इस सुबह को उसे दो काम करने थे। पहला, इस समय मास्को में आये हुए ग़ैररूसियों के प्रतिनिधिमण्डल से मिलना और उसे पीटर्सबर्ग रवाना करना। दूसरा, वकील को वह पत्र भेजना, जिसका उसने वादा किया था। यह प्रतिनिधिमण्डल यद्यपि कारेनिन की पहलक़दमी पर बुलाया गया था, कई परेशानियां, यहां तक कि ख़तरे भी पेश करता था, और कारेनिन को इस बात की बहुत ख़ुशी थी कि मास्को में ही उसकी इस प्रतिनिधिमण्डल से भेंट हो गयी। इस प्रतिनिधि-मण्डल के सदस्यों को अपनी भूमिका और कर्त्तव्यों का तनिक भी आभास नहीं था। वे भोले-भाले ढंग से ऐसा मानते थे कि उनका काम

अपनी ज़रूरतें बताना और वर्त्तमान स्थिति का उल्लेख करना तथा सरकार से सहायता मांगना है। वे निश्चित रूप से यह नहीं समझते थे कि उनकी कुछ घोषणायें और मांगें विरोधी दल को समर्थन प्रदान करती थीं और इस तरह सारे मामले को चौपट कर सकती थीं। कारेनिन को बहुत देर तक उनके साथ माथापच्ची करनी पड़ी, उसने उनका सारा कार्यक्रम तैयार कर दिया, जिसका उन्हें कड़ाई से पालन करना चाहिये, और उन्हें विदा करके उनके मार्ग-दर्शन के लिये पीटर्सबर्ग कई पत्र लिखे। इस मामले में काउंटेस लीदिया इवानोव्ना को मुख्य सहायिका होना था। प्रतिनिधिमण्डलों के मामले में वह विशेषज्ञ थी और कोई भी उससे बेहतर ढंग से उनके लिये ज़मीन तैयार करना तथा उन्हें राह दिखाना नहीं जानता था। यह काम ख़त्म करके कारेनिन ने वकील को भी ख़त लिख दिया। किसी भी तरह की दुविधा के बिना उसने उसे, जैसा भी वह उचित समझे, कार्रवाई करने की अनुमति दे दी। पत्र में उसने आन्ना के नाम भेजे गये व्रोन्स्की के तीन रुक़्क़े भी डाल दिये, जो उसे आन्ना की दराज़ से निकाले गये थैले में मिले थे।

कारेनिन जब से परिवार में न लौटने का इरादा बनाकर घर से निकला था, जब से वह वकील के पास गया था और बेशक एक ही आदमी को उसने अपने मन की बात बतायी थी, ख़ास तौर पर उस समय से, जब से उसने अपने इस व्यक्तिगत मामले को लिखित काग़ज़ी कार्रवाई बना दिया था, वह इस इरादे का अधिकाधिक अभ्यस्त होता जा रहा था और इसे व्यावहारिक रूप देने की स्पष्ट सम्भावना देख रहा था।

वह वकील के नाम लिखे गये ख़त को मुहर लगा कर बन्द कर रहा था, जब उसे ओब्लोन्स्की की ऊंची आवाज़ सुनाई दी। ओब्लोन्स्की कारेनिन के नौकर के साथ बहस करता हुआ उसे अपने आने की सूचना देने के लिये विवश कर रहा था।

"अब फ़र्क़ ही क्या पड़ता है," कारेनिन ने सोचा, "वैसे तो यह और भी अच्छा रहेगा – मैं अभी उसकी बहन के सम्बन्ध में उसे अपनी स्थिति बता दूंगा और स्पष्ट कर दूंगा कि क्यों मैं उसके यहां भोजन करने नहीं जा सकता।"

"आने दो!" उसने अपने काग़ज़ समेटकर डिब्बे में रखते हुए पुकारकर कहा।

"देखा, तुम झूठ बोल रहे थे और वह घर पर है!" ओब्लोन्स्की ने उसे रोकनेवाले नौकर से कहा और चलते-चलते ही ओवरकोट उतारते हुए कमरे में दाख़िल हुआ। "बहुत ख़ुश हूं कि तुम मिल गये! तो मुझे उम्मीद है कि ..." ओब्लोन्स्की ने ख़ुशमिज़ाजी से कहना शुरू किया।

"मैं नहीं आ सकूंगा," कारेनिन ने खड़े रहकर और मेहमान को बैठने के लिये न कहते हुए रुखाई से जवाब दिया।

कारेनिन ने फ़ौरन औपचारिक सम्बन्ध स्थापित करने चाहे, जो ऐसी बीवी के भाई के साथ होने चाहिये, जिसके विरुद्ध वह तलाक़ की कार्रवाई शुरू करनेवाला था। लेकिन उसने स्नेह के उस सागर को ध्यान में नहीं रखा, जो ओब्लोन्स्की की आत्मा के तटों से छलका जा रहा था।

ओब्लोन्स्की की निर्मल और चमकीली आंखें फैल गयीं।

"क्यों नहीं आ सकोगे? क्या अभिप्राय है तुम्हारा?" ओब्लोन्स्की ने कुछ न समझ पाते हुए फ़्रांसीसी में कहा। "नहीं, तुम इसका वचन दे चुके हो। हम सब तुम्हारे आने का भरोसा किये बैठे हैं।"

"मैं कहना चाहता हूं, आपके यहां इसलिये नहीं आ सकता कि हमारे बीच रिश्तेदारी के जो नाते थे, अब उन्हें ख़त्म हो जाना चाहिये।"

"क्या? यह क्या कह रहे हो? क्यों?" ओब्लोन्स्की ने मुस्कराकर पूछा।

"क्योंकि मैं आपकी बहन, अपनी बीवी के विरुद्ध तलाक़ की कार्रवाई आरम्भ कर रहा हूं। मुझे विवश होकर ..."

लेकिन कारेनिन के बात ख़त्म करने के पहले ही ओब्लोन्स्की ने कुछ ऐसा किया, जिसकी कारेनिन ने आशा नहीं की थी। ओब्लोन्स्की ने गहरी सांस ली और आरामकुर्सी पर धसक गया।

"नहीं, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच, यह तुम क्या कह रहे हो!" ओब्लोन्स्की ऊंचे स्वर में कह उठा और उसके चेहरे पर व्यथा अंकित हो गयी।

"बात ऐसी ही है।"

"माफ़ी चाहता हूं, लेकिन मैं इसपर यक़ीन नहीं कर सकता, नहीं कर सकता ..."

कारेनिन यह महसूस करते हुए बैठ गया कि उसके शब्दों का वैसा

प्रभाव नहीं हुआ, जैसी उसने आशा की थी और उसे बात साफ़ करनी होगी। किन्तु उसका स्पष्टीकरण चाहे कुछ भी क्यों न हो, साले के प्रति उसके रवैये में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।

"हां, मुझे तलाक़ लेने की दुखद परिस्थिति में डाल दिया गया है," उसने कहा।

"मैं सिर्फ़ एक बात कहूंगा, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच। मैं एक बहुत बढ़िया और न्यायप्रिय व्यक्ति के रूप में तुम्हें जानता हूं, आन्ना को – तुम मुझे माफ़ करना, मैं उसके बारे में अपनी राय नहीं बदल सकता – एक बहुत अच्छी और नेक औरत के रूप में जानता हूं तथा इसीलिये, माफ़ी चाहता हूं, मैं इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता। इस मामले में ज़रूर कोई ग़लतफ़हमी हुई है," उसने कहा।

"काश, यह ग़लतफ़हमी ही होती..."

"हां, मैं समझता हूं," ओब्लोन्स्की ने उसे टोक दिया। "लेकिन ज़ाहिर है... सिर्फ़ एक बात, जल्दी नहीं करनी चाहिये। नहीं, नहीं करनी चाहिये जल्दी!"

"मैंने जल्दी नहीं की," कारेनिन ने रुखाई से कहा, "और ऐसे मामले में सलाह किसी से नहीं ली जा सकती। मैंने पक्का इरादा बना लिया है।"

"यह बड़ी भयानक बात है!" ओब्लोन्स्की ने गहरी उसास छोड़कर कहा। "मैं एक बात करूंगा, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच। तुमसे अनुरोध करता हूं, ऐसा करो!" वह बोला। "जहां तक मैं समझा हूं, मामले की कार्रवाई अभी शुरू नहीं की गयी। उसे शुरू करने के पहले मेरी बीवी से मिल लो, उससे बात कर लो। वह आन्ना को अपनी बहन की तरह प्यार करती है, तुम्हें चाहती है और वह अद्भुत नारी है। भगवान के लिये उससे बात कर लो! मुझपर इतनी मेहरबानी करो, मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूं!"

कारेनिन सोच में डूब गया और ओब्लोन्स्की उसकी ख़ामोशी को भंग किये बिना सहानुभूति से उसकी तरफ़ देखता रहा।

"तुम जाओगे न उसके पास?"

"कह नहीं सकता। मैं तो इसीलिये आपके घर नहीं गया। मेरे ख़्याल में हमारे सम्बन्धों में परिवर्तन होना चाहिये।"

"वह क्यों? मुझे इसका कोई कारण दिखाई नहीं देता। मैं ऐसा मानने की अनुमति चाहता हूं कि हमारे रिश्तेदारी के सम्बन्धों के अलावा तुममें मेरे प्रति, बेशक कुछ हद तक ही, दोस्ती की वे भावनायें भी हैं, जो मैंने हमेशा तुम्हारे लिये अनुभव की हैं... और सच्चा आदर भी।" ओब्लोन्स्की ने उसका हाथ दबाकर कहा। "अगर तुम्हारे बुरे से बुरे अनुमान सच साबित हुए, तो भी मैं दोनों में से किसी एक पक्ष की लानत-मलामत करने का इरादा नहीं रखता और कभी ऐसा नहीं करूंगा तथा इसके लिये मुझे कोई कारण दिखाई नहीं देता कि हमारे सम्बन्धों में क्यों परिवर्तन होना चाहिये। लेकिन अब इतना करो, मेरी बीवी से मिलने आ जाओ।"

"बात यह है कि इस मामले में हमारे नज़रिये अलग-अलग हैं," कारेनिन ने रुखाई से कहा। "पर ख़ैर, हम इस बात की चर्चा नहीं करेंगे।"

"नहीं, लेकिन तुम्हारे वहां आने में क्या बुराई है? कम से कम आज खाने पर? मेरी बीवी तुम्हारी राह देख रही है। कृपया आ जाओ। और फिर सबसे बड़ी चीज़ तो यह है कि उससे बात करो। वह अद्भुत नारी है। भगवान के लिये मान जाओ, मैं तुम्हारे पांव पड़ता हूं!"

"अगर आप इतना अधिक चाहते हैं, तो मैं आ जाऊंगा," कारेनिन ने गहरी सांस लेकर कहा।

और बातचीत का विषय बदलने के लिये उसने वह चर्चा शुरू की, जिसमें दोनों की साझी दिलचस्पी थी। यह चर्चा थी ओब्लोन्स्की के नये बड़े अधिकारी के बारे में, जो अपेक्षाकृत अभी जवान आदमी था और जिसे अचानक इतने ऊंचे ओहदे पर नियुक्त कर दिया गया था।

कारेनिन पहले भी काउंट आनिच्किन को पसन्द नहीं करता था और हमेशा ही उसके साथ उसका मत-भेद रहा था। लेकिन अब वह सरकारी नौकरी से सम्बन्धित किसी भी व्यक्ति की समझ में आनेवाली उस घृणा को नहीं छिपा सकता था, जो अपनी नौकरी में झटका खा जानेवाला आदमी उस व्यक्ति के प्रति अनुभव करता है, जिसे तरक़्क़ी मिल जाती है।

"तो उससे तुम्हारी मुलाक़ात हुई?" कारेनिन ने ज़हरीली मुस्कान के साथ पूछा।

"हां, हुई। वह कल हमारे दफ़्तर में आया था। लगता है कि वह अपना काम ख़ूब बढ़िया ढंग से जानता है और बड़ा क्रियाशील आदमी है।"

"हां, लेकिन उसकी यह क्रियाशीलता किस दिशा में निर्देशित है?" कारेनिन ने सवाल किया। "इस दिशा में कि कोई काम सिरे चढ़ाये या सिरे चढ़े हुए काम को बिगाड़े? नौकरशाही घिसघिस – यह हमारे राज्य की बदक़िस्मती है, जिसका वह बढ़िया प्रतिनिधि है।"

"मैं नहीं जानता कि उसकी किस बात के लिये निन्दा की जा सकती है। उसकी प्रवृत्तियां क्या हैं, यह मुझे मालूम नहीं। लेकिन इतना ज़रूर है कि वह बढ़िया आदमी है," ओब्लोन्स्की ने उत्तर दिया। "सचमुच बढ़िया आदमी है। हम दोनों ने अभी कुछ कलेवा किया और मैंने उसे वह पेय – जानते हो, शराब में सन्तरों के टुकड़ों वाला पेय – बनाना सिखाया। उससे बड़ी ठण्डक महसूस होती है। हैरानी की बात है कि वह यह नहीं जानता था। उसे बड़ा पसन्द आया। नहीं, सच कहता हूं कि वह बहुत बढ़िया आदमी है।"

ओब्लोन्स्की ने घड़ी पर नज़र डाली।

"हे भगवान, चार से भी कुछ अधिक समय हो चुका है और मुझे अभी दोल्गोवूशिन के यहां भी जाना है! तो कृपया, ज़रूर आना खाने पर। तुम तो कल्पना भी नहीं कर सकते कि तुम्हारे न आने से मुझे और मेरी बीवी को कितना रंज होगा।"

कारेनिन ने अपने साले को वैसे ही विदा नहीं किया, जैसे आने पर उसने उसका स्वागत किया था।

"मैंने वचन दिया था और मैं उसे पूरा करूंगा," उसने उदासी से जवाब दिया।

"यक़ीन मानो, मैं इसका ऊंचा मूल्यांकन करता हूं और मुझे आशा है कि तुम्हें अफ़सोस नहीं होगा," ओब्लोन्स्की ने मुस्कराकर जवाब दिया।

चलते-चलते ही ओवरकोट पहनते हुए उसने नौकर के सिर पर धीरे से चपत लगाई, हंसा और बाहर चला गया।

"कृपया पांच बजे, और फ़ाककोट पहने हुए," दरवाज़े के पास लौटकर उसने फिर से ऊंची आवाज़ में कहा।

पांच से कुछ अधिक समय हो चुका था और कुछ मेहमान आ भी चुके थे, जब खुद मेज़बान घर पहुंचा। वह सेर्गेई इवानोविच कोज़्निशेव और पेसत्सोव के साथ, जो एक ही वक़्त दरवाज़े पर पहुंचे, घर में दाखिल हुआ। ये मास्को के बुद्धिजीवियों के दो प्रमुख प्रतिनिधि थे, जैसा कि ओब्लोन्स्की ने उनके बारे में कहा था। ये दोनों अपने चरित्र और सूझ-बूझ की दृष्टि से सम्मानित व्यक्ति थे। वे एक-दूसरे का आदर करते थे, लेकिन लगभग सभी चीज़ों में उनका पूरा और ऐसा मतभेद था, जिसके कभी दूर होने की आशा नहीं की जा सकती थी। सो भी इसलिये नहीं कि उनकी विचारधारायें एक-दूसरे के प्रतिकूल थीं, बल्कि इसलिये कि वे एक ही शिविर में थे (उनके शत्रु उन्हें आपस में गड़बड़ा देते थे), किन्तु इस शिविर में उनका अपना-अपना रंग था। चूंकि अर्द्ध-अमूर्त्त विषयों में असहमति से अधिक कुछ भी सहमति के अनुरूप नहीं हो सकता, इसलिये उनके बीच विचारों का न केवल मतभेद होता था, बल्कि एक अर्से से वे नाराज़ हुए बिना एक-दूसरे की सुधारी न जा सकनेवाली भ्रांतियों पर हंसने के भी अभ्यस्त हो चुके थे।

ये दोनों मौसम की चर्चा करते हुए दरवाज़े को लांघ रहे थे, जब ओब्लोन्स्की इनसे जा मिला। ओब्लोन्स्की के ससुर, प्रिंस अलेक्सान्द्र द्मीत्रियेविच श्चेर्बात्स्की, जवान श्चेर्बात्स्की, तूरोवत्सिन, कीटी और कारेनिन पहले से मेहमानखाने में मौजूद थे।

ओब्लोन्स्की ने फ़ौरन भांप लिया कि मेहमानखाने में उसके बिना मामला ढंग से नहीं चल रहा है। भूरा रेशमी समारोही फ़्राक पहने हुए डौली स्पष्टतः बच्चों की चिन्ता से, जिन्हें बच्चों के कमरे में अलग भोजन करना था, और पति के अभी तक न आने के कारण परेशान होते हुए उसके बिना इन सभी लोगों को ढंग से घुला-मिला नहीं पायी थी। वे सभी जैसा कि बूढ़े प्रिंस ने कहा, मेहमान बननेवाली पादरी की बेटियों की तरह बैठे थे, स्पष्टतः यह नहीं समझ पा रहे थे कि किस कारण यहां आ गये और केवल चुप न रहने के लिये ही कुछ बोलते जा रहे थे। खुशमिज़ाज तूरोवत्सिन साफ़ तौर पर पानी से बाहर मछली की तरह महसूस कर रहा था और ओब्लोन्स्की के आने पर उसके मोटे

होंठों की मुस्कान मानो यह कहती प्रतीत हो रही थी – "अरे भाई, तुमने इन बड़े समझदार लोगों के बीच मुझे बिठा दिया! कुछ पीना और Château des fleurs में जाना – यह है मेरा क्षेत्र तो।" बूढ़े प्रिंस चुपचाप बैठे थे, अपनी चमकती आंखों से कारेनिन को कनखियों से देख रहे थे और ओब्लोन्स्की समझ गया कि उन्होंने इस बड़े राजकीय कार्यकर्त्ता के बारे में, जिसका स्टर्जन मछली की तरह लोगों को फुसलाने के लिये इस्तेमाल किया जाता है, कोई चुभती हुई सी बात सोच ली है। कीटी दरवाज़े की तरफ़ देखते हुए हिम्मत बटोर रही थी, ताकि लेविन के आने पर झेंप न महसूस करे। जवान श्चेर्बात्स्की, जिसके साथ कारेनिन का परिचय नहीं कराया गया था, ऐसा ज़ाहिर करने की कोशिश कर रहा था कि इससे उसे कोई परेशानी नहीं हो रही है। महिलाओं की संगत में तीसरे पहर के खाने से सम्बन्धित पीटर्सबर्ग की आदत के मुताबिक़ कारेनिन फ़ाककोट और सफ़ेद टाई पहने था और ओब्लोन्स्की उसके चेहरे से यह समझ गया कि वह अपना वचन पूरा करने ही आया है और यहां अपनी उपस्थिति से एक बोझिल कर्त्तव्य पूरा कर रहा है। वही मुख्यतः उस ठण्डक के लिये ज़िम्मेदार था, जिसने ओब्लोन्स्की के आने से पहले सभी मेहमानों को सर्द कर दिया था।

ओब्लोन्स्की ने मेहमानख़ाने में दाख़िल होते ही माफ़ी मांगी और कहा कि उसे उस प्रिंस ने रोक लिया था, जिसके मत्थे वह हमेशा ही अपनी अनुपस्थिति और देरी का दोष मढ़ देता था, घड़ी भर में सभी का एक-दूसरे से परिचय करवा दिया और कारेनिन को कोज़्निशेव से मिलाते हुए पोलैंड के रूसीकरण की चर्चा छेड़ दी, जिसमें वे दोनों और पेसत्सोव भी फ़ौरन उलझ गये। तूरोवत्सिन का कन्धा थपथपाकर उसने उसके कान में फुसफुसाते हुए कोई मज़ाक़िया बात कही और उसे बीवी तथा प्रिंस के पास बिठा दिया। फिर कीटी से कहा कि इस शाम को वह ख़ूब ही जंच रही है और जवान श्चेर्बात्स्की का कारेनिन से परिचय करवाया। आन की आन में उसने मेहमानों का ऐसा आटा-सा गूंध दिया कि मेहमानख़ाने में बड़ी रौनक़ आ गयी और ख़ुशी भरी आवाज़ें गूंजने लगीं। सिर्फ़ लेविन नहीं आया था। लेकिन यह अच्छा ही था, क्योंकि भोजन-कक्ष में जाने पर वह यह देखकर स्तम्भित रह गया कि पोर्टवाइन और शेरी लेवे की दुकान से नहीं, बल्कि देपरे के यहां से

लाई गयी हैं और यह हिदायत देकर कि कोचवान को जल्दी से जल्दी लेवे की दुकान पर भेजा जाये, वह फिर से मेहमानख़ाने की ओर चल दिया।

भोजन-कक्ष में ही लेविन से उसकी भेंट हो गयी।

"मुझे देर तो नहीं हो गयी?"

"तुम देर से न आओ, ऐसा हो भी सकता है!" उसकी बांह में बांह डालते हुए ओब्लोन्स्की ने कहा।

"बहुत लोग हैं क्या तुम्हारे यहां? कौन-कौन है?" लेविन ने अनचाहे ही झेंप से लाल होते और दस्ताने से टोपी पर पड़ी बर्फ़ झाड़ते हुए पूछा।

"सब अपने ही हैं। कीटी भी यहीं है। आओ, मैं कारेनिन से तुम्हारा परिचय कराऊं।"

अपने उदार विचारों के बावजूद ओब्लोन्स्की यह जानता था कि कारेनिन के साथ जान-पहचान होना ज़रूर ही प्रतिष्ठा की बात है और इसलिये अपने सबसे अच्छे मित्रों को ही वह यह सम्मान प्रदान करता था। किन्तु इस क्षण लेविन इस परिचय के सारे आनन्द को अनुभव करने की स्थिति में नहीं था। अपने लिये उस स्मरणीय शाम के बाद, जब व्रोन्स्की से उसकी मुलाक़ात हुई थी, अगर बड़ी सड़क पर बग्घी में देखने के क्षण को न गिना जाये, तो उसने कीटी को नहीं देखा था। अपने दिल की गहराई में वह जानता था कि आज यहां उससे उसकी भेंट होगी। किन्तु अपने विचारों को खुली छूट देने के लिये वह ख़ुद को यक़ीन दिला रहा था कि उसे यह मालूम नहीं है। अब यह सुनकर कि वह यहां है, उसे अचानक ऐसी ख़ुशी और साथ ही ऐसा भय अनुभव हुआ कि उसके लिये सांस लेना कठिन हो गया और वह नहीं कह पाया, जो कहना चाहता था।

"कैसी, कैसी है वह? वैसी, जैसी पहले थी या वैसी, जैसी बग्घी में? अगर दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना ने सच बात कही थी, तो? क्यों सच नहीं होगी उसकी बात?" वह सोच रहा था।

"ओह, कृपया कारेनिन से मेरा परिचय कराओ," उसने मुश्किल से कहा और हताशापूर्ण दृढ़ता के साथ मेहमानख़ाने में दाख़िल होकर उसे देखा।

वह पहले जैसी नहीं थी, वैसी भी नहीं थी, जैसी बग्घी में। वह बिल्कुल दूसरी ही थी।

वह डरी-सहमी, घबरायी और लजायी हुई थी और इसीलिये और भी अधिक सुन्दर लग रही थी। लेविन के कमरे में दाख़िल होते ही उसकी ओर कीटी की नज़र गयी। वह उसकी राह देख रही थी। वह ख़ुश हुई और अपनी ख़ुशी से इस हद तक परेशान हो उठी कि एक ऐसा क्षण भी आया, यानी वह क्षण, जब वह गृह-स्वामिनी अर्थात डौली के पास गया और उसने फिर से कीटी पर नज़र डाली, तो कीटी, लेविन और डौली को भी, जो यह सब देख रही थी, ऐसा लगा कि वह अपने को सम्भाल नहीं पायेगी और रो पड़ेगी। उसके चेहरे पर सुर्ख़ी दौड़ी, उसका रंग उड़ा, फिर से लाली आई और तनिक सिहरते होंठों से उसके निकट आने की राह देखते हुए वह बुत-सी बनकर रह गयी। लेविन उसके पास गया, उसने सिर झुकाया और चुपचाप उसकी तरफ़ हाथ बढ़ा दिया। अगर उसके होंठों में थोड़ा-सा कंपन न होता, अगर आंखों में थोड़ी-सी नमी न होती, जिससे उसकी आंखों की चमक और बढ़ गयी थी, तो उस समय उसकी मुस्कान लगभग शान्त थी, जब उसने यह कहा :

"कितना अरसा हो गया हमें मिले हुए!" और उसने हताशा-जनित दृढ़ता के साथ उसके हाथ से अपना ठण्डा हाथ मिलाया।

"आपने मुझे नहीं देखा, मगर मैंने आपको देखा था," लेविन ने उल्लासपूर्ण मुस्कान से चमकते हुए जवाब दिया। "जब आप स्टेशन से येर्गूशोवो जा रही थीं, तब मैंने आपको देखा था।"

"कब?" कीटी ने हैरानी से पूछा।

"आप येर्गूशोवो जा रही थीं," लेविन ने कहा और यह अनुभव किया कि उसकी आत्मा में छलकी जाती ख़ुशी के कारण उसका गला रुंधा जा रहा है। "इस मर्मस्पर्शी प्राणी के साथ कोई अपराधपूर्ण चीज़ जोड़ने की मुझे कैसे हिम्मत हुई। और हां, दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना ने जो कुछ कहा था, वह भी सच ही प्रतीत हो रहा है," वह सोच रहा था।

ओब्लोन्स्की उसका हाथ थामकर उसे कारेनिन के पास ले गया।

"लीजिये, मिलिये," उसने दोनों के नाम लेते हुए परिचय करवाया।

"फिर से मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई," लेविन से हाथ मिलाते हुए कारेनिन ने रुखाई से कहा।

"आप एक-दूसरे को जानते हैं?" ओब्लोन्स्की ने हैरानी से पूछा।

"हमने रेलगाड़ी के डिब्बे में तीन घण्टे साथ-साथ बिताये थे," लेविन ने मुस्कराते हुए बताया, "लेकिन नक़ाबपोशों के नाच की तरह एक-दूसरे से अनजान और जिज्ञासा लिये हुए ही बाहर निकले थे। कम से कम मैं तो।"

"तो यह मामला है! कृपया चलिये भोजन-कक्ष में," उसने उधर इशारा करते हुए कहा।

पुरुष लोग भोजन-कक्ष में हल्के कलेवे और पीने-पिलाने की मेज़ के पास पहुंचे। उस पर छः तरह की वोदका और चांदी की चिमटियों सहित तथा उनके बिना तरह-तरह के पनीर, केवियर, हेरिंग मछली, क़िस्म-क़िस्म की डिब्बाबन्द चीज़ें और तश्तरियों में फ़ांसीसी डबलरोटी के छोटे-छोटे टुकड़े रखे हुए थे।

मर्द लोग सुगंधित वोदकाओं और हल्के कलेवे की चीज़ों के पास खड़े थे और कोज़्निशेव, कारेनिन और पेसत्सोव के बीच पोलैंड के रूसीकरण के बारे में हो रही बातचीत खाना आरम्भ होने की प्रत्याशा में धीरे-धीरे शान्त होती जा रही थी।

कोज़्निशेव को बहुत ही सूक्ष्म और गम्भीर वाद-विवाद में अचानक मज़ाक़ का नमक छिड़ककर उसे समाप्त करने और इस तरह बातचीत करनेवालों का मूड बदलने की कला में कमाल हासिल था। उसने अब भी यही किया।

कारेनिन यह साबित कर रहा था कि पोलैंड का रूसीकरण केवल ऊंचे उसूलों के परिणामस्वरूप ही सम्भव है, जिन्हें रूसी प्रशासन को वहां लागू करना चाहिये।

पेसत्सोव इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि एक जाति दूसरी जाति में तभी जज़्ब होती है, जब उस दूसरी जाति की आबादी बहुत घनी हो।

कोज़्निशेव दोनों से सहमत था, मगर कुछ हद तक ही। जब वे मेहमानख़ाने से बाहर निकल रहे थे, तो कोज़्निशेव ने बहस ख़त्म करने के लिये मुस्कराकर कहा:

"इसलिये विदेशियों के रूसीकरण का एक ही उपाय है – अधिक से

अधिक बच्चे पैदा करना। मैं और मेरा भाई इस मामले में सबसे पीछे रह रहे हैं। लेकिन आप, विवाहित महानुभाव और विशेषतः आप, ओब्लोन्स्की, इस मामले में बहुत देशभक्ति दिखा रहे हैं – कितने बच्चे हैं आपके?" उसने स्नेहपूर्वक मुस्कराते और छोटा-सा जाम मेज़बान के सामने करते हुए पूछा।

सभी खिलखिलाकर हंस पड़े और ओब्लोन्स्की तो ख़ास तौर पर ख़ुश होते हुए हंसा।

"हां, यही सबसे अच्छा उपाय है," वह पनीर चबाते और अपने सामने बढ़ाये गये जाम में कोई ख़ास क़िस्म की वोदका डालते हुए बोला। तो इस तरह हंसी-मज़ाक के साथ बातचीत ख़त्म हुई।

"यह पनीर कुछ बुरा नहीं है। तो लेंगे? मेज़बान ने कहा। "तुम क्या फिर से कसरत करने लगे हो?" उसने बायें हाथ से लेविन की पेशी छूते हुए पूछा। लेविन मुस्कराया, उसने अपनी बांह की पेशियों को अकड़ाया और ओब्लोन्स्की को लेविन के फ़ाककोट के कपड़े और अपनी उंगलियों के नीचे पनीर के सख़्त पिंड की तरह उभरे हुए इस्पाती गोले की सी अनुभूति हुई।

"ओह, कैसी मज़बूत मांस-पेशियां हैं! बिल्कुल सैम्सन हो!"

"मेरे ख़्याल में भालू का शिकार करने के लिये आदमी में बहुत ताक़त होनी चाहिये," कारेनिन ने, जो शिकार की बहुत अस्पष्ट-सी कल्पना कर सकता था, डबलरोटी के मकड़ी के जाले जैसे पतले-से टुकड़े पर पनीर लगाते हुए कहा।

लेविन मुस्कराया।

"ज़रा भी नहीं। इसके विपरीत, बच्चा भी भालू को मार सकता है," लेविन ने गृह-स्वामिनी के साथ कलेवे की मेज़ की ओर आती महिलाओं को तनिक सिर झुकाते और एक ओर को हटते हुए कहा।

"मैंने सुना है कि आपने भालू का शिकार किया है?" कीटी ने क़ाबू में न आने और लगातार फिसलनेवाली खुमी को कांटे से पकड़ने की कोशिश करते और लेसों को झटकते हुए, जिनके बीच से उसकी गोरी बांह झलक रही थी, कहा।

ऐसा प्रतीत हो सकता था कि कीटी ने जो कहा था, उसमें कोई ख़ास बात नहीं थी। किन्तु कीटी ने जब यह कहा, तो लेविन के लिये

उसकी हर ध्वनि, उसके होंठों, आंखों और हाथों की हर गतिविधि का कितना अवर्णनीय महत्त्व था! कीटी के शब्दों में क्षमा का अनुरोध भी था, उसके प्रति विश्वास भी था, स्नेह भी था, कोमल और सहमा हुआ स्नेह, वादा और आशा भी थी तथा उसके प्रति प्यार भी था, जिस पर वह विश्वास किये बिना नहीं रह सकता था और जिसकी खुशी से उसका दम घुट-सा रहा था।

"हां। हम त्वेर गुबेर्नियां में गये थे। वहां से लौटते हुए रेल के डिब्बे में आपके बहनोई या आपके बहनोई के बहनोई से मेरी मुलाक़ात हुई," लेविन ने मुस्कराकर कहा। "बड़ी हास्यपूर्ण भेंट थी यह।"

लेविन ने बड़ी रंगीनी और दिलचस्प ढंग से यह सुनाया कि सारी रात जागते रहने के बाद भेड़ की खाल का ओवरकोट पहने हुए वह कारेनिन के डिब्बे में दाख़िल हुआ।

"कंडक्टर ने गुदड़ी में लाल छिपे रहने की कहावत की अवहेलना करते हुए भेड़ की खाल के मेरे ओवरकोट के आधार पर मुझे बाहर निकाल देना चाहा। लेकिन तभी मैंने भारी-भरकम शब्दों का उपयोग शुरू किया। हां, आपने भी," उसने कारेनिन को सम्बोधित किया, जिसका वह नाम भूल चुका था, "भेड़ की खाल के ओवरकोट की वजह से मुझे खदेड़ना चाहा, मगर बाद में मेरा पक्ष लिया, जिसके लिये मैं बहुत आभारी हूं।"

"बात यह है कि सीटों के चुनाव के मामले में यात्रियों के अधिकार सर्वथा अस्पष्ट हैं," अपनी उंगलियों के सिरों को रूमाल से पोंछते हुए कारेनिन ने कहा।

"मैंने देखा कि मेरे मामले में आप दुविधा में पड़े हुए हैं," लेविन खुशमिज़ाजी से मुस्कराते हुए बोला। "लेकिन मैंने अपने ओवरकोट पर पर्दा डालने के लिये जल्दी से बड़ी बुद्धिमत्तापूर्ण बातें करनी शुरू कर दीं।"

कोज़्निशेव ने गृह-स्वामिनी से बातें करते और साथ ही एक कान से भाई की बातें सुनते हुए कनखियों से उसकी तरफ़ देखा। "आज क्या हुआ है इसे? बड़ा सूरमा बना हुआ है यह!" उसने सोचा। वह नहीं जानता था कि लेविन क्या महसूस कर रहा है, कि उसके पंख उग आये हैं। लेविन को मालूम था कि कीटी उसके शब्द सुन रही है, कि उसे उसको सुनना अच्छा लग रहा है। उसके लिये तो बस, यही सब कुछ

था। इस कमरे में ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया में केवल उसका, जो बहुत महत्त्वपूर्ण और अहमियत रखनेवाला हो गया था, और कीटी का ही अस्तित्व था। वह अपने को ऐसी चोटी पर महसूस कर रहा था, जहां सिर चकराता है, और बाक़ी सभी लोग, ये भले और सज्जन कारेनिन और ओब्लोन्स्की, आदि तथा सारी दुनिया कहीं दूर थी, बहुत नीचे थी।

बहुत ही स्वाभाविक ढंग से, उनकी तरफ़ देखे बिना तथा इस तरह, मानो उन्हें कहीं और बिठाने को जगह ही न हो, ओब्लोन्स्की ने लेविन को कीटी के क़रीब बिठा दिया।

"तुम यहां भी बैठ सकते हो," उसने लेविन से कहा।

खाना वैसा ही बढ़िया था, जैसे बढ़िया बर्तन थे, जिनका ओब्लोन्स्की दीवाना था। 'मारी-लुईज़' शोरबा बहुत अच्छा बना था. छोटी-छोटी और मुंह में घुलती जानेवाली कचौरियां एकदम नफ़ीस थीं। सफ़ेद टाइयां पहने मात्वेई और दो नौकर खाने की चीज़ों और शराबों से सम्बन्धित हर काम चुपके-चुपके, दबे पांव और फुर्ती से निपटा रहे थे। भोजन भौतिक दृष्टि से सफल रहा और अभौतिक दृष्टि से भी उसमें कुछ कम सफलता नहीं मिली। कभी साझी और कभी अलग-अलग लोगों के बीच लगातार बातचीत चलती रही और खाने के अन्त में उसमें ऐसी सजीवता आ गयी कि पुरुष बातचीत करते हुए ही मेज़ से उठे और कारेनिन तक रंग में आ गया।

(१०)

पेसत्सोव को हर चीज़ पर अन्त तक विचार-विमर्श करना पसन्द था और उसे कोज़्निशेव के शब्दों से सन्तोष नहीं हुआ, ख़ास तौर पर इसलिये कि वह अपने मत की भ्रांति को अनुभव कर रहा था।

"मेरा अभिप्राय सिर्फ़ आबादी की अधिकता से नहीं था," शोरबा खाते समय उसने कारेनिन को सम्बोधित करके कहा, "लेकिन मूलाधारों के साथ – न कि उसूलों के साथ – बंधी अधिकता से है।"

"मुझे ऐसा लगता है," कारेनिन ने धीरे-धीरे और मुरझाये हुए ढंग से जवाब दिया, "यह एक ही बात हो जाती है। मेरे ख़्याल में

दूसरी जाति पर वही जाति प्रभाव डाल सकती है, जो अधिक विकसित होती है, जो ..."

"लेकिन यही तो सवाल है," पेसत्सोव ने कहा, जो हमेशा बोलने को उतावला रहता था और जो कहता था, हमेशा उसमें अपनी आत्मा का पूरा ज़ोर डाल देता था, "अधिक विकसित होने का क्या मतलब समझा जाये? अंग्रेज़, फ़्रांसीसी, जर्मन – इनमें से कौन विकास की अधिक ऊंची सीढ़ी पर है? इनमें से कौन दूसरे को अपने प्रभाव में लायेगा? हम देखते हैं कि राइन पर बड़ा फ़्रांसीसी प्रभाव पड़ गया है, लेकिन जर्मनों का स्तर नीचा नहीं है!" वह चिल्ला रहा था। "यहां कोई दूसरा नियम है!"

"मुझे लगता है कि हमेशा वही जाति प्रभावित करती है, जो सही अर्थ में सुशिक्षित होती है," कारेनिन ने अपनी भौंहों को तनिक चढ़ाते हुए कहा।

"किन्तु वास्तविक सुशिक्षा के हमें क्या लक्षण मानने चाहिये?" पेसत्सोव ने पूछा।

"मेरे ख़्याल में ये लक्षण सर्वविदित हैं," कारेनिन ने जवाब दिया।

"क्या पूरी तरह से सर्वविदित हैं?" कोज़्निशेव ने हल्की-सी मुस्कान के साथ बातचीत में दख़ल दिया। "आजकल यह माना जाता है कि वास्तविक शिक्षा केवल शुद्ध क्लासिकल हो सकती है। लेकिन हम दोनों पक्षों के बीच ज़ोरदार वाद-विवाद देखते हैं और ऐसा नहीं माना जा सकता कि विपक्ष के पास अपने समर्थन में प्रबल तर्क नहीं है।"

"आप क्लासिकों में से एक हैं, सेर्गेई इवानोविच। लाल शराब दूं?" ओब्लोन्स्की ने कहा।

"मैं इस या उस शिक्षा के बारे में अपनी राय नहीं ज़ाहिर कर रहा हूं," कोज़्निशेव ने किसी बच्चे के प्रति दिखायी जानेवाली कृपालुता की मुस्कान के साथ मुस्कराते और अपना जाम बढ़ाते हुए कहा। "मैं सिर्फ़ इतना कह रहा हूं कि दोनों पक्षों के पास ज़ोरदार दलीलें हैं," कारेनिन को सम्बोधित करते हुए वह कहता गया। "मुझे क्लासिकल शिक्षा मिली है, मगर इस बहस में मैं ख़ुद किसी नतीजे पर पहुंचना सम्भव नहीं पा रहा हूं। मैं साफ़ तौर पर यह समझने में असमर्थ हूं

कि प्राकृतिक विद्याओं की तुलना में क्लासिकल विद्याओं को क्यों श्रेष्ठ माना जाये।"

"प्राकृतिक विज्ञानों का भी वैसा ही शैक्षणिक प्रभाव होता है," पेसत्सोव ने बात आगे बढ़ाई। "मिसाल के लिये खगोलशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, सामान्य नियमविधि सहित प्राणिशास्त्र में से किसी एक को ले लीजिये!"

"मैं इससे पूरी तरह सहमत होने में असमर्थ हूं," कारेनिन ने जवाब दिया।

"मुझे लगता है, यह स्वीकार किये बिना नहीं रहा जा सकता कि भाषाओं के रूपों के अध्ययन की प्रक्रिया ही मानसिक विकास पर विशेष अच्छा प्रभाव डालती है। इसके अलावा इस बात को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि क्लासिकल लेखकों का उच्चतम नैतिक प्रभाव पड़ता है, जबकि दुर्भाग्यवश, प्राकृतिक विज्ञानों के साथ ऐसे हानिकारक और झूठे सिद्धान्त सम्बद्ध हैं, जो हमारे समय के कोढ़ हैं।"

कोज़्निशेव ने कुछ कहना चाहा, लेकिन पेसत्सोव ने अपनी भारी आवाज़ से उसे टोक दिया। वह बड़े जोश के साथ यह सिद्ध करने लगा कि ऐसा मत उचित नहीं है। कोज़्निशेव इतमीनान से कुछ कह पाने का इन्तज़ार करने लगा। स्पष्टतः उसने कोई अकाट्य आपत्ति तैयार कर ली थी।

"लेकिन," कोज़्निशेव ने हल्की-सी मुस्कान के साथ कारेनिन को सम्बोधित करते हुए कहा, "इस बात से सहमत न होना असम्भव है कि इन दोनों प्रकार की विद्याओं के लाभ-हानियों का सही अनुमान लगाना कठिन है और यह प्रश्न कि किन विद्याओं को बेहतर माना जाना जाये, इतनी जल्दी और अन्तिम रूप से हल न हो पाता, अगर क्लासिकल शिक्षा के पक्ष में वह श्रेष्ठता न होती, जिसका आपने अभी उल्लेख किया है यानी नैतिक – disons le mot* – सर्वखण्डनवाद-विरोधी प्रभाव।"

"बिल्कुल सही।"

"अगर क्लासिकल विद्याओं के पक्ष में सर्वखण्डनवाद-विरोधी प्रभाव की यह श्रेष्ठता न होती, तो हम दोनों पक्षों के तर्कों पर अधिक सोच-विचार करते, उन्हें अधिक जांचते-परखते," कोज़्निशेव हल्की-सी

---

* साफ़ शब्दों में। (फ़्रांसीसी)

मुस्कान के साथ कहे जा रहा था, "हमने दोनों प्रवृत्तियों को अधिक विस्तार दिया होता। किन्तु अब हम जानते हैं कि क्लासिकल शिक्षा की इन गोलियों में सर्वखण्डनवाद के विरुद्ध स्वास्थ्यप्रद शक्ति निहित है और हम बड़े साहस से अपने रोगियों को उनका सेवन करने को कहते हैं... और अगर उनमें यह रोगहर शक्ति न होती, तो?" उसने मज़ाक़ का मसाला छिड़कते हुए अपनी बात समाप्त की।

कोज़्निशेव की गोलियों वाली बात से सभी हंस पड़े। तूरोवत्सिन तो ख़ास तौर पर बहुत ज़ोर से और ख़ुश होकर हंसा। आख़िर तो उसे हंसने की कोई ऐसी बात सुनाई दी थी, जिसकी वह यह बातचीत सुनते हुए इन्तज़ार कर रहा था।

पेसत्सोव को बुलाकर ओब्लोन्स्की ने भूल नहीं की थी। उसके उपस्थित रहते एक क्षण को भी बुद्धिमत्तापूर्ण बातचीत बन्द नहीं हो सकती थी। कोज़्निशेव ने अपने मज़ाक़ के साथ बातचीत समाप्त की ही थी कि पेसत्सोव ने दूसरी बात शुरू कर दी।

"इस बात से भी सहमत नहीं हुआ जा सकता," वह बोला, "कि सरकार के सामने कोई ऐसा लक्ष्य था। सरकार सम्भवतः सामान्य विचारों से निर्देशित होती है और जो क़दम वह उठाती है, उनके सम्भाव्य प्रभावों को ध्यान में नहीं रखती। उदाहरण के लिये नारी-शिक्षा को हानिकारक माना जाना चाहिये, किन्तु सरकार नारियों के विद्यालय और विश्वविद्यालय खोल रही है।"

फ़ौरन ही नारी-शिक्षा के नये विषय पर बातचीत होने लगी।

कारेनिन ने यह विचार प्रकट किया कि नारी-शिक्षा के सवाल को आम तौर पर नारी-स्वतन्त्रता के सवाल के साथ गड़बड़ा दिया जाता है और इसीलिये उसे हानिकारक माना जा सकता है।

"इसके विपरीत मैं यह मानता हूं कि ये दोनों प्रश्न अविच्छिन्न रूप से एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं," पेसत्सोव ने कहा, "यह तो अन्तहीन चक्र है। शिक्षा के अभाव के कारण नारी अधिकारों से वंचित है और शिक्षा का अभाव अधिकारों के अभाव के कारण है। यह नहीं भूलना चाहिये कि नारियों को इस हद तक दासता में जकड़ा गया है और यह प्रश्न इतना पुराना है कि हम अक्सर यह समझना नहीं

चाहते कि वह खाई कितनी बड़ी है, जो उन्हें हम से अलग करती है," उसने कहा।

"आपने 'अधिकारों' की चर्चा की है," कोज़्निशेव ने पेसत्सोव के चुप होने पर कहा, "आपका मतलब निर्णायक मण्डलों और नगर-परिषदों की सदस्यायें, स्थानीय सरकारी बोर्डों की अध्यक्षायें, कर्मचारिनें और संसद-सदस्यायें होने के अधिकार से है..."

"बिल्कुल ठीक।"

"लेकिन अगर विशेष अपवाद के रूप में नारियां ये स्थान ग्रहण भी कर लें, तो भी मुझे लगता है कि आपने 'अधिकार' शब्द का सही उपयोग नहीं किया है। 'कर्त्तव्य-पूर्ति' कहना कहीं अधिक सही होगा। कोई भी इस बात से सहमत होगा कि निर्णायक मण्डल और ज़ेम्सत्वो-परिषद में कोई भी काम करते या तार-कर्मचारी होते हुए हमें अनुभव होता है कि हम अपना कर्त्तव्य निभा रहे हैं। इसलिये यह कहना अधिक सही होगा कि नारियां कर्त्तव्य चाहती हैं और ऐसा बिल्कुल उचित भी है। पुरुषों के सामान्य श्रम में हाथ बंटाने की नारी की इच्छा के लिये केवल सहानुभूति ही प्रकट की जा सकती है।"

"सोलह आने सही है," कारेनिन ने समर्थन किया। "मेरे ख़्याल में सवाल सिर्फ़ यह है कि वे इन कर्त्तव्यों को निभाने में समर्थ हैं या नहीं।"

"सम्भवतः बहुत ही सुयोग्य सिद्ध होंगी," ओब्लोन्स्की ने राय ज़ाहिर की, "जब उनके बीच काफ़ी शिक्षा-प्रचार हो जायेगा। हम ऐसा देख रहे हैं..."

"और वह कहावत?" बहुत देर से इस बातचीत को सुनते हुए बूढ़े प्रिंस ने अपनी छोटी-छोटी आंखों में उपहास की चमक दिखाते हुए पूछा, "बेटियों के सामने तो कह सकता हूं – नारी की अक़्ल चोटी में..."

"नीग्रो लोगों की मुक्ति के पहले उनके बारे में भी ऐसा ही सोचा जाता था!" पेसत्सोव ने झल्लाकर कहा।

"मुझे यह सिर्फ़ अजीब लग रहा है कि नारियां नये कर्त्तव्य-भार चाहती हैं," कोज़्निशेव बोला, "जब कि दुर्भाग्यवश, हम देखते हैं कि पुरुष उनसे कतराते हैं।"

"कर्त्तव्यों और अधिकारों के बीच चोली-दामन का रिश्ता है। सत्ता, धन और सम्मान – नारियां इन्हीं को तो चाहती हैं," पेसत्सोव ने कहा।

"यह तो वही बात है कि मैं धाय बनना चाहूं और इस बात का बुरा मानूं कि नारियों को इसके लिये पैसे दिये जाते हैं, मगर मुझे नहीं," बूढ़े प्रिंस ने कहा।

तूरोवत्सिन ज़ोर से हंस पड़ा और कोज़्निशेव को इस बात का अफ़सोस हुआ कि यह उसने नहीं कहा। कारेनिन भी मुस्कराये बिना न रह सका।

"लेकिन मर्द तो स्तन-पान नहीं करा सकते," पेसत्सोव ने आपत्ति की, "जबकि नारियां..."

"क्यों नहीं, एक अंग्रेज़ ने किसी जहाज़ में अपने बच्चे को स्तन-पान कराया था," बूढ़े प्रिंस ने बेटियों के सामने इतनी छूट लेते हुए कहा।

"जितने ऐसे अंग्रेज़ हैं, उतनी ही नारियां कर्मचारिनें होंगी," कोज़्निशेव बोला।

"लेकिन कोई ऐसी लड़की क्या करे, जिसका परिवार न हो?" ओब्लोन्स्की ने चीबिसोवा को याद करते हुए प्रश्न किया। पेसत्सोव का पक्ष लेते और उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए वह लगातार इसी लड़की को ध्यान में रख रहा था।

"अगर इस लड़की के क़िस्से की तह में जाया जाये, तो आपको मालूम होगा कि इस लड़की ने अपने या अपनी बहन के परिवार से, जहां उसे नारियों के करने लायक़ काम मिल सकता था, नाता तोड़ लिया था," डौली ने सम्भवतः यह अनुमान लगाकर कि ओब्लोन्स्की का किस लड़की से अभिप्राय है, बातचीत में अचानक भाग लेते हुए झल्लाकर कहा।

"लेकिन हम तो उसूल और आदर्श की बात कर रहे हैं!" पेसत्सोव ने अपनी गूंजती हुई भारी आवाज़ में एतराज़ किया। "नारी आत्मनिर्भर और सुशिक्षिता होने का अधिकार चाहती है। वह अपने लिये ऐसा असम्भव होने की चेतना से पीड़ित और दबी-घुटी हुई है।"

"और मैं इस बात से पीड़ित और दबा-घुटा हुआ हूं कि शिशु-

पालन-गृह में मुझे धाय के रूप में नहीं लिया जायेगा," बूढ़े प्रिंस ने फिर से अपनी बात दोहरायी, जिससे तूरोवत्सिन इतना ख़ुश हुआ कि हंसते-हंसते मोटे सिरेवाली अस्पारागस सब्ज़ी को चटनी में गिरा बैठा।

(११)

कीटी और लेविन को छोड़कर बाक़ी सभी साझी बातचीत में हिस्सा ले रहे थे। शुरू में, जब एक जाति पर दूसरी जाति के प्रभाव की चर्चा हो रही थी, लेविन के दिमाग़ में बरबस वे बातें आ रही थीं, जो वह इस विषय पर कह सकता था। किन्तु ये विचार, जो पहले उसके लिये इतने अधिक महत्त्वपूर्ण थे, स्वप्न में दिखनेवाली चीज़ों की तरह उसके दिमाग़ में झलक दिखाते थे और उसे अब उनमें ज़रा भी दिलचस्पी महसूस नहीं हो रही थी। उसे तो यह अजीब-सा भी लग रहा था कि जिस चीज़ की किसी को भी ज़रूरत नहीं है, उसके बारे में वे इतनी कोशिश से क्यों बातचीत कर रहे हैं। ठीक ऐसे ही यह प्रतीत हो सकता है कि नारियों के अधिकारों और शिक्षा के सम्बन्ध में वे जो कुछ कह रहे थे, उसमें कीटी की भी रुचि होनी चाहिये थी। विदेश में बनी अपनी सहेली वारेन्का, उसकी दुखद निर्भरता को याद करते हुए उसने कितनी बार इस सम्बन्ध में सोचा था! कितनी बार उसने अपने बारे में यह सोचा-विचारा था कि अगर उसकी शादी न हुई, तो वह क्या करेगी और कितनी बार उसने अपनी बहन से इस विषय पर बहस की थी। किन्तु अब उसे इसमें तनिक भी दिलचस्पी नहीं महसूस हो रही थी। लेविन के साथ उसकी कोई अपनी बातचीत चल रही थी। बातचीत नहीं, बल्कि कुछ ऐसे रहस्यपूर्ण ढंग से उनके दिलों के तार बज रहे थे, जो हर क्षण इन दोनों को अधिकाधिक निकटता के सूत्र में बांधते जा रहे थे और जिस अज्ञात दुनिया में वे प्रवेश कर रहे थे, उसके प्रति दोनों के दिलों में सुखद भय की भावना उपजा रहे थे।

सबसे पहले लेविन ने कीटी के इस सवाल के जवाब में कि पिछले साल वह उसे बग्घी में कैसे देख पाया, उसे बताया कि घास काटने के बाद वह बड़ी सड़क से घर जा रहा था और तब उसने उसे देखा था।

"बहुत तड़के की बात है यह। आपकी शायद तभी आंख खुली थी।

आपकी maman अपने कोने में सो रही थीं। बहुत ही सुहानी सुबह थी। मैं चलता हुआ सोच रहा था – कौन हो सकता है यह चार घोड़ों वाली बग्घी में? घंटियां बंधे घोड़ों की बढ़िया चौकड़ी थी और क्षणभर को आपकी झलक मिली। मैंने खिड़की की ओर देखा – आप ऐसे बैठी थीं: दोनों हाथों से अपनी टोपी के फ़ीते थामे और किसी बहुत ही गहरी सोच में डूबी हुई," उसने मुस्कराते हुए कहा। "काश, मैं यह जान सकता कि उस वक़्त आप क्या सोच रही थीं। किसी बहुत ही महत्त्वपूर्ण चीज़ के बारे में?"

"भूतनी जैसी तो नहीं बनी हुई थी?" कीटी ने सोचा। किन्तु इन तफ़सीलों की याद से लेविन के चेहरे पर झलक उठनेवाली सुखद मुस्कान से उसने यह अनुभव किया कि लेविन के दिल पर उसने बुरी नहीं, बल्कि बहुत अच्छी छाप छोड़ी थी। कीटी के चेहरे पर सुर्ख़ी दौड़ गयी और वह उल्लासपूर्वक हंस दी।

"सच, याद नहीं।"

"तूरोवत्सिन कैसे खुलकर हंसता है!" लेविन ने उसकी नम आंखों और हिलते शरीर को मुग्धता से देखते हुए कहा।

"बहुत अर्से से आप उसे जानते हैं क्या?" कीटी ने पूछा।

"उसे कौन नहीं जानता!"

"और मैं देख रही हूं कि आप उसे बुरा आदमी समझते हैं।"

"बुरा नहीं, नाकारा।"

"यह सही नहीं है! अब से ऐसा नहीं सोचियेगा!" कीटी ने कहा। "उसके बारे में मेरी भी ऐसी ही घटिया राय थी, लेकिन वह, वह – बहुत ही अच्छा और दयालु व्यक्ति है। सोने का दिल पाया है उसने।"

"उसके दिल के बारे में आपको कैसे पता चला?"

"हम दोनों बड़े अच्छे दोस्त हैं। मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूं उसे। पिछले जाड़े में, आपके हमारे यहां से... जाने के कुछ ही समय बाद," कीटी ने अपराधी की तरह और साथ ही लेविन पर भरोसा ज़ाहिर करती मुस्कान के साथ कहा, "डौली के सभी बच्चों को लाल बुख़ार ने आ दबाया और वह एक दिन उसके यहां आया। और आप कल्पना कर सकते हैं," कीटी फुसफुसाकर बोली, "उसे डौली पर इतना तरस आया कि वह वहीं रहकर बच्चों की देखभाल में उसकी

मदद करने लगा। हां, तीन हफ़्ते तक वहीं रहते हुए आया की तरह बच्चों की चिन्ता करता रहा।

"मैं कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच को लाल बुख़ार के दिनों में तूरोवत्सिन द्वारा की गयी सहायता के बारे में बता रही हूं," कीटी ने बहन की ओर झुककर बताया।

"हां, अद्भुत, बहुत ही बढ़िया आदमी है वह," डौली ने तूरोवत्सिन की ओर देखकर, जिसने यह महसूस कर लिया था कि उसकी चर्चा हो रही है, तथा उसकी तरफ़ ज़रा मुस्कराकर कहा। लेविन ने फिर तूरोवत्सिन पर नज़र डाली और उसे इस बात की हैरानी हुई कि वह इस व्यक्ति की ख़ूबियों को पहले से क्यों नहीं भांप पाया।

"माफ़ी चाहता हूं, माफ़ी चाहता हूं। लोगों के बारे में अब कभी बुरा नहीं सोचूंगा।" इस समय वह जो कुछ अनुभव कर रहा था, उसे निश्छलता से अभिव्यक्त करते हुए उसने ख़ुशी से कहा।

(१२)

नारियों के अधिकारों के बारे में छिड़ जानेवाली बातचीत में शादी सम्बन्धी असमान अधिकारों के कुछ ऐसे नाजुक सवाल थे, जिनकी महिलाओं की उपस्थिति में चर्चा नहीं की जा सकती थी। भोजन के समय पेसत्सोव ने कई बार इन सवालों को उठाया, मगर कोज़्निशेव और ओब्लोन्स्की ने बड़ी सावधानी से उन्हें टाल दिया।

जब सब मेज़ पर से उठ गये और महिलायें बाहर चली गयीं, तो पेसत्सोव ने उनके पीछे-पीछे न जाकर कारेनिन को सम्बोधित किया और उसे असमानता का मुख्य कारण बताने लगा। उसके मतानुसार पति-पत्नी की असमानता इस बात में थी कि न तो क़ानून और न समाज ही पति तथा पत्नी की बेवफ़ाई का समान दण्ड देता है।

ओब्लोन्स्की जल्दी से कारेनिन के पास आया और उसने उसकी ओर सिगार बढ़ाया।

"नहीं, मैं सिगार नहीं पीता हूं," कारेनिन ने शान्ति से उत्तर दिया और मानो जान-बूझकर यह ज़ाहिर करने के लिये कि वह इस

बातचीत से घबराता नहीं है, उसने रूखी-सी मुस्कान के साथ पेसत्सोव को सम्बोधित किया।

"मेरे ख़्याल में इस प्रश्न की प्रकृति में ऐसे दृष्टिकोण की जड़ निहित है," उसने कहा और मेहमानख़ाने में जाना चाहा। किन्तु सहसा तूरोवत्सिन कारेनिन को सम्बोधित करते हुए कह उठा :

"प्र्याच्निकोव के बारे में सुना है आपने?" शेम्पेन पीकर रंग में आये और बहुत देर से बोझ बन जानेवाली अपनी चुप्पी तोड़ने के लिये बेकरार तूरोवत्सिन ने पूछा। "वास्या प्र्याच्निकोव ने," उसने अपने नम और लाल होंठों की मधुर मुस्कान के साथ मुख्य मेहमान कारेनिन से कहा, "मुझे आज बताया गया है, त्वेर में उसने क्वीत्स्की के साथ द्वन्द्व-युद्ध किया और उसे मार डाला।"

जैसे कि हमेशा ऐसे प्रतीत होता है कि दुखती जगह पर ही आदमी को चोट लगती है, वैसे ही ओब्लोन्स्की को यह महसूस हो रहा था कि आज बदक़िस्मती से कारेनिन की टीसती रग पर ही बात केन्द्रित होती जा रही है। उसने बहनोई को वहां से ले जाना चाहा, मगर कारेनिन ने ख़ुद ही जिज्ञासा दिखाते हुए पूछा :

"किसलिये द्वन्द्व-युद्ध किया प्र्याच्निकोव ने?"

"बीवी के लिये। बड़ी मर्दानगी दिखायी! चुनौती दी और मार डाला!"

"हुम!" कारेनिन ने उदासीनता से कहा और भौंहें चढ़ाकर मेहमानख़ाने की ओर चल दिया।

"मैं कितनी ख़ुश हूं कि आप आ गये," डौली ने मेहमानख़ाने के पहले आनेवाले कमरे में उससे मिलते हुए सहमी-सी मुस्कान के साथ कहा, "मुझे आपसे बातचीत करनी है। आइये, यहां बैठ जायें।"

कारेनिन उदासीनता के उसी भाव से, जो चढ़ी हुई भौंहें उसे प्रदान करती थीं, डौली के क़रीब बैठ गया और उसने होंठों पर बनावटी मुस्कान चस्पां कर ली।

"यह तो और भी अच्छा हुआ," उसने कहा, "क्योंकि मैं आपसे माफ़ी मांगकर फ़ौरन जाने की सोच रहा था। मुझे कल यहां से रवाना होना है।"

डौली को आन्ना के निर्दोष होने का पूरा यक़ीन था और वह महसूस

कर रही थी कि इस कठोर, भावनाहीन व्यक्ति के प्रति गुस्से के कारण, जो इतने इतमीनान से उसकी निर्दोष सहेली का नाश करने का इरादा रखता था, उसके चेहरे का रंग उड़ रहा है और उसके होंठ कांप रहे हैं।

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच," उसने हताशाजन्य दृढ़ता के साथ उसकी आंखों में झांकते हुए कहा, "मैंने आपसे आन्ना के बारे में पूछा था, मगर आपने जवाब नहीं दिया। वह कैसी है?"

"मेरे ख़्याल में वह ठीक-ठाक है, दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना," उसकी ओर देखे बिना कारेनिन ने जवाब दिया।

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच, मैं माफ़ी चाहती हूं, मुझे हक़ नहीं है... लेकिन मैं बहन की तरह आन्ना को प्यार और उसका सम्मान करती हूं। मैं आपसे यह बताने की बिनती, मिन्नत करती हूं कि आपके बीच क्या हो गया है? आप उसपर किस बात का अपराध लगाते हैं?"

कारेनिन के माथे पर बल पड़ गये और आंखों को लगभग बन्द करके उसने सिर झुका लिया।

"मैं समझता हूं कि आपके पति ने आपको आन्ना अर्कादियेव्ना के साथ मेरे पहले सम्बन्धों को बदलने की ज़रूरत पैदा करनेवाले कारण बता दिये हैं," उसने डौली से नज़र मिलाये बिना, किन्तु कमरे में से गुज़रते श्चेर्बात्स्की को नाराज़गी से देखते हुए जवाब दिया।

"मैं इसपर यक़ीन नहीं करती, नहीं करती, नहीं कर सकती!" ज़ोरदार झटके के साथ अपने दुबले-पतले, हड़ीले हाथों को अपने सामने बांधते हुए डौली बोली। उसने जल्दी से उठकर कारेनिन की आस्तीन पर हाथ रख दिया। "हमारी बातचीत में यहां ख़लल पड़ सकता है। कृपया वहां चले चलिये।"

डौली की बेचैनी ने कारेनिन को प्रभावित किया। वह उठा और उसकी बात मानते हुए उसके पीछे-पीछे बच्चों के पढ़ने के कमरे में चला गया। वे क़लमतराश चाक़ू से जहां-तहां कटे हुए मोमजामे के मेज़पोश से ढकी मेज़ पर जा बैठे।

"मैं इस पर यक़ीन नहीं करती, नहीं करती," कारेनिन की बचनेवाली नज़र से नज़र मिलाने की कोशिश करते हुए डौली कह उठी।

"तथ्यों पर यक़ीन करना ही पड़ता है, दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना," उसने 'तथ्यों' शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा।

"लेकिन उसने क्या किया है?" डौली ने पूछा। "क्या किया है उसने?"

"उसने अपने कर्त्तव्यों की अवहेलना और पति के साथ बेवफ़ाई की है। यह किया है उसने," कारेनिन ने जवाब दिया।

"नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता! नहीं, भगवान के लिये ऐसा नहीं कहिये। आप भूल कर रहे हैं!" डौली ने हाथों से कनपटियों को छूते और आंखें बन्द करते हुए कहा।

कारेनिन डौली और ख़ुद को अपने यक़ीन की पुख़्तगी दिखाने की इच्छा से केवल होंठों पर रूखी-सी मुस्कान लाते हुए मुस्कराया। किन्तु इस ज़ोरदार वकालत से बेशक वह डांवांडोल नहीं हुआ, पर इसने उसके घाव पर नमक ज़रूर छिड़क दिया। वह अधिक जोश से बोलने लगा।

"जब पति के सामने पत्नी स्वयं इसकी घोषणा करे, तब भूल करने का प्रश्न ही नहीं रहता। यह घोषणा करे कि विवाहित जीवन के आठ वर्ष और बेटा – यह सब भूल है और वह फिर से ज़िन्दगी शुरू करना चाहती है," उसने नाक से सूं-सूं करते हुए झल्लाहट से कहा।

"आन्ना और दुराचार – मैं इन दोनों को सूत्रबद्ध नहीं कर सकती, मुझे इसपर विश्वास नहीं होता।"

"दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना!" अब उसने डौली के दयालु और विह्वल चेहरे पर सीधे नज़र टिकाते और यह अनुभव करते हुए कि उसकी ज़बान बोलने को बेचैन है, कहा। "अगर अभी शक-शुबहे की गुंजाइश होती, तो मैं इसके लिये बड़ी क़ीमत चुकाने को तैयार हो जाता। जब मुझे सन्देह था, तो मन पर भारी गुज़रने के बावजूद मैं इस समय की तुलना में कम दुखी था। जब तक मैं सन्देह की दुविधा में था, तो कुछ आशा भी थी, लेकिन अब आशा नहीं और फिर भी मैं हर चीज़ के बारे में सन्देह करता हूं। हर चीज़ के बारे में मैं ऐसे सन्देह करता हूं कि बेटा भी मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाता और कभी-कभी यह भी यक़ीन नहीं होता कि वह मेरा बेटा है। मैं बहुत दुखी हूं।"

उसके लिये ये अन्तिम शब्द कहना अनावश्यक था। डौली की ओर नज़र करते ही वह यह समझ गयी, उसे कारेनिन के लिये अफ़सोस होने लगा और अपनी सहेली के निर्दोष होने के बारे में उसका विश्वास डगमगा गया।

"ओह! बड़ी भयानक, बड़ी भयानक बात है यह! लेकिन क्या आपने सचमुच तलाक़ देने का फ़ैसला कर लिया है?"

"मैंने आख़िरी क़दम उठाने का फ़ैसला किया है। मैं और कुछ कर ही नहीं सकता।"

"और कुछ हो ही नहीं सकता, हो ही नहीं सकता..." डौली बड़बड़ा रही थी और उसकी आंखों में आंसू आ गये थे। "नहीं, ऐसा नहीं कहिये!" वह बोली।

"दूसरी मूसीबतों – क्षति, मृत्यु, आदि की तुलना में इस तरह की मुसीबत में यही तो सबसे बुरी बात है कि आदमी सब्र करके ही नहीं रह सकता, उसे क्रियाशील होना पड़ता है," कारेनिन ने मानो उसके विचार को भांपते हुए कहा। "आदमी को ऐसी अपमानजनक स्थिति में से निकलना ही चाहिये – तीनों का एक साथ तो निबाह नहीं हो सकता।"

"मैं समझती हूं, बहुत अच्छी तरह समझती हूं यह," डौली बोली और उसने सिर झुका लिया। वह अपने बारे में, अपने परिवार की मुसीबत के बारे में सोचती हुई कुछ देर चुप रही और अचानक ज़ोरदार झटके के साथ उसने सिर ऊपर उठाया और हाथों को बिनती करने के अन्दाज़ में जोड़ लिया। "लेकिन सुनिये। आप तो ईसाई हैं। उसके बारे में सोचिये! अगर आप उसे छोड़ देंगे, तो उसका क्या होगा?"

"मैंने सोचा है और बहुत सोचा है, दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना," कारेनिन ने जवाब दिया। उसके चेहरे पर लाल-लाल धब्बे उभर आये थे और उसकी धुंधली-धुंधली आंखें डौली की आंखों को ताक रही थीं। डौली को अब जी-जान से उसपर तरस आ रहा था। "उसके द्वारा मेरे अपमान की घोषणा के बाद मैंने यही किया था – सब कुछ पहले की तरह रहने दिया था। मैंने उसे स्थिति को सम्भालने की सम्भावना दी, उसे बचाने की कोशिश की। लेकिन नतीजा क्या निकला? उसने मेरी बड़ी मामूली-सी – लोक-लाज निभाने की मांग भी पूरी नहीं की," वह गर्म होते हुए कह रहा था। "बचाया उस आदमी को जा सकता है, जो बचना चाहता हो। लेकिन अगर किसी की प्रकृति इतनी बिगड़ चुकी हो, दुराचारी हो चुकी हो कि नाश ही उसे अपना उद्धार प्रतीत हो, तब क्या किया जाये?"

"और सब कुछ, मगर तलाक़ नहीं!" डौली ने उत्तर दिया।

"लेकिन क्या और सब कुछ?"

"नहीं, यह भयानक बात है। वह किसी की पत्नी नहीं रहेगी, वह तबाह हो जायेगी!"

"किन्तु मैं क्या कर सकता हूं?" कारेनिन ने कंधे झटके और भौंहें चढ़ाकर कहा। पत्नी की आख़िरी हरकत की याद आने से उसे ऐसी झल्लाहट हुई कि वह बातचीत शुरू होने के समय की भांति कठोर हो गया। "आपकी सहानुभूति के लिये आपका बहुत आभारी हूं, पर मुझे अब जाना चाहिये," उसने उठते हुए कहा।

"नहीं, ज़रा रुकिये! आपको उसे तबाह नहीं करना चाहिये! ज़रा रुकिये, मैं आपको अपने बारे में बताती हूं। मेरी शादी हुई, मेरे पति ने मुझे धोखा दिया – ग़ुस्से में, ईर्ष्या से मैंने सब कुछ छोड़ना चाहा, ख़ुद मैंने यही चाहा था... लेकिन मैं होश में आयी। कौन मुझे होश में लाया? आन्ना ने मुझे बचाया। अब मैं रह रही हूं। बच्चे बड़े हो रहे हैं, पति परिवार में लौटता आ रहा है, अपनी भूल को महसूस करता है, अधिक नेक, ज़्यादा बेहतर होता जा रहा है और मेरी ज़िन्दगी चल रही है... मैंने उसे क्षमा कर दिया और आपको भी उसे क्षमा कर देना चाहिये!"

कारेनिन सुन रहा था, किन्तु डौली के शब्दों का अब उसपर कोई असर नहीं हो रहा था। उसकी आत्मा में फिर से उस दिन का वह सारा ग़ुस्सा उमड़-घुमड़ पड़ा था, जब उसने तलाक़ देने का फ़ैसला किया था। उसने अपने आपको झंझोड़ा और चिचियाती-सी ऊंची आवाज़ में कह उठा:

"माफ़ मैं उसे नहीं कर सकता, करना भी नहीं चाहता और यह ठीक भी नहीं होगा। इस औरत के लिये मैंने सब कुछ किया, लेकिन उसने हर चीज़ पर कीचड़ पोत दिया, जो उसकी प्रकृति का अंग है। मैं द्वेषपूर्ण व्यक्ति नहीं हूं, मैंने कभी किसी से घृणा नहीं की, मगर उसे अपने पूरे मन से नफ़रत करता हूं और माफ़ नहीं कर सकता, क्योंकि उस सारी बुराई के लिये, जो उसने मेरे साथ की है, बहुत अधिक घृणा करता हूं मैं उसे!" उसने अपनी आवाज़ में ग़ुस्से के आंसुओं के साथ कहा।

"अपने से घृणा करनेवालों को प्यार करें..."* डौली ने लजाते हुए फुसफुसाकर कहा।

कारेनिन तिरस्कारपूर्वक मुस्कराया। बहुत पहले से वह यह जानता था, मगर उसके मामले में इसे लागू नहीं किया जा सकता था।

"अपने से घृणा करनेवालों को प्यार करें, मगर उनको प्यार नहीं किया जा सकता, जिनसे तुम घृणा करते हो। क्षमा चाहता हूं कि मैंने आपको परेशान कर दिया। हर किसी के लिये अपना ही दुख काफ़ी है!" और अपने को संतुलित कर कारेनिन ने शान्त भाव से विदा ली और चला गया।

(१३)

जब सभी लोग खाने की मेज़ से उठे, तो लेविन का मन हुआ कि वह कीटी के पीछे-पीछे मेहमानख़ाने में जाये। लेकिन उसे शंका हुई कि उसकी तरफ़ ऐसे बहुत खुले तौर पर ध्यान देने से कहीं उसे बुरा न लगे। वह पुरुषों के बीच रह गया, साझी बातचीत में भाग लेने लगा और कीटी की तरफ़ देखे बिना वह उसकी गतिविधि, उसकी नज़रों और उस जगह को अनुभव कर रहा था, जहां वह मेहमानख़ाने में बैठी थी।

कुछ ही देर पहले उसने कीटी को यह वचन दिया था कि हमेशा सभी लोगों के बारे में अच्छा सोचेगा और हमेशा सभी को प्यार करेगा – अपने इस वचन को किसी तरह के प्रयास के बिना वह पूरा भी करने लगा था। रूसी ग्राम के बारे में बातचीत हो रही थी। पेसत्सोव इस के रूप में किसी विशेष नींव, जिसे उसने सामूहिकता की नींव का नाम दिया, देख रहा था। लेविन न तो पेसत्सोव और न अपने भाई से सहमत था, जो अपने ढंग से रूसी ग्राम के महत्त्व को स्वीकार भी कर रहा था और उससे इन्कार भी कर रहा था। किन्तु वह उन दोनों के बीच सहमति लाने और उनकी आपत्तियों को थोड़ा नर्म करने के लिये ही उनसे बातचीत कर रहा था। वह ख़ुद जो कुछ

---

* बाइबल से उद्धृत शब्द।

कह रहा था, उसे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी और वे दोनों जो कुछ कह रहे थे, उसमें तो और भी कम दिलचस्पी थी। वह केवल एक ही चीज़ चाहता था – उन दोनों और बाक़ी सब को भी ख़ुशी और सुख मिले। वह अब जानता था कि उसके लिये सबसे महत्त्वपूर्ण एक चीज़ क्या है। वह एक चीज़ पहले वहां, मेहमानख़ाने में थी, फिर हिलने-डुलने लगी और दरवाज़े के पास जाकर रुक गयी। मुड़कर देखे बिना ही वह अपने पर टिकी दृष्टि और मुस्कान को अनुभव कर रहा था और मुड़े बिना नहीं रह सका। वह श्चेर्बात्स्की के साथ दरवाज़े के पास खड़ी थी और उसकी तरफ़ देख रही थी।

"मैंने सोचा था कि आप पियानो की तरफ़ जा रही हैं," कीटी के क़रीब जाकर उसने कहा। "गांव में मुझे बस, संगीत की ही कमी खलती है।"

"नहीं, हम केवल आपको बुलाने के लिये आये थे और ... आभारी हूं," उसने मानो मुस्कान के उपहार से उसे पुरस्कृत करते हुए कहा, "कि आप आ गये। बहस करने में क्या रखा है? कोई भी तो किसी दूसरे को अपनी बात का यक़ीन नहीं दिला पाता।"

"हां, यह सच है," लेविन ने कहा, "अधिकतर तो हम केवल इसलिये ज़ोर-शोर से बहस करते हैं कि हमारा विपक्षी क्या सिद्ध करना चाहता है, उसे नहीं समझ पाते हैं।"

बहुत बुद्धिमान लोगों के बीच वाद-विवाद के समय लेविन का अक्सर इस बात की ओर ध्यान गया था कि बहुत ज़ोर लगाने, तर्क-वितर्क की ढेरों बारीकियों और शब्दों के उपयोग के बाद बहस करनेवालों को आख़िर इस बात की चेतना होती थी कि उन्होंने इतनी देर से एक-दूसरे के सामने जो कुछ सिद्ध करने की कोशिश की है, वह बहुत देर से, बहस के शुरू से ही उन्हें स्पष्ट था, लेकिन उनकी पसन्द अलग-अलग है और इस कारण अपनी पसन्द का उल्लेख नहीं करना चाहते कि विपक्षी उसे मात न दे दे। उसने अक्सर यह भी अनुभव किया कि कभी-कभी बहस के समय वह चीज़ समझ में आ जाती है, जो विपक्षी को पसन्द है, और अचानक ख़ुद को भी वही चीज़ पसन्द आ जाने पर तुम फ़ौरन उससे सहमत हो जाते हो और तब सभी दलीलें बेकार होकर रह जाती हैं। कभी-कभी इसके उलट अनुभूति होती है – आख़िर

तुम वह कहते हो, जो तुम्हें पसन्द है और जिसके लिये सोच-सोचकर तर्क ढूंढ़ते हो। इस चीज़ को अच्छे और निश्छल ढंग से कह पाने में सफल होने पर ऐसा भी हो जाता है कि विरोधी अचानक सहमत होकर बहस करना बन्द कर देता है। लेविन यही कहना चाहता था।

कीटी अपने माथे पर बल डालकर उसकी बात समझने की कोशिश कर रही थी। किन्तु उसने अपनी बात स्पष्ट करनी शुरू ही की थी कि वह उसे समझ चुकी थी।

"आपका मतलब है – हमें यह जानना चाहिये कि विरोधी किस चीज़ के लिये बहस कर रहा है, उसे क्या पसन्द है, तब हम ..."

लेविन द्वारा बुरे ढंग से व्यक्त किये गये भाव को कीटी ने पूरी तरह समझकर उसे व्यक्त कर दिया था। लेविन ख़ुशी से मुस्करा दिया – उसे पेसत्सोव और अपने भाई के साथ उलझे-उलझाये ढेरों-ढेर शब्दों के बाद जटिलतम भावों की यह इतनी संक्षिप्त, स्पष्ट और लगभग शब्दहीन अभिव्यक्ति अत्यधिक आश्चर्यचकित करनेवाली प्रतीत हुई थी।

श्चेर्बात्स्की इनके पास से चला गया, कीटी ताश खेलने की मेज़ के पास जा बैठी और खड़िया लेकर नये हरे कपड़े पर एक केन्द्र से कई दिशाओं में जानेवाले चक्र बनाने लगी।

इन दोनों ने नारियों की आज़ादी और उनके कार्यों के बारे में खाने की मेज़ पर हुई बातचीत फिर से शुरू कर दी। लेविन डौली के इस विचार से सहमत था कि अविवाहित रह जानेवाली लड़की परिवार में ही नारी के करने योग्य काम पा सकती है। उसने इस तर्क से इस मत की पुष्टि की कि किसी भी परिवार का सहायिका के बिना काम नहीं चल सकता, कि हर धनी या निर्धन परिवार में या तो घर की या वेतन भोगी आया है और होनी चाहिये।

"नहीं," कीटी ने शर्म से लाल होते, किन्तु साथ ही अपनी निश्छल आंखों से लेविन की ओर अधिक साहस से देखते हुए कहा, "लड़की ऐसी स्थिति में हो सकती है कि तिरस्कार के बिना परिवार में न जा सके, लेकिन वह ख़ुद ..."

वह संकेत से ही कीटी की बात समझ गया।

"अरे, हां!" वह बोला, "हां, हां, आपकी बात सही है, आपकी बात सही है!"

खाने की मेज़ पर नारियों की आज़ादी के बारे में पेसत्सोव जो कुछ सिद्ध कर रहा था, वह सब कुछ केवल इसीलिये समझ गया कि कीटी के हृदय में उसने अविवाहित रह जाने और तिरस्कृत होने का भय देखा और चूंकि वह उसे प्यार करता था, इसलिये उसने इस भय और तिरस्कार को अनुभव किया तथा फ़ौरन अपने तर्क वापस ले लिये।

ख़ामोशी छा गयी। कीटी मेज़ पर खड़िया से चक्र बनाती जा रही थी। उसकी आंखों में धीमी-धीमी चमक थी। कीटी के मूड के अधीन होते हुए वह अपने अंग-अंग में सुख का अधिकाधिक बढ़ता हुआ तनाव अनुभव कर रहा था।

"ओह, मैंने पूरी मेज़ पर चक्र बना दिये!" कीटी ने कहा और खड़िया रखकर कुछ ऐसे हिली-डुली मानो उठना चाहती हो।

"इसके बिना मैं अकेला कैसे रहूंगा?" उसने भयभीत होकर यह सोचा और खड़िया हाथ में ले ली। "ज़रा रुकिये," मेज़ के पास बैठते हुए वह बोला। "मैं बहुत समय से आपसे एक बात पूछना चाहता था।"

लेविन ने कीटी की स्नेहपूर्ण, यद्यपि सहमी हुई नज़र से नज़र मिलाई।

"कृपया पूछिये।"

"तो यह पढ़िये," उसने कहा और वाक्य के ये पहले अक्षर लिख दिये: ज, आ, मु, य, ज, द, थ, क, ऐ, न, ह, स, त, क, इ, य, म, थ, क, क, न, ह, स, अ, क, त? इन अक्षरों का यह अर्थ था: "जब आपने मुझे यह जवाब दिया था कि ऐसा नहीं हो सकता, तो क्या इसका यह मतलब था कि कभी नहीं हो सकता अथवा केवल तभी?" इस बात की कोई सम्भावना नहीं थी कि कीटी ऐसे जटिल वाक्य को समझ जाये, किन्तु लेविन ने ऐसी दृष्टि से उसकी ओर देखा, जो मानो कह रही थी – इसी बात पर मेरी ज़िन्दगी का दारमदार है कि आप इन शब्दों को समझेंगी या नहीं।

कीटी ने गम्भीरता से लेविन की ओर देखा और फिर अपने माथे को, जिस पर बल पड़े हुए थे, हाथ पर टिकाकर इन अक्षरों को पढ़ने लगी। जब-तब वह उसकी ओर देखती और मानो अपनी नज़र से यह पूछती: "मैं जो सोच रही हूं, वह ठीक है या नहीं?"

"मैं समझ गयी," कीटी ने लज्जारुण होते हुए कहा।

"यह क्या शब्द है?" लेविन ने 'क, न' अक्षरों की ओर, जिनका अभिप्राय 'कभी नहीं' से था, संकेत करते हुए पूछा।

"इन अक्षरों का मतलब है 'कभी नहीं'," कीटी ने कहा, "मगर यह सही नहीं है!"

लेविन ने जल्दी से अपने लिखे अक्षरों को मिटा दिया, खड़िया कीटी को दे दी और उठकर खड़ा हो गया। कीटी ने ये अक्षर लिखे: त, म, क, द, ज, न, द, स, थ।

डौली ने जब इन दो आकृतियों – हाथों में खड़िया लिये सहमी और सुखद मुस्कान के साथ लेविन की तरफ़ ऊपर को देखती कीटी तथा चमकती आंखों के साथ, जो कभी मेज़ और कभी कीटी पर टिक जाती थीं, कीटी की ओर झुकी हुई लेविन की सुन्दर आकृति – को देखा, तो कारेनिन के साथ हुई बातचीत के कारण उसे जो दुख हुआ था, उससे पूरी राहत मिल गयी। लेविन अचानक खिल उठा – वह अक्षरों का मतलब समझ गया था। इनका अर्थ था: "तब मैं कोई दूसरा जवाब नहीं दे सकती थी।"

लेविन ने झेंपते हुए प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी तरफ़ देखा।

"केवल तब?"

"हां," कीटी की मुस्कान ने उत्तर दिया।

"और अ... और अब?" लेविन ने पूछा।

"लीजिये, इसे पढ़िये। मैं वह कहूंगी, जो चाहती हूं। बेहद चाहती हूं!" कीटी ने शुरू के अक्षर लिख दिये – क, ज, ह, थ, आ, उ, भ, ज, औ, क्ष, क, द। इनका मतलब था: "कि जो हुआ था, आप उसे भूल जायें और क्षमा कर दें।"

लेविन ने तनावपूर्ण और कांपती उंगलियों से खड़िया उठाई, उसे तोड़ा और इस उत्तर के प्रारम्भिक अक्षर लिख दिये: "मेरे कुछ भी भूलने और क्षमा करने का सवाल नहीं है, मैं आपको वैसे ही प्यार करता हूं।"

कीटी ने ठहरी-सी मुस्कान के साथ उसकी ओर देखा।

"मैं समझ गयी," वह फुसफुसायी।

लेविन ने बैठकर एक लम्बे वाक्य के पहले अक्षर लिखे। कीटी सब

कुछ समझ गयी और उससे यह पूछे बिना कि वह सही है या नहीं, उसने खड़िया लेकर तुरन्त उत्तर लिख दिया।

कीटी ने जो कुछ लिखा था, लेविन उसे देर तक नहीं समझ पाया और बार-बार उसकी आंखों में झांकता रहा। खुशी के कारण उसकी आंखों के सामने धुंध-सी छा गयी थी। कीटी का जिन शब्दों से अभिप्राय था, वे उसे किसी तरह नहीं मिलते थे। किन्तु कीटी की खुशी से चमकती हुई सुन्दर आंखों में उसने वह सब कुछ पढ़ लिया, जो वह जानना चाहता था। उसने तीन अक्षर लिखे। किन्तु लेविन ने अभी लिखना समाप्त नहीं किया था कि कीटी ने उसके हाथ के ऊपर से उन्हें पढ़कर खुद पूरा कर दिया और जवाब में "हां" लिख दिया।

"अक्षर बूझने का खेल खेल रहे हैं?" बूढ़े प्रिंस ने निकट आकर पूछा। "लेकिन अगर वक़्त पर थियेटर पहुंचना चाहती हो, तो चलना चाहिये।"

लेविन उठा और कीटी को दरवाज़े तक पहुंचा आया।

इन दोनों की बातचीत में सब कुछ कह दिया गया था। यह कहा जा चुका था कि कीटी उसे प्यार करती है और माता-पिता को यह बता देगी कि वह अगली सुबह को उनके यहां आयेगा।

(१४)

कीटी के जाने पर जब लेविन अकेला रह गया, तो उसके बिना उसने ऐसी बेचैनी और अगली सुबह तक, जब वह फिर उससे मिलेगा और उसके साथ चिर-बन्धन में बंध जायेगा, जल्दी से जल्दी जी लेने की तीव्र इच्छा अनुभव की, कि वह इन चौदह घण्टों से, जो अभी उसे उसके बिना बिताने थे, मौत की तरह भयभीत हो उठा। इसलिये कि वह अकेला न रहे, कि समय को छल सके, उसके लिये किसी की संगत में रहना और बातचीत करना ज़रूरी था। इस उद्देश्य के लिये ओब्लोन्स्की सबसे अच्छा रहता, मगर वह, जैसा कि उसने बताया था, रात की पार्टी में, किन्तु वास्तव में थियेटर जा रहा था। लेविन उससे केवल इतना ही कह पाया कि वह बहुत खुश है और उसे प्यार करता है तथा कभी भी वह नहीं भूल सकेगा, जो उसने उसके लिये

किया है। ओब्लोन्स्की की दृष्टि और मुस्कान लेविन को यह स्पष्ट कर रही थीं कि वह उसकी इस भावना को सही रूप में समझ रहा है।

"तो कहो, अभी मरने का वक़्त तो नहीं आया न?" ओब्लोन्स्की ने स्नेह से लेविन का हाथ दबाते हुए पूछा।

"नहीं!" लेविन ने जवाब दिया।

डौली ने भी लेविन से विदा लेने के समय मानो बधाई देते हुए उससे कहा:

"कितनी ख़ुश हूं कि आपकी कीटी से फिर मुलाक़ात हुई। पुरानी दोस्तियों को सहेजना चाहिये।"

किन्तु लेविन को डौली के ये शब्द अच्छे नहीं लगे। वह यह समझने में असमर्थ थी कि यह सब कितना ऊंचा और उसकी समझ के परे था, कि उसे यह याद दिलाने का साहस नहीं करना चाहिये था।

लेविन ने इनसे विदा ले ली, लेकिन इसलिये कि अकेला न रह जाये, अपने भाई के साथ चिपक गया।

" तुम कहां जा रहे हो?"

"बैठक में भाग लेने।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं। चल सकता हूं?"

"चल क्यों नहीं सकते? चलो," कोज़्निशेव ने मुस्कराकर कहा। "तुम्हें आज हुआ क्या है?"

"मुझे? मैं आज सौभाग्यशाली हूं!" लेविन ने जिस बग्घी में वे जा रहे थे, उसकी खिड़की का शीशा नीचे गिराते हुए कहा। "तुम्हें तो कोई आपत्ति नहीं? वरना दम घुटता है। मैं आज सौभाग्यशाली हूं! तुमने कभी शादी क्यों नहीं की?"

कोज़्निशेव मुस्कराया।

"मैं बहुत ख़ुश हूं। लगता है कि वह बहुत भली लड़की..." कोज़्निशेव ने कहना चाहा।

"नहीं कहो, नहीं कहो, कुछ नहीं कहो!" लेविन ने दोनों हाथों से भाई के कोट के कालर से उसके सीने को ढकते हुए कहा। "वह बहुत भली लड़की है," इतने साधारण और घिसे-पिटे ये शब्द उसकी भावना के बिल्कुल अनुरूप नहीं थे।

कोज़्निशेव खिलखिलाकर हंस दिया, जैसा कि उसके साथ बहुत कम होता था।

"फिर भी यह तो कह सकता हूं कि मैं बहुत ख़ुश हूं।"

"यह कल, कल कहा जा सकता है और इससे अधिक कुछ नहीं! कुछ नहीं, कुछ भी नहीं, ख़ामोशी!" लेविन ने कहा और एक बार फिर भाई के फ़र कोट के कालर से उसके सीने को ढकते हुए इतना और जोड़ दिया: "बहुत प्यार करता हूं मैं तुम्हें! मैं बैठक में चल सकता हूं न?"

"ज़ाहिर है, चल सकते हो।"

"आज वहां किस बात की चर्चा होनेवाली है?" लेविन ने लगातार मुस्कराते हुए पूछा।

वे बैठक में भाग लेने के लिये पहुंचे। लेविन ने सेक्रेटरी को रुक-रुककर पिछली बैठक की रिपोर्ट पढ़ते सुना, जिसे स्पष्टतः वह ख़ुद नहीं सभभ्फ रहा था। किन्तु लेविन ने इस सेक्रेटरी के चेहरे से यह देखा कि वह कितना प्यारा, दयालु और भला आदमी है। रिपोर्ट पढ़ते वक़्त वह कैसे घबरा रहा था, गड़बड़ कर रहा था, लेविन को यही उसकी भलमनसाहत का प्रमाण प्रतीत हुआ। इसके बाद भाषण शुरू हुए। वे कुछ रक़में निर्धारित करने और पाइपें बिछाने के बारे में बहस कर रहे थे। कोज़्निशेव ने दो सदस्यों को शब्दों के विषैले डंक मारे और विजेता की तरह काफ़ी देर तक बोलता रहा। दूसरे सदस्य ने काग़ज़ पर कुछ लिखकर शुरू में तनिक झिझकते हुए बोलना आरम्भ किया, मगर बाद में उसने बड़े ज़हरीले और मधुर ढंग से उसे उत्तर दिया। इसके बाद स्वियाज्स्की ने (वह भी यहां था) भी बहुत सुन्दरता और उदात्तता से कुछ कहा। लेविन इन लोगों को सुन और स्पष्ट रूप से अनुभव कर रहा था कि न तो रक़में निर्धारित करने और न पाइपें बिछाने की बात ही कोई महत्त्व रखती थी और ये लोग बिल्कुल खीझ-झुंझला नहीं रहे थे, बल्कि सभी बड़े दयालु और भले लोग थे और उनके बीच सभी कुछ बहुत अच्छे और प्यारे ढंग से हो रहा था। कोई भी किसी के लिये बाधा नहीं था, सभी को बहुत अच्छा लग रहा था। लेविन के लिये सबसे विलक्षण बात यह थी कि आज इन सभी को वह आर-पार देख पा रहा था और ऐसे छोटे-छोटे लक्षणों से, जिन्हें वह पहले नहीं

देख सका था, वह हर किसी की आत्मा को जानने में समर्थ था और साफ़ तौर पर देख रहा था कि वे सभी दयालु लोग थे। उसे, लेविन को तो वे सभी आज ख़ास तौर पर बहुत प्यार कर रहे थे। यह इस चीज़ से नज़र आ रहा था कि कैसे वे उससे बात कर रहे थे, सभी अपरिचित लोग भी उसकी तरफ़ कैसे स्नेह से देख रहे थे।

"कहो, तुम्हें यहां अच्छा लगा?" कोज़्निशेव ने उससे पूछा।

"बहुत ही। मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि यह इतना दिलचस्प होगा। बहुत ख़ूब, बहुत बढ़िया!"

स्वियाज़्स्की ने लेविन के पास आकर उसे अपने यहां चाय पीने के लिये आमन्त्रित किया। लेविन किसी भी तरह यह समझ और याद नहीं कर पा रहा था कि वह किस कारण स्वियाज़्स्की से नाख़ुश था, उससे क्या चाहता था। वह समझदार और अद्भुत रूप से दयालु व्यक्ति था।

"बड़ी ख़ुशी से," उसने कहा और उसकी पत्नी तथा साली का हाल-चाल पूछा। विचारों के अजीब संयोग से, चूंकि स्वियाज़्स्की की साली का विचार विवाह से ही सम्बन्धित था, उसे लगा कि स्वियाज़्स्की की पत्नी और साली से बेहतर और कोई व्यक्ति नहीं होगा, जिसे वह अपने सौभाग्य के बारे में बताये। इसलिये उनके यहां जाते हुए उसे बड़ी ख़ुशी हो रही थी।

स्वियाज़्स्की ने लेविन से गांव में उसके काम-काज के बारे में पूछ-ताछ की और सदा की भांति ऐसा कुछ ढूंढ़ पाने की सम्भावना को स्वीकार नहीं किया, जो यूरोप में खोज न लिया गया हो। लेविन को अब यह बिल्कुल बुरा नहीं लगा। इसके विपरीत, वह यह महसूस कर रहा था कि स्वियाज़्स्की की बात सही है, कि यह सारा धन्धा बड़ा तुच्छ है तथा उस शराफ़त और नज़ाकत को महसूस कर रहा था, जिससे स्वियाज़्स्की अपने सही होने की चर्चा से कन्नी काट रहा था। स्वियाज़्स्की के घर की महिलायें तो विशेषतः बहुत अच्छे ढंग से पेश आ रही थीं। लेविन को लगा कि वे सब कुछ जानती हैं, उसके प्रति सहानुभूति रखती हैं, लेकिन मामले की नज़ाकत को महसूस करते हुए कुछ कहती नहीं हैं। वह उनके यहां एक, दो, तीन घण्टे बैठा हुआ तरह-तरह के विषयों पर बातें करता रहा, किन्तु उसी चीज़ के बारे में

सोचता रहा, जो उसके दिल-दिमाग़ पर छाई हुई थी। इस बात की ओर उसका ध्यान नहीं गया कि उसने बुरी तरह उन्हें उबा डाला है और बहुत पहले ही उनके सोने का वक़्त हो चुका है। स्वियाज्स्की जम्हाइयां लेते और अपने मित्र की मानसिक स्थिति पर हैरान होते हुए उसे ड्योढ़ी तक छोड़ गया। रात के एक बजने के बाद का वक़्त था। लेविन होटल में लौटा और यह सोचकर परेशान हो उठा कि अपनी बेक़रारी-बेचैनी के साथ वह अभी शेष रह गये दस घण्टे अकेला कैसे बितायेगा। ड्यूटी बजानेवाले नौकर ने मोमबत्ती जला दी और जाना चाहा, किन्तु लेविन ने उसे रोक लिया। येगोर नाम का यह नौकर, जिसकी ओर लेविन का पहले ध्यान ही नहीं गया था, बहुत समझदार और भला तथा इससे भी बढ़कर, दयालु व्यक्ति प्रतीत हुआ।

"जागते रहना कठिन लगता है न, येगोर?"

"क्या किया जाये! काम ही ऐसा है। रईसों के घरों में चैन रहता है, मगर यहां आमदनी ज़्यादा है।"

पता चला कि येगोर का परिवार है, तीन बेटे और एक बेटी, जो दर्ज़िन है। वह ज़ीनसाज़ की दुकान के कारिन्दे के साथ उसकी शादी करना चाहता था।

इस सिलसिले में लेविन ने येगोर को अपना यह विचार बताया कि शादी के मामले में प्यार ही मुख्य चीज़ है और प्यार से आदमी सदा सुखी रहता है, क्योंकि सुख तो ख़ुद आदमी के भीतर ही होता है।

येगोर ने ध्यान से लेविन की बात सुनी और उसके विचार को सम्भवतः अच्छी तरह समझ गया, किन्तु इसकी पुष्टि में उसने लेविन के लिये अप्रत्याशित यह टिप्पणी की कि जब वह भले कुलीनों के यहां काम करता था, तो हमेशा उनसे सन्तुष्ट रहा और अब भी अपने मालिक से ख़ुश है, यद्यपि वह फ़्रांसीसी है।

"बहुत ही दयालु आदमी है," लेविन ने सोचा।

"येगोर, जब तुमने शादी की थी, तो क्या तुम अपनी बीवी को प्यार करते थे?"

"प्यार कैसे नहीं करता था," येगोर ने जवाब दिया।

लेविन ने देखा कि येगोर भी उल्लासपूर्ण मानसिक स्थिति में है और अपनी सभी आन्तरिक भावनायें व्यक्त करना चाहता है।

"मेरा जीवन भी अद्भुत है। मैं बचपन से ही..." उसने आंखों में चमक लाते और स्पष्टतः लेविन के उल्लास से वैसे ही प्रभावित होकर कहना शुरू किया, जैसे लोग किसी दूसरे को जम्हाई लेते देखकर खुद जम्हाई लेने लगते हैं।

किन्तु इसी समय घण्टी बजी। येगोर चला गया और लेविन अकेला रह गया। उसने तीसरे पहर के भोजन के समय लगभग कुछ नहीं खाया था, स्वियाज्स्की के यहां रात के खाने और चाय से इन्कार कर दिया था, लेकिन रात के खाने के बारे में सोच भी नहीं सकता था। वह पिछली रात सो नहीं सका था, किन्तु सोने का ख़्याल भी ध्यान में नहीं ला सकता था। कमरे में ठण्डक थी, मगर उसका गर्मी से दम घुट रहा था। उसने खिड़की के दोनों झरोखे खोल दिये और उनके सामने मेज़ पर बैठ गया। बर्फ़ से ढकी छत के पीछे ज़ंजीरों सहित बेल-बूटोंवाली सलीब दिखाई दे रही थी और उसके ऊपर उसे अत्यधिक चमकते पीले कैपेल्ला तारे के साथ प्रजापति नक्षत्र का तिकोण दिखाई दिया। वह कभी सलीब, तो कभी तारे पर नज़र डालता, क्रमिक रूप से कमरे में आनेवाली ताज़ा, बर्फ़ीली हवा को सांसों में भरता और कल्पना-पट पर उभरनेवाले बिम्बों और स्मृतियों को मानो स्वप्न की भांति देखता। तीन बजने के बाद उसे गलियारे में पैरों की आहट सुनाई दी और उसने दरवाज़े में से झांककर देखा। यह उसका परिचित जुआरी म्यास्किन था, जो क्लब से लौट रहा था। वह बड़ा उदास, नाक-भौंह सिकोड़े और खांसता हुआ चल रहा था। "बेचारा, क़िस्मत का मारा," लेविन ने सोचा और इस व्यक्ति के प्रति प्यार और दया से उसकी आंखें डबडबा आयीं। उसने चाहा कि उससे बात करे, उसे तसल्ली दे, मगर यह ध्यान आने पर कि वह सिर्फ़ एक क़मीज़ पहने है, उसने अपना इरादा बदल लिया और फिर से ठण्डी हवा में स्नान करने और अनूठी बनावटवाली, मूक, किन्तु उसके लिये महत्वपूर्ण सलीब तथा ऊपर उठते हुए पीले चमकते तारे को देखे। छः बजते ही फ़र्श पर पालिश करनेवाले अपना काम करने लगे, किसी गिरजे में घण्टियां बजने लगीं तथा लेविन झुरझुरी महसूस करने लगा। उसने खिड़की का झरोखा बन्द कर दिया, हाथ-मुंह धोया, कपड़े पहने और बाहर सड़क पर आ गया।

(१५)

सड़कें अभी सूनी पड़ी थीं। लेविन श्चेर्बात्स्की परिवार के घर के क़रीब पहुंचा। मुख्य द्वार बन्द था और सभी सो रहे थे। वह वापस लौटा, फिर से अपने होटल के कमरे में गया और कॉफ़ी लाने को कहा। येगोर के बजाय दिन के वक़्त का बैरा कॉफ़ी लाया। लेविन ने उससे बातचीत शुरू करनी चाही, लेकिन बैरे को किसी ने घण्टी बजा कर बुला लिया और वह चला गया। लेविन ने कॉफ़ी पीना और केक का टुकड़ा मुंह में डालना चाहा, किन्तु उसका मुंह मानो बिल्कुल नहीं समझ पा रहा था कि वह केक का क्या करे। लेविन ने केक थूक दिया, ओवरकोट पहना और फिर से बाहर चला गया। नौ से अधिक का समय हो चुका था, जब वह दूसरी बार श्चेर्बात्स्की परिवार के घर के सामने पहुंचा। घर के लोग अभी जागे ही थे और बावर्ची रसद लाने के लिये जा रहा था। अभी कम से कम दो घण्टे और बिताना लाज़िमी था।

लेविन ने पिछली रात और सुबह पूरी तरह अचेतनावस्था में गुज़ारी थी और अपने को भौतिक जीवन की स्थितियों से एकदम मुक्त अनुभव करता रहा था। उसने दिन भर कुछ भी नहीं खाया था, दो रातों तक पलक नहीं झपकी थी, सिर्फ़ क़मीज़ पहने हुए ही बर्फ़ीली हवा में कई घण्टे गुज़ारे थे और न केवल इतना ताज़ादम और स्वस्थ अनुभव कर रहा था, जितना उसने कभी नहीं किया था, बल्कि अपने को शरीर से सर्वथा मुक्त महसूस कर रहा था। वह मांस-पेशियों के किसी प्रयास के बिना चल-फिर रहा था और अनुभव करता था कि सभी कुछ कर सकता है। उसे यक़ीन था कि ज़रूरत होने पर उड़ भी सकता है और किसी घर का कोना भी हिला-डुला सकता है। उसने लगातार घड़ी पर नज़र डालते और इधर-उधर देखते हुए बाक़ी वक़्त बिताया।

लेविन ने इस समय जो कुछ देखा, इसके बाद फिर कभी नहीं देख पाया। विशेष रूप से स्कूल जाते बच्चों, छतों से पटरी पर उड़ आनेवाले नीलगूं कबूतरों और पावरोटियों ने, जिन पर आटा छिड़का हुआ था और जिन्हें अदृश्य हाथ ने वहां रख दिया था, विशेष रूप से

उसके दिल को छू लिया। ये पावरोटियां, कबूतर और दो लड़के मानो इस दुनिया के प्राणी नहीं थे। यह सब एक ही वक़्त हुआ – लड़का भागता हुआ कबूतर के पास गया और मुस्कराते हुए उसने लेविन की तरफ़ देखा। कबूतर ने पंख फड़फड़ाये और हवा में सिहरते हिमकणों के बीच से धूप में अपने पंखों को चमकाता हुआ उड़ गया। छोटी-सी खिड़की में से सिंकी हुई डबलरोटियों की सुगन्ध आ रही थी तथा पावरोटियां सामने आ रही थीं। यह सब कुछ एक साथ इतना असाधारण रूप से अच्छा था कि लेविन ख़ुशी से रो और हंस पड़ा। गाज़ेत्नी गली और कीस्लोव्का का बड़ा-सा चक्कर लगाकर वह फिर होटल में वापस आ गया और घड़ी को अपने सामने रखकर बारह बजने का इन्तज़ार करने लगा। बग़ल के कमरे में मशीनों और धोखे-फ़रेब के बारे में कुछ बातचीत हो रही थी और सुबह के ढंग की खांसी सुनाई दे रही थी। ये लोग नहीं समझ पा रहे थे कि घड़ी की सूई बारह के क़रीब पहुंच रही है। बारह बज गये। लेविन बाहर आया। कोचवान सम्भवतः सब कुछ जानते थे। खिले हुए चेहरोंवाले इन कोचवानों ने उसे घेर लिया और आपस में बहस करते हुए वे अपनी सेवायें पेश करने लगे। इस आशय से कि दूसरे कोचवानों के दिलों को ठेस न लगे, उसने किसी दूसरी बार उनकी गाड़ी में जाने का वचन देते हुए एक कोचवान को चुन लिया और उसे श्चेर्बात्स्की परिवार के यहां चलने को कहा। कोट से ऊपर उठे और मज़बूत लाल गर्दन पर फ़िट बैठे सफ़ेद क़मीज़ के कालरवाला कोचवान बहुत ख़ूब था। इस कोचवान की स्लेज ऊंची और ऐसी आरामदेह थी कि फिर कभी उसे इस तरह की गाड़ी में सवारी का मौक़ा नहीं मिला। घोड़ा भी लाजवाब था, तेज़ भागने की कोशिश करता था, मगर मानो अपनी जगह से हिलता ही नहीं प्रतीत हो रहा था। कोचवान श्चेर्बात्स्की परिवार का घर जानता था और सवारी के प्रति विशेष आदर दिखाने के लिये कोहनियों को गोल बनाते तथा "तुर्र" कहकर घोड़े को रोकते हुए लेविन को घर के सामने उतार दिया। श्चेर्बात्स्की परिवार का दरबान तो शायद सब कुछ जानता था। यह उसकी आंखों की मुस्कान और जिस ढंग से उसने निम्न शब्द कहे, स्पष्ट था: "बहुत दिनों से नहीं पधारे, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच!"

न केवल यह कि वह सब कुछ जानता था, बल्कि स्पष्टतः बहुत ख़ुश और अपनी ख़ुशी को छिपाने के लिये प्रयत्नशील भी था। उसकी बुढ़ा चुकी, प्यारी आंखों में झांकते हुए लेविन अपनी ख़ुशी में कुछ और नया समझ पाया।

"घरवाले उठ गये!"

"जी! इसे यहीं रहने दीजिये," जब लेविन ने टोपी लेने के लिये वापस जाना चाहा, तो दरबान ने मुस्कराते हुए कहा। यह भी कुछ अर्थपूर्ण बात थी।

"किसे सूचित करने का आदेश दीजियेगा?" नौकर ने पूछा।

नौकर बेशक जवान और नये ढंग के नौकरों में से, बांका-छैला था, फिर भी बहुत दयालु और भला आदमी था और वह भी सब कुछ समझता था।

"प्रिंसेस ... प्रिंस ... छोटी प्रिंसेस को ..." लेविन ने कहा।

लेविन को जो चेहरा सबसे पहले दिखाई दिया, वह mademoiselle Linon का था। वह हॉल को लांघ रही थी और उसके विरले घुंघराले बाल तथा चेहरा चमक रहा था। लेविन ने उसके साथ बात शुरू ही की थी कि अचानक दरवाज़े के पीछे फ़्राक की सरसराहट सुनाई दी और mademoiselle Linon लेविन की आंखों के सामने से ओझल हो गयी और अपने सौभाग्य की निकटता की सुखद घबराहट से उसका दिल बैठ गया। Mademoiselle Linon ने उतावली की और उसे वहीं छोड़कर दूसरे दरवाज़े की ओर बढ़ गयी। उसके बाहर जाते ही तख़्तों के फ़र्श पर तेज़ और हल्के-फुल्के क़दम बज उठे और उसकी ख़ुशी, उसकी ज़िन्दगी, वह ख़ुद–ख़ुद उसका बेहतर भाग, वह, जिसकी वह इतने समय से तलाश और तमन्ना कर रहा था, बड़ी तेज़ी से उसके क़रीब आती जा रही थी। वह आ नहीं रही थी, बल्कि कोई अदृश्य शक्ति उसे उसकी तरफ़ खींचे ला रही थी।

लेविन केवल उसकी निर्मल और निश्छल आंखों को देख रहा था, जो प्यार की उसी ख़ुशी से सहमी हुई थीं, जिससे उसका अपना दिल सराबोर था। इन आंखों की चमक अधिकाधिक निकट आती जा रही थी, अपने प्यार के प्रकाश से उसे चकाचौंध कर रही थी। वह उसके

क़रीब आकर उसे छूती हुई रुक गयी। उसकी बांहें उठीं और उसके कंधों पर टिक गयीं।

वह जो कुछ कर सकती थी, उसने सब कुछ कर दिया था – वह उसके पास भाग आयी थी और उसने झेंपते तथा ख़ुश होते हुए अपने को पूरी तरह उसे समर्पित कर दिया था। लेविन ने उसे अपने आलिंगन में भर लिया और उसके मुंह पर, जो उसका चुम्बन पाना चाह रहा था, अपने होंठ टिका दिये।

वह भी सारी रात नहीं सोई थी और पूरी सुबह उसकी राह देखती रही थी। माता-पिता पूरी तरह सहमत और उसकी ख़ुशी से ख़ुश थे। वह उसकी राह देख रही थी। वही सबसे पहले उसे अपने तथा उसके सौभाग्य की सूचना देना चाहती थी। वह अकेली ही उससे मिले, इसके लिये अपने को तैयार करती रही थी और इस विचार से ख़ुश भी हुई थी, झेंपी भी थी, शर्माई भी थी तथा ख़ुद यह नहीं जानती थी कि क्या करेगी। उसने लेविन के पैरों की आहट और आवाज़ सुनी तथा mademoiselle Linon के जाने तक दरवाज़े के पीछे खड़ी रहकर राह देखती रही। वह कुछ सोचे-विचारे और अपने से क्यों और कैसे पूछे बिना उसके पास चली गयी और वह किया, जो उसने किया था।

"आइये, मां के पास चलें," लेविन का हाथ थामते हुए कीटी ने कहा। लेविन देर तक कुछ नहीं कह सका। इतना इसलिये नहीं कि वह शब्दों से अपनी भावनाओं की गरिमा नष्ट करने से डरता था, जितना इसलिये कि हर बार, जब उसने कुछ कहना चाहा, उसे ऐसा अनुभव हुआ कि शब्दों के बजाय उसकी आंखों से ख़ुशी के आंसू निकल आयेंगे। लेविन ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर चूमा।

"क्या यह सच है?" आख़िर उसने खरखरी-सी आवाज़ में कहा। "यक़ीन नहीं होता कि तुम मुझे प्यार करती हो!"

कीटी उसके "तुम" और उस भीरुता पर मुस्करा दी, जिससे उसने उसकी तरफ़ देखा था।

"हां!" कीटी ने विशेष महत्व के साथ और धीरे-धीरे कहा। "बहुत सौभाग्यशालिनी हूं मैं!"

लेविन का हाथ थामे हुए ही वह मेहमानख़ाने में दाख़िल हुई। दोनों को देखते ही प्रिंसेस की सांस तेज़ हो गयी, वे उसी क्षण रो दीं,

हंस दीं और ऐसी फुर्ती से, जिसकी लेविन ने आशा नहीं की थी, लपककर उनके पास आईं, लेविन के सिर को बाहुपाश में लेकर उसे चूमा और उसके गालों को आंसुओं से तर कर दिया।

"तो बात तय हो गयी! मैं ख़ुश हूं। इसे प्यार करो। मैं ख़ुश हूं... कीटी!"

"जल्द ही मामला निपटा लिया!" बूढ़े प्रिंस ने अन्यमनस्कता प्रकट करने का प्रयास करते हुए कहा। किन्तु जब उन्होंने लेविन को सम्बोधित किया, तो उसने देखा कि उनकी आंखें नम थीं।

"मैं बहुत अर्से से, सदा से यही चाहता रहा हूं!" लेविन का हाथ थामते और उसे अपनी ओर खींचते हुए उन्होंने कहा। "मैं तो तब भी, जब इस चंचल के दिमाग़ में कुछ और..."

"पापा!" कीटी चिल्ला उठी और दोनों हाथों से पिता का मुंह बन्द कर दिया।

"अच्छी बात है, नहीं कहूंगा!" वे बोले। "मैं बेहद, बेहद... खुश... ओह, कैसा बुद्धू हूं मैं..."

पिता ने बेटी को गले लगाया, उसका मुंह, हाथ, फिर मे मुंह चूमा और उसपर सलीब बनायी।

और लेविन ने जब यह देखा कि कीटी कैसे देर तक और भावुकता से पिता के भारी हाथ को चूम रही है, तो उसके दिल में पहले अपने लिये पराये इस बूढ़े प्रिंस के प्रति प्यार की नयी भावना तरंगित हो उठी।

(१६)

आरामकुर्सी में बैठी हुई प्रिंसेस चुपचाप मुस्करा रही थीं। प्रिंस उनकी बग़ल में बैठ गये। कीटी अपने पिता का हाथ थामे हुए ही उनकी आरामकुर्सी के पास खड़ी थी। सब ख़ामोश थे।

प्रिंसेस ने ही सबसे पहले शब्दों में सारी बात कही और विचारों तथा भावनाओं को जीवन का व्यावहारिक रूप दिया। पहले क्षण में तो यह सभी को समान रूप से अजीब और पीड़ायुक्त भी प्रतीत हुआ।

"तो कब? सगाई और रिश्ता पक्का होने की घोषणा होनी चाहिये।

शादी कब की जाये? तुम्हारा क्या ख़्याल है, अलेक्सान्द्र?"

"इससे पूछो," बूढ़े प्रिंस ने लेविन की ओर संकेत करते हुए कहा। "यह तो इसी को तय करना है।"

"कब?" लेविन लज्जारुण होते हुए बोला। "कल। अगर आप मुझसे पूछते हैं, तो शायद आज सगाई और कल ब्याह हो जाना चाहिये।"

"बस, रहने दो, mon cher, यह बेकार बात है!"

"तो एक हफ़्ते बाद।"

"यह तो सचमुच पागल है।"

"लेकिन क्यों नहीं?"

"हे भगवान!" लेविन की इस उतावली पर ख़ुशी से मुस्कराते हुए प्रिंसेस ने कहा। "और दहेज?"

"तो क्या दहेज और बाक़ी सब कुछ भी होगा?" लेविन ने दहलते दिल से सोचा। "लेकिन क्या दहेज और सगाई की रस्म और बाक़ी सब कुछ – क्या इससे मेरी ख़ुशी का रंग बिगड़ सकता है? नहीं, किसी भी चीज़ से ऐसा नहीं हो सकता!" उसने कीटी की तरफ़ देखा और महसूस किया कि दहेज के विचार से उसे ज़रा भी ठेस नहीं लगी है। "इसका मतलब यह हुआ कि ऐसा होना चाहिये," उसने सोचा।

"बात यह है कि मैं कुछ भी नहीं जानता और मैंने केवल अपनी इच्छा ही व्यक्त की है," उसने अपनी सफ़ाई देते हुए कहा।

"तो हम ही तय कर लेंगे। हम सगाई के साथ ही विवाह की घोषणा कर देंगे। यह ठीक रहेगा।"

प्रिंसेस अपने पति के पास गयीं, उन्हें चूमा और जाना चाहा, लेकिन पति ने उसे रोक लिया, बांहों में भरकर युवा प्रेमी की तरह कोमलता से तथा मुस्कराते हुए उसे कई बार चूमा। बूढ़े स्पष्टतः क्षण भर को अपनी सुध-बुध खो बैठे और उन्हें इस बात का पूरा ज्ञान नहीं रहा कि वे दोनों ही फिर से प्रेम-दीवाने हो गये हैं या उनकी बेटी ही। प्रिंस और प्रिंसेस के बाहर जाने पर लेविन अपनी मंगेतर के पास गया और उसका हाथ थाम लिया। अब उसने अपने को सम्भाल लिया था और बातें कर सकता था। उसे कीटी से बहुत कुछ कहना था। लेकिन उसने वह नहीं कहा, जो कहना था।

"मैं जानता था कि ऐसा ही होगा! मैंने कभी आशा नहीं की थी; किन्तु मेरे दिल में हमेशा इसका विश्वास बना रहा था," उसने कहा। "मुझे यक़ीन है कि क़िस्मत ने पहले से ही ऐसा तय कर दिया था।"

"और मैं?" वह बोली। "तब भी..." कीटी रुकी और अपनी निश्छल आंखों से दृढ़तापूर्वक उसकी ओर देखती हुई फिर से कहती गयी, "तब भी, जब मैंने अपने सौभाग्य को अपने से दूर किया था। मैं हमेशा सिर्फ़ आपको ही प्यार करती थी, मगर बहक गयी थी... मुझे यह कहना ही होगा... आप इसे भुला सकेंगे?"

"शायद यह अच्छा ही हुआ। आपको भी मुझे बहुत कुछ क्षमा करना होगा। मैं आपको बताये बिना नहीं रह सकता कि..."

लेविन ने कीटी को जो कुछ बताने का निर्णय किया था, यह उनमें से एक बात थी। उसने शुरू से ही उसे दो बातें बताने का इरादा बना लिया था – कि वह उसकी भांति पवित्र नहीं है और दूसरे यह कि नास्तिक है। यह यातनापूर्ण था, किन्तु वह ऐसा मानता था कि उसे दोनों बातें कह ही देनी चाहिये।

"नहीं, अब नहीं, बाद को!" लेविन ने कहा।

"अच्छी बात है, बाद को, मगर बताना ज़रूर। मैं किसी भी चीज़ से नहीं डरती। मुझे सब कुछ जानना चाहिये। सो यह तय हो गया।"

लेविन ने कीटी की बात पूरी की:

"तय यह हो गया कि मैं जैसा भी हूं आप मुझे उसी रूप में ग्रहण कर लेंगी, मुझसे इन्कार नहीं करेंगी न? नहीं न?"

"हां, हां, नहीं करूंगी।"

Mademoiselle Linon ने इनकी बातचीत में ख़लल डाल दिया, जो बेशक बनावटी ढंग से, किन्तु मधुर मुस्कान लिये हुए अपनी प्यारी शिष्या को बधाई देने आई थी। उसके बाहर जाते ही नौकर-चाकर बधाई देने आ गये। बाद में रिश्तेदार आ पहुंचे और उस सुखद शोर-शराबे का आरम्भ हुआ, जिससे लेविन को विवाह के अगले दिन तक मुक्ति नहीं मिली। लेविन लगातार अटपटापन और ऊब अनुभव करता था, मगर ख़ुशी की तीव्रता निरन्तर बढ़ती जा रही थी। वह

लगातार यह महसूस करता था कि उससे बहुत-सी ऐसी चीज़ों की अपेक्षा की जा रही है, जो वह नहीं जानता है और उससे जो कुछ करने को कहा जाता, वह सब कुछ करता और इससे उसे ख़ुशी नसीब होती। उसका ख़्याल था कि उसकी सगाई दूसरों से बिल्कुल अलग क़िस्म की होगी, कि सगाई-शादी की आम रस्में उसके विशेष सुख-सौभाग्य का रंग बिगाड़ देंगी, लेकिन हुआ यह कि उसने भी वही कुछ किया, जो दूसरे करते थे और इससे उसकी ख़ुशी बढ़ती चली गयी, अधिकाधिक अपने ढंग की ऐसी विशेष ख़ुशी होती गयी, जो दूसरों ने कभी नहीं जानी थी।

"अब हम मिठाई खायेंगी," mademoiselle Linon ने कहा और लेविन मिठाई ख़रीदने चल दिया।

"बहुत ख़ुशी हुई है मुझे," स्वियाज्स्की ने कहा। "मैं आपको फ़ोमीन के यहां से गुलदस्ते ख़रीदने की सलाह देता हूं।"

"ऐसा करने की ज़रूरत है?" और वह फ़ोमीन की दुकान पर चला गया।

बड़े भाई ने उससे कहा कि उसे क़र्ज़ ले लेना चाहिये, क्योंकि बहुत ख़र्च होगा, उपहार ख़रीदने होंगे।

"उपहार चाहिये?" और वह फ़ूल्डे के यहां चल दिया।

मिठाईवाले, फ़ोमीन और फ़ूल्डे के यहां उसने देखा कि उसकी राह देखी जा रही थी, कि उसके आने से उन्हें ख़ुशी हुई और उन सभी की तरह, जिनके साथ इन दिनों उसका वास्ता पड़ता था, वे भी उसके सुख से आनन्द-विभोर हो रहे हैं। असाधारण बात तो यह थी कि सभी लोग न केवल उसे चाहते थे, बल्कि जो पहले उसके प्रति मैत्री का भाव नहीं रखते थे, उसके प्रति भावनाहीन और उदासीन थे, अब उसपर मुग्ध होते थे, उसकी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करते थे, उसकी भावनाओं के प्रति बड़ी कोमलता और नज़ाक़त दिखाते थे तथा उसकी इस आस्था को मानते थे कि वह संसार का सबसे सौभाग्य-शाली व्यक्ति है, क्योंकि उसकी मंगेतर पूर्णता का चरम बिन्दु है। कीटी भी ऐसा ही अनुभव करती थी। काउंटेस नोर्डस्टोन ने जब यह संकेत करने की जुर्रत की कि वह कुछ बेहतर की कामना कर रही थी, तो कीटी इतने जोश में आ गयी और ऐसे अकाट्य रूप से उसने यह सिद्ध

कर दिया कि दुनिया में लेविन से बढ़कर और कोई नहीं हो सकता कि काउंटेस नोर्डस्टोन को यह स्वीकार करना पड़ा और कीटी की उपस्थिति में अब वह हमेशा प्रशंसापूर्ण मुस्कान के साथ लेविन का स्वागत करती।

लेविन ने कीटी को अपने बारे में बताने का जो वचन दिया था, वह इन दिनों की एक अप्रिय घटना सिद्ध हुआ। उसने बूढ़े प्रिंस से सलाह-मशविरा किया और उनकी अनुमति पाकर कीटी को अपनी डायरी दे दी, जिसमें वह लिखा हुआ था, जो उसे संतप्त कर रहा था। उसने अपनी भावी मंगेतर को ध्यान में रखते हुए ही यह डायरी लिखी थी। उसे दो बातें यातना दे रही थीं – अपनी अपवित्रता और नास्तिकता। नास्तिकता की स्वीकारोक्ति की तरफ़ कीटी ने कोई ध्यान नहीं दिया। कीटी ईश्वर में आस्था रखती थी, धर्म-सत्यों के बारे में उसे कभी संशय नहीं हुआ था, किन्तु लेविन की बाहरी धार्मिक अनास्था से उसे तनिक भी परेशानी नहीं हुई। वह प्यार के बल पर उसकी आत्मा को जानती थी और उसकी आत्मा में वह देखती थी, जो देखना चाहती थी और अगर आत्मा की ऐसी स्थिति नास्तिकता कहलाती है, तो उसे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था। दूसरी बात की स्वीकारोक्ति से कीटी फूट-फूट कर रोयी।

लेविन ने आन्तरिक संघर्ष अनुभव करते हुए उसे अपनी डायरी दी थी। वह जानता था कि कीटी और उसके बीच किसी भी बात का दुराव-छिपाव नहीं होना चाहिये और इसीलिये उसने ऐसा करने का निर्णय किया था, किन्तु उसने अपने को उसकी जगह रखकर यह नहीं सोचा था कि इसका कीटी के दिल पर कैसा प्रभाव पड़ सकता है। उसी शाम को थियेटर जाने से पहले जब वह उनके यहां पहुंचा, कीटी के कमरे में गया और उस दुख के कारण, जो उसने दिया था और जिसकी छाप कभी नहीं मिट सकती थी, उसके दयनीय और प्यारे चेहरे को इतना संतप्त और आंसुओं से तर पाया, केवल तभी वह अपने लज्जाजनक अतीत और कीटी की पवित्रता के बीच की खाई को समझ सका और अपनी इस हरकत से स्तम्भित रह गया।

"उठा लीजिये, उठा लीजिये अपनी इन भयानक नोटबुकों को!" कीटी ने अपने सामने पड़ी कापियों को उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा। "किसलिये आपने मुझे इन्हें दिया!.. नहीं, वैसे अच्छा ही किया,"

लेविन के हताशापूर्ण चेहरे पर तरस खाते हुए उसने अपनी बात सम्भाली। "लेकिन यह भयानक, भयानक है!"

लेविन ने सिर झुका लिया और ख़ामोश रहा। वह कुछ भी नहीं कह सका।

"आप मुझे क्षमा नहीं करेंगी," वह फुसफुसाया।

"मैं क्षमा कर चुकी हूं, लेकिन यह भयानक चीज़ है!"

किन्तु लेविन की ख़ुशी इतनी ज़्यादा थी कि इस स्वीकारोक्ति ने उसे कम नहीं किया, बल्कि केवल एक नया रंग दे दिया। कीटी ने उसे क्षमा कर दिया था, मगर इस क्षण से वह अपने को उसके और अधिक अयोग्य मानने लगा, नैतिक दृष्टि से उसके सामने और अधिक झुक गया तथा जिस सौभाग्य के लायक़ नहीं था, उसका और ऊंचा मूल्यांकन करने लगा।

(१७)

तीसरे पहर के भोजन के समय और उसके बाद हुई बातचीतों के प्रभावों पर अनचाहे ही सोच-विचार करता हुआ कारेनिन अपने एकाकी कमरे को लौट रहा था। क्षमा के बारे में डौली के शब्दों से उसे झल्लाहट ही महसूस हुई थी। ईसाई धर्म के नियम अपने मामले में लागू होते थे या नहीं होते थे, यह प्रश्न बहुत जटिल था, जिसकी हल्के-फुल्के ढंग से चर्चा नहीं की जा सकती थी और कारेनिन ने बहुत पहले से ही इसका नकारात्मक उत्तर दे दिया था। वहां जो कुछ कहा गया था, उस सब में से बुद्धू और दयालु तूरोवत्सिन के ये शब्द उसे सबसे ज़्यादा अच्छी तरह से याद रह गये थे: शाबाश है उसे, द्वन्द्व-युद्ध के लिये ललकारा और दूसरी दुनिया में पहुंचा दिया। सम्भवतः सभी को ये शब्द अच्छे लगे थे, यद्यपि उन्होंने शिष्टतावश ऐसा कहा नहीं था।

"कुल मिलाकर यह बात ख़त्म हो चुकी है, इसके बारे में कुछ सोचने की ज़रूरत नहीं," कारेनिन ने अपने आपसे कहा। निकट भविष्य की अपनी यात्रा और जांच-कार्य के बारे में सोचता हुआ वह होटल के कमरे में दाख़िल हुआ और पहुंचाने के लिये पीछे-पीछे आनेवाले

दरबान से पूछा कि उसका नौकर कहां है। दरबान ने जवाब दिया कि नौकर अभी-अभी बाहर गया है। कारेनिन ने आदेश दिया कि उसके लिये चाय भेज दी जाये, मेज़ पर बैठ गया और रेलवे की समय-सारिणी लेकर अपना यात्रा-मार्ग तय करने लगा।

"दो तार आये हैं," नौकर ने लौटने पर कमरे में दाख़िल होते हुए कहा। "हुज़ूर, माफ़ी चाहता हूं, मैं अभी-अभी बाहर गया था।"

कारेनिन ने तार लेकर उन्हें खोला। पहले तार में स्त्रेमोव के उसी पद पर, जो कारेनिन ख़ुद पाना चाहता था, नियुक्त किये जाने का समाचार था। कारेनिन ने तार फेंक दिया, उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी और वह उठकर कमरे में इधर-उधर टहलने लगा। "Quos vult perdere dementat",* उसने कहा। Quos से उसका अभिप्राय उन लोगों से था, जिन्होंने इस नियुक्ति में योग दिया था। उसे इस बात का बुरा नहीं लग रहा था कि उसको यह जगह नहीं मिली थी, कि उसकी स्पष्ट अवहेलना कर दी गयी थी, लेकिन उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था, उसे हैरानी हो रही थी कि कैसे उन लोगों का इस चीज़ की ओर ध्यान नहीं गया कि यह बातूनी और लफ़्फ़ाज़ स्त्रेमोव बाक़ी सभी के मुक़ाबले में इस जगह के अयोग्य था। वे लोग कैसे यह नहीं देख पाये थे कि स्त्रेमोव की नियुक्ति करके उन्होंने अपना बेड़ा ग़र्क़ कर लिया था, अपनी prestige** खो दी थी!

"इसमें भी कुछ ऐसा ही लिखा होगा," उसने दूसरा तार खोलते हुए खीझकर ख़ुद से कहा। तार पत्नी का था। नीली पेंसिल से लिखे गये "आन्ना" शब्द पर सबसे पहले उसकी नज़र गयी। "मर रही हूं, आने का अनुरोध, मिन्नत करती हूं। क्षमादान पाकर अधिक चैन से मर सकूंगी," उसने पढ़ा। कारेनिन ने तिरस्कारपूर्वक मुस्कराकर तार फेंक दिया। यह दग़ा और मक्कारी है, पहले क्षण में उसे इसमें शक की ज़रा भी गुंजाइश नहीं प्रतीत हुई।

"वह किसी भी तरह का धोखा-फ़रेब कर सकती है। वह बच्चे

---

* विनाश काले विपरीत बुद्धि अथवा गीदड़ की मौत आने पर वह शहर को भागता है। (लैटिन)

** प्रतिष्ठा। (फ़्रांसीसी)

को जन्म देनेवाली है। हो सकता है कि यह प्रसूति-पीड़ा हो। किन्तु उनका उद्देश्य क्या हो सकता है? बच्चे को क़ानूनी मान्यता दिलवाना, मुझे इस मामले में उलझाकर तलाक़ में बाधा डालना," वह सोच रहा था। "लेकिन इसमें क्या लिखा है – मर रही हूं..." उसने तार को फिर से पढ़ा और उसमें जो कुछ कहा गया था, उसके प्रत्यक्ष अर्थ से वह भौचक्का-सा रह गया। "और अगर यह सच हो, तो?" उसने अपने आपसे कहा। "अगर यह सच हो कि पीड़ा और मृत्यु की निकटता के क्षण में वह सच्चे मन से पछता रही है और मैं इसे धोखा मानकर जाने से इन्कार कर दूं? यह न केवल संगदिली होगी और सभी मेरी भर्त्सना करेंगे, बल्कि मेरा ऐसा करना मूर्खता भी होगा।"

"प्योतर, बग्घी रोको। मैं पीटर्सबर्ग जा रहा हूं," उसने नौकर से कहा।

कारेनिन ने पीटर्सबर्ग जाने और पत्नी से मिलने का निर्णय किया। अगर उसकी बीमारी धोखा निकली, तो वह कुछ कहे बिना वहां से चल देगा। अगर वह सचमुच बीमार है, मरनेवाली है और मरने से पहले उससे मिलना चाहती है, तो ज़िन्दा होने पर उसे माफ़ कर देगा और यदि देर से पहुंचा, तो उसकी अन्त्येष्टि कर देगा।

रास्ते भर उसने इस बारे में और नहीं सोचा कि उसे क्या करना चाहिये।

रेलगाड़ी के डिब्बे में बितायी गयी रात के कारण थकान और कुछ गन्दगी-सी महसूस करते हुए पीटर्सबर्ग में सुबह की धुंध में अपने सामने देखते और उसे किस चीज़ का सामना करना होगा, यह सोचे बिना कारेनिन बग्घी में बैठा हुआ सुनसान नेव्स्की सड़क पर जा रहा था। वह इसलिये इस बारे में नहीं सोच सकता था कि जो कुछ होनेवाला है, उसकी कल्पना करने पर इस बात की सम्भावना की ओर से आंख नहीं मूंद सकता था कि आन्ना की मौत से उसकी स्थिति की सारी उलझनें सुलझ जायेंगी। नानबाई, बन्द दुकानें, रात की बग्घियों के कोचवान और पटरियों को बुहारते हुए ख़ाकरोब उसकी आंखों के सामने झलक रहे थे और उसे किस चीज़ का सामना करना होगा तथा जो चाहने का साहस नहीं कर सकता, फिर भी चाहता है, उसके बारे में विचार को अपने अन्तर में दबाने की कोशिश करते हुए इन सब चीज़ों

को देख रहा था। वह घर के सामने पहुंचा। दरवाज़े के क़रीब किराये की एक बग्घी और एक निजी बग्घी खड़ी थी, जिसमें कोचवान सो रहा था। ड्योढ़ी में दाख़िल होते हुए कारेनिन ने मानो अपने दिमाग़ के किसी दूर के कोने से निर्णय प्राप्त किया और उसी पर अमल करने का इरादा बनाया। यह निर्णय था: "अगर धोखा निकले, तो तिरस्कार-पूर्ण शान्ति के साथ वहां से चले जाना। अगर सच हो, तो व्यावहारिक शिष्टता दिखाई जाये।"

कारेनिन के घण्टी बजाने के पहले ही दरबान ने दरवाज़ा खोल दिया। टाई के बिना, पुराना फ़ाककोट और स्लीपर पहने हुए दरबान पेत्रोव, वैसे कपितोनिच, अजीब-सा लग रहा था।

"मालकिन कैसी हैं?"

"कल सही-सलामत बच्चा हो गया।"

कारेनिन रुका और उसके चेहरे का रंग उड़ गया। वह अब साफ़ तौर पर यह समझ गया कि कैसे जी-जान से वह उसकी मौत चाहता है।

"और तबीयत कैसी है?"

सुबह का चोगा पहने हुए कोरनेई सीढ़ियों से नीचे भागा आया।

"बड़ी ख़राब है तबीयत उनकी," उसने जवाब दिया। "कल कई डाक्टर आये थे और अब भी डाक्टर यहां बैठा है।"

"चीज़ें भीतर ले जाओ," कारेनिन ने कहा और इस समाचार से कुछ राहत महसूस करते हुए कि अभी उसके मरने की कुछ सम्भावना है, अग्रकक्ष में गया।

खूंटी पर फ़ौजी ओवरकोट लटका हुआ था। कारेनिन ने यह देखकर पूछा:

"कौन है यहां?"

"डाक्टर, दाई और काउंट व्रोन्स्की।"

कारेनिन भीतरवाले कमरे में गया। मेहमानख़ाने में कोई नहीं था। उसके पैरों की आहट पाकर आन्ना के कमरे से बैंगनी फ़ीतोंवाली टोपी पहने हुए दाई बाहर निकली।

वह कारेनिन के क़रीब आई और मृत्यु की निकटता अनुभव करते हुए कारेनिन का हाथ थामकर उसे सोने के कमरे में ले गयी।

"शुक्र है भगवान का कि आप आ गये! सिर्फ़ आपकी, आपकी ही चर्चा कर रही हैं," दाई ने कहा।

"जल्दी से बर्फ़ दीजिये!" डाक्टर की आदेशपूर्ण आवाज़ सुनाई दी।

कारेनिन आन्ना के कमरे में गया। आन्ना की मेज़ के क़रीब एक नीची-सी कुर्सी पर व्रोन्स्की टेढ़ा बैठा था और चेहरे को हाथों से छिपाये हुए रो रहा था। डाक्टर की आवाज़ सुनाई पड़ने पर वह उछलकर खड़ा हुआ, उसने चेहरे से हाथ हटाये और कारेनिन को देखा। आन्ना के पति को देखकर वह ऐसे चकराया कि सिर को कंधों के बीच दुबकाकर, मानो कहीं ग़ायब हो जाना चाहता हो, फिर से बैठ गया। लेकिन उसने कोशिश करके अपने को सम्भाला और बोला:

"वह मर रही है। डाक्टर का कहना है कि उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं। मैं पूरी तरह से आपकी दया पर निर्भर हूं, लेकिन मुझे यहां रहने दीजिये... वैसे, मैं वही करूंगा, जो आप चाहेंगे, मैं..."

व्रोन्स्की के आंसू देखकर कारेनिन को वही मानसिक परेशानी अनुभव होने लगी, जो दूसरों की व्यथा-पीड़ा देखकर उसे होती थी। उसने मुंह फेर लिया और व्रोन्स्की की पूरी बात सुने बिना तेज़ी से दरवाज़े की ओर बढ़ गया। सोने के कमरे से आन्ना की आवाज़ सुनाई दी। उसके स्वर में प्रफुल्लता और ज़िन्दादिली थी तथा उसकी आवाज़ का उतार-चढ़ाव बिल्कुल साफ़ था। कारेनिन सोने के कमरे में आन्ना के पलंग के पास गया। वह उसकी ओर मुंह करके लेटी हुई थी। उसके गालों पर लाली थी, आंखें चमक रही थीं और ब्लाउज़ के कफ़ों से बाहर निकले हुए छोटे-छोटे गोरे हाथ कम्बल के छोर से खिलवाड़ कर रहे थे। ऐसा प्रतीत हुआ कि वह न केवल स्वस्थ और ताज़ादम, बल्कि बहुत ही अच्छे मूड में है। वह जल्दी-जल्दी और गूंजती आवाज़ तथा असाधारण रूप से सही और स्वर के भावनापूर्ण उतार-चढ़ाव के अन्दाज़ में बोल रही थी।

"क्योंकि अलेक्सेई – मैं अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच की बात कर रही हूं (कैसी अजीब और भयानक बात है न कि दोनों ही अलेक्सेई हैं?) – अलेक्सेई मुझे इन्कार नहीं करता। मैं भूल जाती और वह मुझे माफ़ कर देता... मगर वह आता क्यों नहीं? वह दयालु है। वह ख़ुद नहीं जानता कि कितना दयालु है। ओह, मेरे भगवान, कैसी

बेचैनी महसूस हो रही है। जल्दी से मुझे पानी दीजिये। ओह, यह मेरी उस बच्ची के लिये हानिकारक होगा! अच्छी बात है, उसे धाय को दे दो! हां, मैं सहमत हूं, यह तो ज़्यादा अच्छा रहेगा। वह आयेगा, तो उसे इसे देखकर दुख होगा। दे दो इसे!"

"आन्ना अर्कादियेव्ना, वे आ गये हैं। यह रहे अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच," दाई ने कारेनिन की ओर उसका ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करते हुए कहा।

"ओह, कैसी बकवास है यह!" पति को न देख पाते हुए आन्ना कहती गयी। "मेरे पास लाओ, मेरी उस बिटिया को! वह अभी तक नहीं आया। आप उसे नहीं जानते, इसीलिये ऐसा कहते हैं कि वह माफ़ नहीं करेगा। कोई भी उसे नहीं जानता। सिर्फ़ मैं ही जानती हूं और मेरे लिये भी यह बड़े दुख की बात है। उसकी आंखों को जानना चाहिये, सेर्योझा की भी वैसी ही आंखें हैं और इसीलिये मैं उन्हें बर्दाश्त नहीं कर पाती। सेर्योझा को खाना खिलाया? मैं जानती हूं कि सभी ऐसा करना भूल जायेंगे। वह न भूलता। सेर्योझा को कोनेवाले कमरे में ले जाना और Mariette को उसके साथ सोने के लिये कहना चाहिये।"

आन्ना अचानक सिहरी-सिकुड़ी, चुप हो गयी और ऐसे डरते हुए मानो चोट पड़ने की प्रतीक्षा कर रही हो, मानो अपनी रक्षा करना चाहती हो, उसने चेहरे की ओर हाथ उठा लिये। उसने पति को देख लिया था।

"नहीं, नहीं," वह कहने लगी, "मुझे इसका डर नहीं है, मैं मौत से डरती हूं। अलेक्सेई, इधर, मेरे पास आओ। मैं इसलिये जल्दी कर रही हूं कि मेरे पास वक़्त नहीं है, मेरी थोड़ी-सी ही ज़िन्दगी बाक़ी रह गयी है, अभी ज़ोर का बुख़ार चढ़ने लगेगा और तब मैं कुछ नहीं समझ पाऊंगी। इस वक्त मैं होश में हूं, सब कुछ देख रही हूं।"

कारेनिन के झुर्रियों पड़े चेहरे पर वेदना का भाव झलक उठा। उसने आन्ना का हाथ थाम लिया, कुछ कहना चाहा, लेकिन किसी तरह भी मुंह से शब्द नहीं निकाल पाया। उसका अधर कांप रहा था, लेकिन अभी भी वह अपनी उत्तेजना के विरुद्ध संघर्ष कर रहा था और केवल जब-तब उसकी ओर देख लेता था। हर बार ही जब वह उसकी ओर देखता, उसकी आंखों की तरफ़ उसका ध्यान जाता, जो उसकी

ओर ऐसे स्नेह और ऐसी मुग्धता से देख रही थीं, जैसी कि वह उसकी आंखों में कभी नहीं देख पाया था।

"ज़रा रुको, तुम नहीं जानते... रुकिये, रुकिये..." वह मानो अपने विचारों को सुव्यवस्थित करते हुए ख़ामोश हो गयी। "हां," उसने कहना शुरू किया। "हां, हां, हां। तो मैं यह कहना चाहती थी। मुझ पर हैरान नहीं होओ। मैं वही हूं... लेकिन मेरे भीतर एक दूसरी है, मैं उससे डरती हूं – वह उस दूसरे को प्यार करने लगी, मैंने तुमसे नफ़रत करने की कोशिश की, लेकिन पहलेवाली उस अपने को भूल नहीं सकी। मैं वह नहीं हूं। अब मैं अपने असली रूप में हूं, पूरी तरह से। मैं अब मर रही हूं, मैं जानती हूं कि मर जाऊंगी, उससे पूछ लो। मैं इस वक़्त भी महसूस कर रही हूं कि मेरे हाथ-पांव, मेरी उंगलियों पर मन-मन बोझ है। उंगलियां कैसी हैं – बहुत ही बड़ी, बड़ी! लेकिन यह सब कुछ जल्द ही ख़त्म हो जायेगा... मुझे सिर्फ़ एक ही बात की ज़रूरत है – तुम मुझे माफ़ कर दो, पूरी तरह माफ़ कर दो! मैं बहुत बुरी हूं, लेकिन मेरी आया बताया करती थी कि वह पावन शहीद – क्या नाम है उसका? – वह मुझ से भी बुरी थी। मैं भी रोम चली जाऊंगी, वहां वीराना है और तब मैं किसी को परेशान नहीं करूंगी। सिर्फ़ सेर्योझा और बच्ची को साथ ले लूंगी... नहीं, तुम माफ़ नहीं कर सकते! मैं जानती हूं कि ऐसी बात के लिये माफ़ नहीं किया जा सकता! नहीं, नहीं, चले जाओ, तुम ज़रूरत से ज़्यादा अच्छे हो!" आन्ना अपने एक गर्म हाथ से उसका हाथ थामे थी और दूसरे से उसे परे धकेल रही थी।

कारेनिन की मानसिक परेशानी बढ़ती गयी और ऐसी अवस्था तक पहुंच गयी कि उसने उसके विरुद्ध संघर्ष करना बन्द कर दिया। उसने अचानक यह अनुभव किया कि जिस चीज़ को वह अपनी मानसिक परेशानी मानता था, वास्तव में इसके प्रतिकूल उसकी आत्मा के परमानन्द की ऐसी स्थिति थी, जो सहसा उसे ऐसा सुख प्रदान कर रही थी, जिसकी उसे कभी अनुभूति नहीं हुई थी। उसके दिमाग़ में यह विचार नहीं आया कि ईसाई धर्म का वह नियम, जिसका वह जीवन भर अनुकरण करने का इच्छुक रहा था, इस बात की मांग करता था कि वह अपने शत्रुओं को क्षमा और उनसे प्यार करे। किन्तु दुश्मनों के प्रति

क्षमा और प्यार की भावना से उसकी आत्मा सराबोर हो गयी। वह घुटने टेके हुए था और उसकी कोहनी पर, जो ब्लाउज़ के नीचे से उसे आग की तरह जला रही थी, सिर रखकर बच्चे की तरह सिसक रहा था। आन्ना ने उसकी चांद के गिर्द बांह डाल दी, उसे अपनी ओर खींच लिया और चुनौती की गरिमा से नज़रें ऊपर उठाईं।

"वह आ गया, मैं जानती थी! अब सबको विदा, सबको! वे फिर से आ गये, वे जाते क्यों नहीं?.. मेरे ऊपर से उतार लीजिये ये फ़र के कोट!"

डाक्टर ने आन्ना के हाथ छुड़ाये, सावधानी से उसे तकिये पर लिटा दिया। और कंधों को ढक दिया। आन्ना किसी प्रकार के विरोध के बिना चित लेट गयी और चमकती आंखों से अपने सामने देखने लगी।

"एक बात याद रखना कि मुझे सिर्फ़ माफ़ी चाहिये थी और इसके अलावा कुछ नहीं चाहती... वह क्यों नहीं आता?" दरवाज़े में से व्रोन्स्की की ओर देखते हुए वह बोली। "इधर आओ, इधर आओ! इससे हाथ मिलाओ।"

व्रोन्स्की उसके पलंग के क़रीब आया और उसे देखकर उसने फिर हाथों से मुंह ढक लिया।

"मुंह पर से हाथ हटा लो, इसकी तरफ़ देखो। वह देवता है," उसने कहा। "हां, हां, हटाओ हाथ!" उसने झल्लाहट से कहा। "अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच, इसके चेहरे पर से हाथ हटाओ! मैं इसे देखना चाहती हूं।"

कारेनिन ने व्रोन्स्की के हाथ पकड़कर उन्हें उसके चेहरे से हटा दिया, जो उसके अन्तर की व्यथा और लज्जा के कारण भयानक-सा लग रहा था।

"इससे हाथ मिलाओ। इसे क्षमा कर दो!"

कारेनिन ने आंखों से बह रहे आंसुओं को रोके बिना व्रोन्स्की की ओर हाथ बढ़ा दिया।

"शुक्र है खुदा का, शुक्र है," वह बोली, "अब सब कुछ तैयार है। सिर्फ़ टांगों को थोड़ा और सीधा कर दो। ऐसे, अब बहुत अच्छा है। कितने बुरे ढंग से ये फूल बनाये गये हैं, तनिक भी बनफ़्शा के फूलों जैसे नहीं लगते," उसने दीवारी काग़ज़ की ओर संकेत करते हुए कहा।

"हे भगवान! हे भगवान! कब ख़त्म होगा यह? मुझे मोर्फ़िया दीजिये। डाक्टर, मुझे मोर्फ़िया दीजिये। हे भगवान, हे मेरे भगवान!"

और वह पलंग पर छटपटाने लगी।

डाक्टर और अन्य सहयोगी डाक्टरों का कहना था कि यह प्रसूति-ज्वर है, जिसमें निन्यानवे प्रतिशत मृत्यु की ही सम्भावना होती है। दिन भर ज़ोर का बुख़ार, सरसाम और बेहोशी की हालत रही। आधी रात के वक़्त रोगिनी पूरी तरह संज्ञाहीन थी और उसकी नब्ज़ भी लगभग ग़ायब थी।

किसी क्षण भी मृत्यु होने की सम्भावना थी।

व्रोन्स्की अपने घर चला गया, लेकिन सुबह को स्थिति जानने के लिये लौट आया और कारेनिन ने ड्योढ़ी में उससे मुलाक़ात करते हुए कहा:

"रुक जाइये, हो सकता है कि वह आपसे मिलने की इच्छा ज़ाहिर करे," और ख़ुद उसे बीवी के कमरे में ले गया।

सुबह को फिर से उत्तेजना, बेचैनी, विचारों और शब्दों की तीव्रता आरम्भ हुई तथा फिर बेहोशी के साथ अन्त हुआ। तीसरे दिन भी ऐसा ही हुआ तथा डाक्टरों ने कहा कि मरीज़ा के बचने की उम्मीद की जा सकती है। इस दिन कारेनिन उस कमरे में गया, जहां व्रोन्स्की बैठा था और दरवाज़ा बन्द करके उसके सामने बैठ गया।

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच," व्रोन्स्की ने यह अनुभव करते हुए कि स्पष्टीकरण का समय निकट आ गया है, कहा, "मैं न तो कुछ कह सकता हूं और न कुछ समझ सकता हूं। मुझ पर तरस खाइये। आपके दिल पर चाहे कितनी ही भारी क्यों न गुज़र रही हो, किन्तु विश्वास कीजिये, मेरी हालत और भी अधिक बुरी है।"

उसने उठना चाहा। मगर कारेनिन ने उसका हाथ थाम लिया और कहा:

"मैं अनुरोध करता हूं कि आप मेरी पूरी बात सुन लें। यह बहुत ज़रूरी है। मेरे लिये आपके सामने उन भावनाओं को स्पष्ट करना आवश्यक है, जिनसे मैं निर्देशित हुआ हूं और आगे भी हूंगा, ताकि मेरे बारे में आपको कोई ग़लतफ़हमी न हो। आप जानते हैं कि मैंने

तलाक़ देने का फ़ैसला कर लिया था और इस मामले को शुरू भी कर दिया है। आपसे यह नहीं छिपाऊंगा कि इस मामले को शुरू करते समय मैं दुविधा में था और मुझे यातना का शिकार होना पड़ा। आपके सामने यह स्वीकार करता हूं कि आपसे और उससे बदला लेने की भावना मुझे परेशान कर रही थी। जब मुझे तार मिला तो मैं इन्हीं भावनाओं को लिये हुए यहां आया। इतना ही नहीं, मैंने उसकी मौत की भी कामना की। किन्तु ..." वह यह सोचते हुए कि उसे अपने दिल का भाव बताये या न बताये, कुछ देर ख़ामोश रहा। "किन्तु मैंने उसे देखा और क्षमा कर दिया। क्षमा करने के सुख ने मुझे अपने कर्त्तव्य के बारे में सचेत किया। मैंने उसे बिल्कुल माफ़ कर दिया। मैं तमाचा खाने के लिये दूसरा गाल सामने करना चाहता हूं, मैं कोट उतारे जाने पर क़मीज़ भी दे देना चाहता हूं* और भगवान से केवल यही प्रार्थना करता हूं कि वह मुझे क्षमा करने के सुख से वंचित न करें!" कारेनिन की आंखों में आंसू आ गये थे और व्रोन्स्की उसकी दृष्टि की निर्मलता तथा चैन से चकित रह गया। "यह है मेरी स्थिति। आप मुझ पर कीचड़ उछाल सकते हैं, ऊंचे समाज में उपहास पात्र बना सकते हैं, किन्तु मैं उसे तिलांजली नहीं दूंगा और आपको भी कभी भर्त्सना का एक शब्द नहीं कहूंगा," वह कहता गया। "मेरे लिये मेरा कर्त्तव्य बिल्कुल स्पष्ट है – मुझे उसके साथ होना चाहिये और मैं ऐसा ही करूंगा। अगर वह आपसे मिलने की इच्छा प्रकट करेगी, तो मैं आपको सूचना भिजवा दूंगा, लेकिन मेरे ख़्याल में अब आपके लिये यहां से चले जाना ही बेहतर होगा।"

कारेनिन उठकर खड़ा हो गया और सिसकियों के कारण उसका गला रुंध गया। व्रोन्स्की भी उठकर खड़ा हुआ तथा सीधा हुए बिना झुके-झुके ही माथे पर बल डालकर उसने कारेनिन की तरफ़ देखा। कारेनिन की भावनायें उसकी समझ में नहीं आ रही थीं। मगर वह महसूस कर रहा था कि यह कोई ऊंची भावना थी और उसके दृष्टि-क्षेत्र की परिधि से परे थी।

---

* बाइबल से उद्धृत।

(१८)

अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच के साथ अपनी बातचीत के बाद व्रोन्स्की कारेनिन परिवार के घर के बाहर आकर खड़ा हो गया। वह बड़ी मुश्किल से यह समझ पा रहा था कि कहां है और उसे पैदल या सवारी से कहां जाना है। वह अपने को लज्जित, अपमानित, दोषी और अपने अपमान के धब्बे को धो पाने की सम्भावना से वंचित अनुभव कर रहा था। वह महसूस कर रहा था कि जीवन की उस लीक से दूर हट गया है, जिस पर अभी तक बड़े गर्व और आसानी से चलता रहा था। अब तक इतनी दृढ़ प्रतीत होनेवाली सभी बातें, उसके जीवन की सभी आदतें और नियम अचानक झूठे और अव्यावहारिक सिद्ध हुए थे। पत्नी के छल का शिकार होनेवाला पति, जो अभी तक उसे अपने सौभाग्य के मार्ग में संयोगवश और कुछ हद तक हास्यास्पद बाधा प्रतीत होता रहा था, सहसा स्वयं पत्नी द्वारा बुलाया गया था और दिल दहला देनेवाली ऊंचाई पर बिठा दिया गया था। ऐसी ऊंचाई पर यह पति क्रूर, ढोंगी और हास्यास्पद न होकर उदार, सीधा-सरल और गरिमापूर्ण सिद्ध हुआ था। व्रोन्स्की यह अनुभव किये बिना नहीं रह सकता था। अचानक उनकी भूमिकायें बदल गयी थीं। व्रोन्स्की पति की ऊंचाई और अपना तिरस्कार, पति का औचित्य और अपना अनौचित्य अनुभव कर रहा था। वह महसूस कर रहा था कि पति ने दुख में भी उदारता का परिचय दिया था और वह अपने छल-कपट में तुच्छ और धटिया था। किन्तु उस व्यक्ति के सम्मुख, जिसे वह अनुचित रूप से तुच्छ समझता रहा था, अपनी हीनता की चेतना उसके दुख का एक लघु अंश ही था। वह अपने को अब इसलिये अवर्णनीय रूप से दुर्भाग्यशाली अनुभव कर रहा था कि आन्ना के प्रति उसकी प्रेम की ज्वार, जो पिछले कुछ समय से उसे ठण्डी पड़ती प्रतीत हुई थी, अब यह जानने पर कि वह सदा के लिये उसे खो बैठा है, इतनी तीव्र हो गयी, जितनी कभी नहीं रही थी। बीमारी के दौरान उसने आन्ना को पूरी तरह पहचान लिया था, उसकी आत्मा की थाह पा ली थी और उसे लगता था कि अब तक उसने उसे कभी प्यार ही नहीं किया था। अब, जब उसने आन्ना को पूरी तरह पहचान लिया था, उसे

ऐसे प्यार करने लगा था, जैसे करना चाहिये था, तो उसके सामने अपमानित हो गया था, उसे हमेशा के लिये खो बैठा था और आन्ना के दिल में उसने लज्जाजनक स्मृतियां ही बाक़ी छोड़ दी थीं। उसके लिये वह हास्यास्पद और लज्जाजनक स्थिति सबसे भयानक थी, जब कारेनिन ने शर्म से लाल हुए उसके चेहरे पर से उसके हाथ हटाये थे। वह कारेनिन परिवार के घर के बाहर खोया-सा खड़ा था और नहीं जानता था कि क्या करे।

"किराये की बग्घी ले आऊं, सरकार?" दरबान ने पूछा।

"हां, ले आओ।"

तीन उनींदी रातों के बाद घर लौटने पर व्रोन्स्की कपड़े उतारे बिना ही औंधे मुंह सोफ़े पर लेट गया, उसने हाथ जोड़ लिये और सिर को उनपर टिका लिया। उसका सिर भारी था। बहुत ही अजीब-अजीब तरह के बिम्ब, स्मृतियां और विचार असाधारण तेज़ी तथा स्पष्टता से उसके दिमाग में आने-जाने लगे। उसे दिखाई दिया कि वह रोगिनी के लिये दवाई डाल रहा है और चमचे में से कुछ दवाई नीचे गिरा देता है, इसके बाद उसे दाई के गोरे हाथों की झलक मिली, और कारेनिन अजीब-सी स्थिति में पलंग के सामने फ़र्श पर बैठा नज़र आया।

"सोना चाहिये! भूल जाना चाहिये!" उसने स्वस्थ व्यक्ति के ऐसे चैन भरे विश्वास के साथ कहा कि अगर वह थक गया है और सोना चाहता है, तो उसकी फ़ौरन आंख लग जायेगी। सचमुच उसी क्षण उसके दिमाग़ में सब कुछ गड़बड़ाने लगा और वह विस्मृति की खाई में धसकने लगा। अचेतन जीवन के सागर की लहरें उसके सिर के ऊपर लहराने लगीं। अचानक मानो उसे बिजली का ज़ोरदार झटका लगा हो, वह ऐसे ज़ोर से सिहरा कि उसका सारा शरीर सोफ़े के स्प्रिंगों पर उछल पड़ा और हाथों का सहारा लेते हुए वह अत्यधिक भयभीत होकर उछला तथा घुटनों के बल हो गया। उसकी आंखें ऐसे पूरी खुली हुई थीं मानो उसे नींद आई ही न हो। एक क्षण पहले उसे सिर का जो भारीपन और अंगों का ढीलापन अनुभव हो रहा था वह अचानक ग़ायब हो गया।

"आप मुझ पर जितना भी चाहें, कीचड़ उछाल सकते हैं,"

उसे कारेनिन के शब्द सुनाई दिये और वह तथा दहकते लाल गालों एवं चमकती आंखोंवाली आन्ना उसे अपने सामने दिखाई दी, जो बड़े प्यार और कोमलता से उसे नहीं, बल्कि कारेनिन को देख रही थी। उसने, जैसा कि उसे प्रतीत हुआ, अपनी बुद्धू और हास्यास्पद-सी वह सूरत भी देखी, जब कारेनिन ने उसके चेहरे पर से हाथ हटाये थे। उसने फिर से टांगें सीधी कीं और पहलेवाली मुद्रा में सोफ़े पर लेटकर आंखें मूंद लीं।

"सोना चाहिये! सोना चाहिये!" उसने मन ही मन दोहराया। किन्तु मुंदी हुई आंखों से उसे अधिक स्पष्टतः से आन्ना का चेहरा उस रूप में दिखाई दिया, जैसा घुड़दौड़ के पहले की स्मरणीय शाम को उसने देखा था।

"यह नहीं है और नहीं होगा तथा वह अपने स्मृति-पट से इसे मिटा देना चाहती है। किन्तु मैं इसके बिना ज़िन्दा नहीं रह सकता। कैसे हमारी सुलह हो सकती है, कैसे सुलह हो सकती है?" उसने ऊंचे-ऊंचे कहा और अनजाने ही इन शब्दों को दोहराने लगा। शब्दों की इस पुनरावृत्ति ने नये बिम्बों और स्मृतियों को, जो उसने अनुभव किया कि उसके मस्तिष्क में उमड़े आ रहे हैं, उभरने से रोका। किन्तु यह शब्द-पुनरावृत्ति उसकी कल्पना की उड़ान को कुछ ही देर तक रोक पायी। फिर से असाधारण तेज़ी से सुखद क्षण और उनके साथ ही कुछ पहले का अपमान भी आंखों के सामने उभर आया। "हाथ हटाओ," आन्ना की आवाज़ सुनाई दी। उसने हाथ हटाये और व्रोन्स्की को अपने चेहरे के लज्जापूर्ण तथा बुद्धूपन के भाव की अनुभूति हुई।

व्रोन्स्की सोने की कोशिश करते हुए लेटा रहा, यद्यपि अनुभव कर रहा था कि इसकी तनिक भी आशा नहीं थी। वह किसी विचार के संयोगवश दिमाग़ में आनेवाले शब्दों को फुसफुसाते हुए दोहराता जा रहा था और इस तरह नये बिम्बों को उभरने से रोकना चाह रहा था। उसने कान लगाकर सुना और अजीब तथा पागलों जैसी फुसफुसाहट में इन शब्दों की पुनरावृत्ति सुनी – मूल्यांकन नहीं कर सका, अवसर से लाभ नहीं उठा सका।"

"यह क्या मामला है? क्या मैं पागल होता जा रहा हूं?" उसने अपने आपसे सवाल किया। "शायद ऐसा ही है। आख़िर लोग किसलिये

पागल होते हैं, किस कारण अपने को गोली का निशाना बनाते हैं?" उसने ख़ुद को जवाब दिया और आंखें खोलने पर अपने सिर के पास अपनी भाभी वार्या के हाथ की कशीदाकारी वाला तकिया देखकर हैरान रह गया। उसने तकिये के फुंदने को छुआ और वार्या तथा यह याद करने की कोशिश करने लगा कि आख़िरी बार उसकी उससे कब मुलाक़ात हुई थी। किन्तु किसी दूसरी बात के बारे में सोचना यातनापूर्ण था। "नहीं, सोना चाहिये!" उसने तकिये को अपने क़रीब खिसका लिया और उसके साथ सिर सटा दिया। किन्तु आंखें बन्द रखने के लिये उसे बड़ा यत्न करना पड़ रहा था। वह उछलकर बैठ गया। "मेरे लिये यह समाप्त हो चुका है," उसने अपने आपसे कहा। "क्या किया जाये, यह सोचना चाहिये। जीवन में क्या बाक़ी रह गया है?" उसने आन्ना के प्यार के अलावा अपने जीवन पर तेज़ी से विचार किया।

"महत्वाकांक्षा? सेर्पुख़ोव्स्कोई? ऊंचा समाज? राज दरबार?" किसी भी चीज़ पर उसका मन नहीं टिक पाया। यह सब कुछ पहले मानी रखता था, लेकिन अब यह सब बेमानी हो चुका था। वह सोफ़े से उठा, उसने अपना फ़्राक-कोट उतार दिया, पेटी ढीली कर ली, अधिक आसानी से सांस ले सकने के लिये बालों से ढकी छाती को उघाड़ लिया और कमरे में चक्कर लगाया। "ऐसे पागल होते हैं लोग, और ऐसे अपने को गोली का निशाना बनाते हैं... ताकि शर्म न आये," उसने धीरे से इतना और जोड़ दिया।

व्रोन्स्की दरवाज़े के पास गया और उसे बन्द कर दिया। इसके बाद टकटकी बंधी नज़र और कसकर भिंचे हुए दांतों के साथ मेज़ के पास गया, पिस्तौल उठाई, उसे ग़ौर से देखा, भरी हुई नली को ऊपर किया और सोच में डूब गया। दो मिनट तक सिर झुकाये और चेहरे पर विचारों के अत्यधिक तनाव के भाव के साथ वह पिस्तौल हाथों में थामे निश्चल खड़ा हुआ सोचता रहा। "बेशक," उसने अपने आपसे ऐसे कहा मानो विचारों के तर्कसंगत, लम्बे और स्पष्ट क्रम ने उसे इसी निश्चित परिणाम पर पहुंचाया हो। वास्तव में उसका यह निर्विवाद "बेशक" केवल स्मृतियों और बिम्बों के ऐसे ही क्रम की पुनरावृत्ति का परिणाम था, जिसे उसने पिछले एक घण्टे में दसियों बार दोहराया था। ये

उसी सुख की स्मृतियां थीं, जो सदा के लिये खोया जा चुका था, जीवन में जो कुछ आगे था, उसके बेमानी होने की भावना थी, अपने अपमान की वही चेतना थी और वही क्रम था इन बिम्बों और भावनाओं का।

"बेशक," उसने इसी शब्द को दोहराया, जब तीसरी बार उसके विचार फिर से स्मृतियों और भावनाओं के उसी बंधे-बंधाये क्रम की ओर प्रवृत्त हुए। उसने पिस्तौल को छाती के बायीं ओर सटाया और घोड़े को पूरे हाथ के पंजे में ऐसे कसते हुए, मानो अचानक उसे मुट्ठी में भींच रहा हो, दबा दिया। उसे गोली चलने की आवाज़ नहीं सुनाई दी, किन्तु छाती में लगे ज़ोरदार झटके से उसके पांव डोल गये। उसने मेज़ के किनारे का सहारा लेना चाहा, उसकी पिस्तौल गिर गयी, वह लड़खड़ाया और अपने गिर्द हैरानी से देखते हुए फ़र्श पर बैठ गया। नीचे से मेज़ की वक्राकार टांगों, काग़ज़ों की टोकरी और शेर की खाल को देखते हुए वह अपने कमरे को पहचान नहीं सका। मेहमान-ख़ाने से नौकर के फ़र्श पर चीं-चूर्र करते तेज़ क़दमों की आवाज़ से वह सम्भला। उसने अपने दिमाग़ पर ज़ोर डाला और समझ गया कि फ़र्श पर बैठा है तथा शेर की खाल और हाथ पर ख़ून देखकर उसे यह भी चेतना हो गयी कि उसने अपने को गोली का निशाना बनाया है।

"पागलपन है! निशाना चूक गया," हाथ से पिस्तौल को टटोलते हुए वह बुदबुदाया। पिस्तौल उसके क़रीब ही पड़ी थी, मगर वह कुछ दूरी पर उसे ढूंढ़ रहा था। उसे ढूंढ़ते हुए वह दूसरी तरफ़ बढ़ा और सन्तुलन न बनाये रखने के कारण गिर पड़ा और उसके घाव से ख़ून की धार बहने लगी।

बड़ी-बड़ी क़लमोंवाला ठाठदार नौकर, जो अनेक बार परिचितों से अपने स्नायुओं की कमज़ोरी का रोना रो चुका था, अपने मालिक को फ़र्श पर पड़े देख ऐसे डर गया कि ख़ून को ऐसे ही बहता छोड़कर मदद लाने के लिये भाग गया। एक घण्टे बाद व्रोन्स्की की भाभी वार्या आई और तीन डाक्टरों की मदद से, जिन्हें उसने सभी तरफ़ से बुलवा भेजा था और जो एक ही वक़्त यहां पहुंचे थे, घायल को पलंग पर लिटाया और उसकी देखभाल करने को रुक गयी।

(१९)

कारेनिन द्वारा की गयी यह भूल कि पत्नी के पास जाने की तैयारी करते समय उसने इस सम्भावना पर विचार नहीं किया था कि उसका पश्चाताप हार्दिक हो सकता है और वह उसे क्षमा कर देगा तथा वह जीवित रह जायेगी – उसकी यह भूल मास्को से लौटने के दो महीने बाद अपनी पूरी शक्ति से उसके सामने आयी। लेकिन यह भूल केवल इसलिये नहीं हुई कि उसने ऐसी सम्भावना के बारे में नहीं सोचा था, बल्कि इसलिये भी कि मृत्यु-शय्या पर पड़ी पत्नी के साथ भेंट के इस दिन तक वह अपने दिल को भी नहीं जानता था। दूसरे लोगों की व्यथा-पीड़ा देखकर उसके दिल में सहानुभूति की जो गहरी भावना पैदा होती थी और जिसे वह पहले अनावश्यक दुर्बलता मानता था, बीमार पत्नी के सिरहाने बैठे हुए उसने पहली बार अपने को इस सहानुभूति के अधीन होने दिया। पत्नी के प्रति दयाभाव, और इस बात का पश्चाताप कि उसने उसकी मृत्यु की कामना की थी, और मुख्यतः क्षमा से प्राप्त होनेवाले सुख ने कुछ ऐसा किया कि उसे न केवल अपनी व्यथा से मुक्ति की अनुभूति हुई, बल्कि ऐसा मानसिक चैन भी मिला, जो उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया था। उसने सहसा यह महसूस किया कि वही, जो उसकी यातना का स्रोत था, मानसिक सुख का स्रोत बन गया है, जो कुछ उस समय तक जटिल था, जब तक वह आलोचना, भर्त्सना और घृणा करता था, वही, क्षमा और प्यार करने पर, सरल और स्पष्ट हो गया है।

कारेनिन ने पत्नी को क्षमा कर दिया और उसकी व्यथा-पीड़ा और पश्चाताप के लिये उसे उसपर तरस आता था। उसने व्रोन्स्की को भी माफ़ कर दिया और उसे उसपर भी, विशेपतः आत्महत्या का समाचार पहुंचने के बाद, दया आती थी। उसे अपने बेटे पर भी पहले से ज़्यादा तरस आता था और उसकी तरफ़ बहुत कम ध्यान देने के लिये वह अपने को भला-बुरा कहता था। किन्तु नवजात बच्ची के प्रति वह न केवल दया, बल्कि एक अजीब कोमल-सी भावना अनुभव करता था। शुरू में तो उसने इस नवजात कमज़ोर-सी बच्ची की तरफ़, जो उसकी बेटी नहीं थी और मां की बीमारी के समय जिसकी बड़ी अवहेलना की

गयी थी तथा जो, अगर वह उसकी इतनी चिन्ता न करता, तो शायद मर गयी होती, केवल दयाभाव से ध्यान दिया, और उसे पता भी नहीं चला कि कैसे वह उसको प्यार करने लगा। वह दिन में कई बार बच्चों के कमरे में जाता और देर तक वहां बैठा रहता और इसके फलस्वरूप आया और दूध पिलानेवाली धाय, जो शुरू में उसकी उपस्थिति में घबराती थीं, उसके वहां आने की अभ्यस्त हो गयीं। कभी-कभी वह सोती हुई बच्ची के छोटे-से रोयों वाले और बल पड़े गेरुए-लाल चेहरे को आध घण्टे तक चुपचाप बैठा हुआ ताकता रहता, उसके नाक-भौंह चढ़े माथे और मुट्ठियां बंधे छोटे-छोटे गुदगुदे हाथों को निहारता रहता, जिनसे वह अपनी आंखों और नाक को मसलती रहती थी। ऐसे क्षणों में वह विशेष रूप से अपने को सर्वथा शान्त तथा सन्तुष्ट अनुभव करता और अपनी स्थिति में कुछ भी असाधारण, कुछ भी ऐसा न महसूस करता, जिसे बदलने की ज़रूरत होती।

किन्तु जितना ज़्यादा वक़्त बीता, उतना ही ज़्यादा उसने साफ़ तौर पर यह देख लिया कि उसके लिये वर्त्तमान स्थिति चाहे कितनी ही स्वाभाविक क्यों न थी, उसे वैसा नहीं रहने दिया जायेगा। वह अनुभव करता था कि उसकी आत्मा का निर्देशन करनेवाली प्रबल मानसिक शक्ति के अतिरिक्त एक अन्य, उतनी या उससे भी अधिक हावी हो जाने वाली एक घटिया शक्ति भी थी, जो उसके जीवन का निर्देशन करती थी और यह शक्ति उसे व्याकुलता-मुक्त वह चैन नहीं लेने देगी, जिसके लिये वह लालायित था। वह महसूस करता था कि सभी उसकी ओर प्रश्नसूचक आश्चर्य से देखते हैं, उसे समझने में असमर्थ हैं और उससे किसी बात की आशा कर रहे हैं। पत्नी के साथ अपने सम्बन्धों के कच्चेपन और अस्वाभाविकता को वह विशेष रूप से अनुभव करता था।

मृत्यु की निकटता के कारण आन्ना के मिज़ाज में आनेवाली नर्मी जब ख़त्म हो गयी, तो कारेनिन का इस ओर ध्यान जाने लगा कि आन्ना उससे डरती है, उसकी उपस्थिति उसके लिये बोझिल रहती है और उसे उससे नज़रें मिलाने की हिम्मत नहीं होती। वह मानो कुछ कहना चाहती थी और ऐसा करने का साहस नहीं कर पाती थी और मानो पूर्वानुमान से यह अनुभव करते हुए कि उनके सम्बन्ध ऐसे नहीं बने रह सकते, उससे कुछ अपेक्षा कर रही थी।

फ़रवरी के अन्त में आन्ना की बेटी, जिसका नाम भी आन्ना ही रखा गया था, बीमार हो गयी। कारेनिन सुबह को बच्चों के कमरे में गया और डाक्टर को बुलवाने की हिदायत देकर मन्त्रालय चला गया। अपने काम-काज समाप्त करके वह तीन बजे के बाद घर लौटा। ड्योढ़ी में दाख़िल होने पर उसे गोटे-तिल्लेवाली वर्दी पहने और कंधों पर भालू की खाल का लबादा डाले एक बांका नौकर दिखाई दिया, जो मिंक का रुपहला फ़र-कोट हाथ में उठाये था।

"कौन आया है?" कारेनिन ने पूछा।

"प्रिंसेस येलिज़ावेता फ़्योदोरोव्ना त्वेरस्काया," नौकर ने मुस्करा कर, जैसा कि कारेनिन को प्रतीत हुआ, उत्तर दिया।

कारेनिन ने इस सारे कठिन समय में इस बात की ओर ध्यान दिया था कि ऊंचे समाज में उसके परिचित, विशेषतः नारियां, उसमें और उसकी पत्नी में ख़ास दिलचस्पी लेती थीं। इन सभी परिचितों में उसे मुश्किल से छिपनेवाली किसी बात की कोई ख़ुशी दिखाई देती थी, वही ख़ुशी, जो उसे वकील और अब नौकर की आंखों में दिखाई दी थी। सभी मानो उल्लसित थे, जैसे कि किसी की शादी में हिस्सा ले रहे हों। उससे भेंट होने पर वे कठिनाई से छिपनेवाली ख़ुशी के साथ आन्ना की सेहत के बारे में पूछ-ताछ करते।

प्रिंसेस त्वेरस्काया की उपस्थिति और उससे सम्बन्धित स्मृतियों तथा इस कारण भी कि वह उसे पसन्द नहीं करता था, कारेनिन पत्नी के कमरे में न जाकर सीधा बच्चों के कमरे में चला गया। बच्चों के पहले कमरे में मुंह के बल मेज़ पर लेटा तथा कुर्सी पर टांगें रखे हुए सेर्योझा ख़ुशी से कुछ बड़बड़ाता हुआ चित्रकारी कर रहा था। आन्ना की बीमारी के दौरान फ़्रांसीसी शिक्षिका की जगह ले लेनेवाली अंग्रेज़ शिक्षिका लड़के के पास बैठी हुई कुछ बुन रही थी। वह झटपट उठी, कारेनिन का अभिवादन किया और सेर्योझा को झकझोर कर उठाया।

कारेनिन ने बेटे के बालों को सहलाया, पत्नी के स्वास्थ्य के बारे में शिक्षिका के प्रश्न का उत्तर दिया और यह पूछा कि डाक्टर ने baby के बारे में क्या कहा है।

"हुज़ूर, डाक्टर ने कहा है कि परेशानी की कोई बात नहीं और चिकित्सा-स्नान की सिफ़ारिश की है।"

"लेकिन वह तो अभी भी रो रही है," कारेनिन ने बग़ल के कमरे से बच्ची के रोने की आवाज़ सुनकर कहा।

"हुज़ूर, मेरे ख़्याल में धाय ठीक नहीं है," अंग्रेज़ शिक्षिका ने ज़ोर देकर कहा।

"आप ऐसा क्यों समझती हैं?" कारेनिन ने रुककर पूछा।

"काउंटेस पोल के यहां भी ऐसा ही हुआ था। बच्चे का इलाज किया जाता रहा और फिर पता यह चला कि बच्चा भूखा रहता है – धाय दूध के बिना थी, हुज़ूर।"

कारेनिन सोच में डूब गया और कुछ क्षण तक खड़ा रहकर दूसरे कमरे में दाख़िल हुआ। बच्ची सिर पीछे को किये हुए धाय के हाथों में छटपटा रही थी और न तो धाय की फूली हुई चूची को, जो उसकी ओर बढ़ी हुई थी, मुंह में ले रही थी और न ही धाय और आया की उसे चुप कराने की कोशिश में दोहरी शी-शी के बावजूद चुप ही हो रही थी।

"क्या अभी तक इसकी तबीयत कुछ बेहतर नहीं हुई?" कारेनिन ने पूछा।

"बहुत ही बेचैन हैं," आया ने फुसफुसाकर जवाब दिया।

"मिस एडवर्ड का कहना है कि शायद धाय के दूध नहीं उतरता," कारेनिन ने कहा।

"मैं ख़ुद भी ऐसा ही सोचती हूं, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच।"

"तो आप कहती क्यों नहीं?"

"किससे कहूं? आन्ना अर्कादियेव्ना तो अभी तक स्वस्थ नहीं हैं," आया ने कुछ नाराज़गी से उत्तर दिया।

आया इस घर की पुरानी नौकरानी थी। उसके इन सीधे-सादे शब्दों में कारेनिन को अपनी स्थिति के बारे में संकेत-सा अनुभव हुआ।

बच्ची और भी ज़्यादा ज़ोर से रो रही थी, उसका गला रुंधा जाता था और आवाज़ खरखरी होती जा रही थी। आया झल्लाहट से हाथ झटककर बच्ची के पास गयी, उसे धाय के हाथों से लेकर इधर-उधर आते-जाते हुए झुलाने लगी।

"डाक्टर से धाय की जांच करने के लिये कहना चाहिये," कारेनिन ने कहा।

देखने में बड़ी स्वस्थ और बनी-ठनी धाय इस बात से डरकर कि उसे इन्कार कर देंगे, धीरे-धीरे कुछ बड़बड़ाई और अपनी बड़ी छाती को ढककर चूचियों में दूध की कमी के सन्देह के बारे में तिरस्कारपूर्वक मुस्कराई। इस मुस्कान में भी कारेनिन को अपनी स्थिति के बारे में उपहास की अनुभूति हुई।

"बदक़िस्मत बच्ची!" आया ने बच्ची को चुप कराते और कमरे में इधर-उधर आते-जाते हुए कहा।

कारेनिन कुर्सी पर बैठ गया और व्यथित तथा उदास चेहरे से इधर-उधर आती-जाती आया को देखने लगा।

आख़िर बच्ची के चुप हो जाने पर जब उसे उसके पालने में लिटा दिया गया और आया तकिया ठीक करके वहां से चली गयी, तो कारेनिन उठा और बड़ी मुश्किल से पंजों के बल चलता हुआ बच्ची के क़रीब गया। क्षण भर को वह बुत बना-सा खड़ा रहा और इसी तरह उदास चेहरे से बच्ची को देखता रहा। किन्तु अचानक उसके चेहरे पर मुस्कान आ गयी, जिससे उसके माथे की त्वचा और बाल हिला और वह दबे पांवों कमरे से बाहर चला गया।

भोजन-कक्ष में जाकर उसने घण्टी बजायी और भीतर आनेवाले नौकर को फिर से डाक्टर को बुलवाने का आदेश दिया। उसे अपनी पत्नी पर इस कारण खीझ आ रही थी कि वह इतनी प्यारी बच्ची की चिन्ता नहीं करती थी और झल्लाहट की ऐसी स्थिति में उसने उसके पास नहीं जाना चाहा। वह प्रिंसेस बेत्सी से भी नहीं मिलना चाहता था। किन्तु पत्नी को इस बात की हैरानी हो सकती थी कि वह हर दिन की तरह उससे मिलने क्यों नहीं आया और इसलिये वह मन मारकर सोने के कमरे की तरफ़ चल दिया। नर्म क़ालीन पर क़दम बढ़ाते हुए दरवाज़े के पास पहुंचने पर उसे अनचाहे वह बातचीत सुनाई दी, जिसे वह सुनना नहीं चाहता था।

"अगर वह यहां से जा न रहा होता, तो आपका और उसका इन्कार करना मेरी समझ में आ सकता था। लेकिन आपके पति को इस चीज़ से ऊपर होना चाहिये," बेत्सी कह रही थी।

"मैं पति की वजह से नहीं, बल्कि अपने कारण ऐसा नहीं चाहती। इसकी चर्चा ही नहीं कीजिये," आन्ना उत्तेजित स्वर में कह रही थी।

"मगर आप उस आदमी के साथ विदाई-भेंट से इन्कार नहीं कर सकतीं, जिसने आपके कारण अपने को गोली का निशाना बनाया ..."

"मैं इसी क़ारण उससे मिलना नहीं चाहती।"

चेहरे पर भय और अपराध का भाव लिये हुए कारेनिन रुका तथा किसी की नज़र में आये बिना उसने वापस जाना चाहा। किन्तु यह सोचकर उसने अपना इरादा बदला कि ऐसा करना शोभा नहीं देता, वह लौटा, खांसा और सोने के कमरे की तरफ़ चल दिया। बातचीत बन्द हो गयी और वह कमरे में दाख़िल हुआ।

आन्ना सलेटी रंग का ड्रेसिंग गाउन पहने सोफ़े पर बैठी थी, उसके छोटे-छोटे कटे हुए काले बाल गोल सिर पर घने ब्रुश की तरह खड़े थे। सदा की भांति पति को देखते ही अब भी उसके चेहरे पर से अचानक सजीवता ग़ायब हो गयी, उसने सिर झुका लिया और बेचैनी से बेत्सी की तरफ़ देखा। बेत्सी अत्यधिक नवीन फ़ैशन के कपड़े पहने बनी-ठनी हुई थी, उसकी टोपी उसके सिर के ऊपर ऐसे तैरती-सी लग रही थी, जैसे लैम्प के ऊपर शेड, वह नीलगूं रंग का फ़ाक पहने थी, जिसकी चटकीली टेढ़ी धारियां एक ओर से चोली तथा दूसरी ओर से स्कर्ट पर से गुज़र रही थीं। अपनी ऊंची, सपाट आकृति को सीधा ताने हुए वह आन्ना के क़रीब बैठी थी और वह सिर झुकाकर तथा व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कारेनिन से मिली।

"ओह!" उसने मानो हैरान होते हुए कहा। "मुझे बड़ी ख़ुशी है कि आप घर पर हैं। आप कहीं आते-जाते ही नहीं और मैंने आन्ना के बीमार होने के बाद से आपको नहीं देखा। मैंने आपकी चिन्ताओं के बारे में सभी कुछ सुना है। हां, आप अद्भुत पति हैं!" उसने अर्थपूर्ण और स्नेह-सिक्त अन्दाज़ में कहा मानो पत्नी के प्रति उसके व्यवहार के लिये विशाल हृदयता का पदक भेंट कर रही हो।

कारेनिन ने रुखाई से सिर झुकाया, पत्नी का हाथ चूमा और उससे उसकी तबीयत के बारे में पूछा।

"मुझे लगता है कि बेहतर है," पति की नज़र से नज़र बचाते हुए उसने कहा।

"मगर आपके चेहरे का रंग ऐसा है मानो आपको बुख़ार हो," उसने "बुख़ार" शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा।

"हम दोनों बहुत ज़्यादा बातें करती रही हैं," बेत्सी ने कहा, "मुझे लगता है कि यह मेरी स्वार्थपरता है। इसलिये मैं जा रही हूं।"

वह उठकर खड़ी हो गयी, किन्तु आन्ना ने सहसा लज्जारुण होते हुए जल्दी से उसका हाथ पकड़ लिया।

"नहीं, कृपया थोड़ा रुकिये। मुझे आपसे ... नहीं, आपसे कुछ कहना है ..." उसने कारेनिन को सम्बोधित किया और उसकी गर्दन और माथा शर्म से लाल हो गये। "मैं आपसे कुछ भी छिपा नहीं सकती और न ही ऐसा चाहती हूं," वह बोली।

कारेनिन ने अपनी उंगलियां चटकायीं और सिर झुका लिया।

"बेत्सी कह रही थीं कि काउंट व्रोन्स्की ताशक़न्द जाने के पहले विदा लेने के लिये हमारे यहां आना चाहता है।" वह पति की ओर नहीं देख रही थी और उसके लिये चाहे यह कितना ही कठिन क्यों न हो, सब कुछ कह देना चाहती थी। "मैंने कह दिया है कि मैं उससे नहीं मिल सकती।"

"मेरी प्यारी, आपने कहा था कि यह अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच पर निर्भर होगा," बेत्सी ने उसकी भूल सुधारी।

"हां, लेकिन मैं उससे नहीं मिल सकती और ऐसा करने में कोई तुक ..." वह अचानक रुकी और उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से पति की ओर देखा (वह उसकी ओर नहीं देख रहा था)। "थोड़े में यह कि मैं नहीं चाहती ..."

कारेनिन उसके क़रीब हो गया और उसने उसका हाथ अपने हाथ में लेना चाहा।

शुरू में आन्ना ने पति के नम, बड़ी-बड़ी और फूली-फूली नसोंवाले हाथ से, जो उसका हाथ थामना चाह रहा था, अपना हाथ पीछे हटा लिया। किन्तु सम्भवतः अपना मन मारकर उसका हाथ दबाया।

" मुझ पर भरोसा करने के लिये आपका बहुत आभारी हूं, किन्तु ..." उसने परेशानी और खीझ से यह महसूस करते हुए जवाब दिया कि अपने आप वह जो कुछ आसानी से और स्पष्टतः तय कर सकता था, प्रिंसेस त्वेरस्काया की उपस्थिति में उस पर विचार-विनिमय करने में असमर्थ है। कारण कि वह प्रिंसेस त्वेरस्काया को ऊंचे समाज की नज़रों में उसके जीवन का संचालन करनेवाली उस

कठोर शक्ति का मूर्त्त रूप मानता था, जो उसे अपने को प्यार और क्षमा की भावना को समर्पित करने में बाधा डालती थी। प्रिंसेस त्वेर-स्काया की ओर देखते हुए उसने अपनी बात अधूरी ही छोड़ दी।

"तो विदा, मेरी प्यारी," बेत्सी ने उठते हुए कहा। उसने आन्ना को चूमा और कमरे से बाहर चली गयी। कारेनिन उसे पहुंचाने के लिये उसके साथ हो लिया।

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच! मैं आपको एक सच्चे उदारमना व्यक्ति के रूप में जानती हूं," बेत्सी ने छोटे मेहमानखाने में रुकते हुए और एक बार फिर बहुत तपाक से उसका हाथ दबाते हुए कहा। "मैं बाहरी व्यक्ति हूं, किन्तु मैं आन्ना को इतना अधिक प्यार और आपका इतना ज़्यादा आदर करती हूं कि सलाह देने की हिम्मत कर सकती हूं। आप उसे अपने यहां आने दीजिये। अलेक्सेई व्रोन्स्की प्रतिष्ठा का मूर्त रूप है और ताशक़न्द जा रहा है।"

"सहानुभूति और सलाह के लिये आपका आभारी हूं, प्रिंसेस। किन्तु मेरी पत्नी किसी से मिलना चाहती है या नहीं मिलना चाहती है, यह प्रश्न वह स्वयं ही तय करेगी।"

कारेनिन ने आदत के मुताबिक़ भौंहें चढ़ाकर गरिमा के साथ उक्त शब्द कहे और उसी समय उसके दिमाग़ में यह ख़्याल आया कि शब्द कैसे भी क्यों न हों, उसकी वर्त्तमान स्थिति में गरिमा का कोई प्रश्न नहीं हो सकता था। इन शब्दों के बाद बेत्सी ने जिस दबी-घुटी, द्वेष और व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ उसकी ओर देखा, उसमें उसे ऐसा ही दिखाई दिया।

(२०)

हॉल में पहुंचने पर कारेनिन ने सिर झुकाकर बेत्सी से विदा ली और पत्नी की ओर वापस चल दिया। वह लेटी हुई थी, किन्तु उसके पैरों की आहट पाकर पहले की तरह बैठ गयी और डरी-सहमी-सी उसकी तरफ़ देखने लगी। उसने देखा कि वह रो रही है।

"मुझ पर भरोसा करने के लिये मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूं," बेत्सी के सामने फ़्रांसीसी में कहा गया वाक्य उसने रूसी में दोहराया

और उसके पास बैठ गया। जब वह रूसी में बात करता और उसे "तुम" कहता, तो इस "तुम" से आन्ना अवश्य ही झल्ला उठती। "और तुम्हारे निर्णय के लिये भी बहुत आभारी हूं। मैं भी ऐसा ही समझता हूं कि अगर वह यहां से जा ही रहा है, तो काउंट व्रोन्स्की के लिये यहां आने की कोई ज़रूरत नहीं है। वैसे ..."

"मैं ख़ुद यह कह चुकी हूं, फिर दोहराने की क्या आवश्यकता है?" आन्ना ने अचानक झल्लाहट के साथ, जिस पर वह क़ाबू नहीं पा सकी थी, उसे टोक दिया। "कोई ज़रूरत नहीं है," वह सोच रही थी, "उस औरत के पास विदा लेने के लिये आने की ज़रूरत नहीं है, जिसे वह प्यार करता है, जिसके लिये उसने मरना और अपने को बरबाद करना चाहा तथा जो उसके बिना जी नहीं सकती। नहीं, कोई ज़रूरत नहीं है!" उसने अपने होंठ भींच लिये और चमकती आंखें उसकी फूली-फूली नसोंवाले हाथों पर झुका लीं, जो धीरे-धीरे एक-दूसरे को मल रहे थे।

"इसकी कभी चर्चा नहीं करेंगे," उसने शान्ति से इतना और कह दिया।

"मैंने इस मामले का फ़ैसला पूरी तरह तुम पर ही छोड़ दिया है और मुझे यह देखकर ख़ुशी है ..." कारेनिन ने कहना शुरू किया।

"कि मेरी इच्छा आपकी इच्छा के साथ मेल खाती है," आन्ना ने इस बात से खीझते हुए झटपट उसका वाक्य पूरा कर दिया कि वह इतना धीमे-धीमे बोल रहा है, जबकि वह पहले से ही यह जानती है कि वह क्या कहने जा रहा है।

"हां," तर उसने पुष्टि की, "और प्रिंसेस त्वेरस्काया अत्यधिक जटिल पारिवारिक मामलों में बिल्कुल अनुचित दखल दे रही है। ख़ास तौर पर जबकि उसके बारे में ..."

"उसके बारे में लोग जो कुछ भी कहते हैं, मैं उनमें से किसी भी बात पर विश्वास नहीं करती," आन्ना ने जल्दी से कहा, "मैं जानती हूं कि वह सच्चे दिल से मुझे चाहती है।"

कारेनिन ने गहरी सांस ली और ख़ामोश हो गया। आन्ना उसके प्रति शारीरिक घृणा की उस यातनापूर्ण भावना के साथ देखती हुई, जिसके लिये अपनी भर्त्सना करती थी, मगर जिस पर क़ाबू नहीं पा

सकती थी, अपने ड्रेसिंग गाउन के फुंदने से बेचैनी के साथ खेल रही थी। वह अब केवल यही चाहती थी कि उसे उसकी घृणापूर्ण उपस्थिति से निजात मिले।

"मैंने अभी डाक्टर को बुलवाया है," कारेनिन ने कहा।

"मैं स्वस्थ हूं, मुझे डाक्टर की क्या ज़रूरत है?"

"बच्ची रोती है और सुनने में आया है कि धाय के दूध नहीं उतरता है।"

"किसलिये तुमने मुझे तब उसे अपना दूध नहीं पिलाने दिया, जब मैंने इसके लिये तुम्हारी मिन्नत की थी? ख़ैर, कोई बात नहीं" (अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच समझ गया कि इस "ख़ैर, कोई बात नहीं" से उसका क्या अभिप्राय है), "वह बच्ची है और उसे मौत के मुंह में भी धकेला जा रहा है।" उसने घण्टी बजायी और बच्ची को लाने का आदेश दिया। "मैंने अनुरोध किया था कि मैं दूध पिलाऊं-गी, मुझे इसकी अनुमति नहीं दी गयी और अब इसी के लिये मेरी भर्त्सना की जा रही है।"

"मैं भर्त्सना नहीं कर रहा हूं..."

"नहीं, आप भर्त्सना कर रहे हैं! हे भगवान! मैं मर ही क्यों नहीं गई?" और वह सिसकने लगी। "मुझे माफ़ कर दो, मैं खीझी हुई हूं, ज़्यादती कर रही हूं," उसने सम्भलते हुए कहा। "लेकिन अब तुम जाओ..."

"नहीं, यह ऐसे नहीं चल सकता," कारेनिन ने पत्नी के कमरे से बाहर जाते हुए निर्णायक स्वर में अपने आपसे कहा।

ऊंचे समाज की नज़र में उसकी स्थिति की असाध्यता, पत्नी की उसके प्रति घृणा और कुल मिलाकर वह रहस्यपूर्ण कठोर शक्ति, जो उसकी मनःस्थिति के प्रतिकूल उसके जीवन का निर्देशन और अपनी इच्छा की पूर्ति तथा पत्नी के प्रति उसके रवैये के परिवर्तन की मांग कर रही थी, आज की भांति इतने स्पष्ट और उग्र रूप में कभी सामने नहीं आई थी। वह साफ़ तौर पर यह देख रहा था कि ऊंचा समाज और पत्नी उससे किसी चीज़ की अपेक्षा कर रहे थे, किन्तु किस चीज़ की, वह यह समझने में असमर्थ था। वह अनुभव कर रहा था कि इसी कारण उसकी आत्मा में क्रोध की भावना पैदा होती थी, जो उसके चैन और

सकती थी, अपने ड्रेसिंग गाउन के फुंदने से बेचैनी के साथ खेल रही थी। वह अब केवल यही चाहती थी कि उसे उसकी घृणापूर्ण उपस्थिति से निजात मिले।

"मैंने अभी डाक्टर को बुलवाया है," कारेनिन ने कहा।

"मैं स्वस्थ हूं, मुझे डाक्टर की क्या ज़रूरत है?"

"बच्ची रोती है और सुनने में आया है कि धाय के दूध नहीं उतरता है।"

"किसलिये तुमने मुझे तब उसे अपना दूध नहीं पिलाने दिया, जब मैंने इसके लिये तुम्हारी मिन्नत की थी? ख़ैर, कोई बात नहीं" (अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच समझ गया कि इस "ख़ैर, कोई बात नहीं" से उसका क्या अभिप्राय है), "वह बच्ची है और उसे मौत के मुंह में भी धकेला जा रहा है।" उसने घण्टी बजायी और बच्ची को लाने का आदेश दिया। "मैंने अनुरोध किया था कि मैं दूध पिलाऊं-गी, मुझे इसकी अनुमति नहीं दी गयी और अब इसी के लिये मेरी भर्त्सना की जा रही है।"

"मैं भर्त्सना नहीं कर रहा हूं..."

"नहीं, आप भर्त्सना कर रहे हैं! हे भगवान! मैं मर ही क्यों नहीं गई?" और वह सिसकने लगी। "मुझे माफ़ कर दो, मैं खीझी हुई हूं, ज़्यादती कर रही हूं," उसने सम्भलते हुए कहा। "लेकिन अब तुम जाओ..."

"नहीं, यह ऐसे नहीं चल सकता," कारेनिन ने पत्नी के कमरे से बाहर जाते हुए निर्णायक स्वर में अपने आपसे कहा।

ऊंचे समाज की नज़र में उसकी स्थिति की असाध्यता, पत्नी की उसके प्रति घृणा और कुल मिलाकर वह रहस्यपूर्ण कठोर शक्ति, जो उसकी मनःस्थिति के प्रतिकूल उसके जीवन का निर्देशन और अपनी इच्छा की पूर्ति तथा पत्नी के प्रति उसके रवैये के परिवर्तन की मांग कर रही थी, आज की भांति इतने स्पष्ट और उग्र रूप में कभी सामने नहीं आई थी। वह साफ़ तौर पर यह देख रहा था कि ऊंचा समाज और पत्नी उससे किसी चीज़ की अपेक्षा कर रहे थे, किन्तु किस चीज़ की, वह यह समझने में असमर्थ था। वह अनुभव कर रहा था कि इसी कारण उसकी आत्मा में क्रोध की भावना पैदा होती थी, जो उसके चैन और

उदारता की उपलब्धि को नष्ट करती थी। वह ऐसा मानता था कि आन्ना के लिये व्रोन्स्की से सम्बन्ध तोड़ लेना उचित होगा, किन्तु यदि वे ऐसा करना असम्भव समझते हैं, तो वह केवल इसलिये कि बच्चों को शर्म का सामना न करना पड़े, उसे उनसे वंचित न होना पड़े और अपनी स्थिति में परिवर्तन करने की ज़रूरत न हो, इन सम्बन्धों को फिर से स्वीकार करने को तैयार था। बहुत बुरा होने पर भी वह उस सम्बन्ध-विच्छेद से तो अच्छा ही था, जिसके परिणामस्वरूप आन्ना की असहाय और लज्जाजनक स्थिति हो जायेगी और वह खुद उस सबसे वंचित हो जायेगा, जो उसे प्यारा था। किन्तु वह अपने को विवशता की स्थिति में अनुभव करता था, पहले से ही यह जानता था कि सब कुछ उसके विरुद्ध है और उसे वह नहीं करने दिया जायेगा, जो उसे अब स्वाभाविक और अच्छा प्रतीत होता था तथा वह करने को मजबूर किया जायेगा, जो बुरा है, किन्तु जो उनको उचित लगता है।

(२१)

बेत्सी हॉल से बाहर निकल ही रही थी कि दरवाज़े के क़रीब ओब्लोन्स्की से उसकी मुलाक़ात हुई, जो येलिसेयेव के प्रसिद्ध स्टोर से, जहां ताज़ा ओयेस्टर आये थे, सीधा यहां पहुंचा था।

"अरे! प्रिंसेस! खूब मुलाक़ात हुई यह तो!" वह कह उठा। "मैं आपके यहां होकर आया हूं।"

"एक मिनट की मुलाक़ात, क्योंकि मैं जा रही हूं," बेत्सी ने मुस्कराते और दस्ताना पहनते हुए कहा।

"प्रिंसेस, दस्ताना पहनने की जल्दी न कीजिये, अपना प्यारा-सा हाथ तो चूमने दीजिये। पुराने रिवाजों के लौट आने के मामले में मैं और किसी चीज़ के लिये इतना आभारी नहीं हूं, जितना कि हाथ चूमने के बारे में।" उसने बेत्सी का हाथ चूमा। "कब मुलाक़ात होगी?"

"आप इसके लायक़ नहीं हैं," बेत्सी ने जवाब दिया।

"नहीं, मैं इसके बहुत लायक़ हूं, क्योंकि सबसे ज़्यादा संजीदा आदमी हो गया हूं। मैं सिर्फ़ अपने ही नहीं, बल्कि पराये पारिवा-

रिक मामले भी सुलझाता हूं," उसने चेहरे पर अर्थपूर्ण भाव लाते हुए कहा।

"ओह, मैं बहुत खुश हूं!" बेत्सी ने फ़ौरन यह भांपते हुए कि वह आन्ना की चर्चा कर रहा है, उत्तर दिया। वे हॉल में लौटकर एक कोने में खड़े हो गये। "वह उसको मारे डाल रहा है," बेत्सी ने अर्थपूर्ण फुसफुसाहट के साथ कहा। "ऐसे जीना असम्भव है, असम्भव है..."

"मैं बहुत खुश हूं कि आप ऐसा समझती हैं," ओब्लोन्स्की ने चेहरे पर गम्भीर तथा व्यथा-सहानुभूतिपूर्ण भाव के साथ सिर हिलाते हुए कहा, "मैं इसी मामले के सम्बन्ध में पीटर्सबर्ग आया हूं।"

"सारा शहर इसकी चर्चा कर रहा है," बेत्सी ने कहा। "यह असम्भव स्थिति है। वह घुलती जा रही है, घुलती जा रही है। वह इतना नहीं समझता कि आन्ना ऐसी नारियों में से है, जो अपनी भावनाओं के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकतीं। दो में से केवल एक ही बात हो सकती है – या तो दृढ़ता दिखाते हुए उसे कहीं अपने साथ ले जाये या फिर तलाक़ दे दे। यह स्थिति आन्ना का दम घोंट रही है।"

"हां, हां, बिल्कुल यही बात है..." ओब्लोन्स्की ने उसास छोड़ते हुए कहा। "मैं इसी के लिये आया हूं। मेरा मतलब सिर्फ़ इसी के लिये नहीं... मुझे काम्मेरहेर* बना दिया गया है और इसलिये आभार प्रकट करना चाहिये। किन्तु मुख्य बात तो यह है कि इस मामले को निपटाना ज़रूरी है।"

"भगवान आपकी मदद करे!" बेत्सी ने कहा।

प्रिंसेस बेत्सी को ड्योढ़ी तक पहुंचाकर, फिर से दस्ताने के ऊपर, जहां नब्ज़ होती है, उसकी कलाई चूमने तथा कुछ ऐसी बेहूदा बकवास करने के बाद, जिसे सुनकर प्रिंसेस यह तय न कर सकी कि हंसे या झल्लाये, ओब्लोन्स्की अपनी बहन की ओर चल दिया। उसने उसे रोते पाया।

अत्यधिक मज़े और रंग के मूड में होते हुए भी ओब्लोन्स्की ने स्वाभावतः सहानुभूति और कवित्वपूर्ण वह अन्दाज़ अपना लिया, जो आन्ना की मनःस्थिति के अनुरूप था। उसने उसकी तबीयत के बारे में और यह पूछा कि उसने सुबह कैसे बिताई।

* ऊंचा दरबारी पद।

"बुरी, बहुत ही बुरी। दिन, सुबह, अतीत और भविष्य के दिन भी," आन्ना ने जवाब दिया।

"मुझे लगता है कि तुमने रंज के सामने घुटने टेक दिये हैं। तुम्हें इससे मुक्त होना चाहिये, ज़िन्दगी की हक़ीकत का सामना करना चाहिये। मैं जानता हूं कि ऐसा करना मुश्किल है, लेकिन ..."

"मैंने सुना है कि औरतें लोगों को उनकी बुराइयों के लिये भी प्यार करती हैं," आन्ना ने अचानक कहना शुरू किया, "मगर मैं उसकी खूबियों के लिये उससे नफ़रत करती हूं। मैं उसके साथ नहीं रह सकती। तुम इस चीज़ को समझो, उसकी सूरत देखते ही मेरा रोम-रोम जलने लगता है, मैं आपे से बाहर हो जाती हूं। मैं उसके साथ नहीं रह सकती, नहीं रह सकती। मैं क्या करूं? मैं दुखी थी और समझती थी कि मुझसे अधिक दुखी कोई नहीं हो सकता, किन्तु मुझे जिस भयानक स्थिति की अब अनुभूति हो रही है, उसकी तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी। तुम यक़ीन करोगे, मैं यह जानते हुए कि वह दयालु और बहुत अच्छा आदमी है तथा मैं उसकी जूती की नोक के बराबर भी नहीं हूं, उससे नफ़रत करती हूं। मैं उसकी उदारता के लिये उससे घृणा करती हूं। मेरे लिये और कोई चारा नहीं है, सिवा इसके कि ..."

आन्ना ने "मर जाऊं" कहना चाहा, किन्तु ओब्लोन्स्की ने उसे यह कहने नहीं दिया।

"तुम बीमार और झल्लायी हुई हो," उसने कहा, "सच मानो कि तुम मामले को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर रही हो। ऐसी कोई भयानक बात नहीं है।"

और ओब्लोन्स्की मुस्करा दिया। ओब्लोन्स्की की जगह कोई भी अन्य व्यक्ति हताशा की ऐसी स्थिति में कभी न मुस्कराता (मुस्कराना बड़ा कठोर प्रतीत होता), किन्तु उसकी मुस्कान में इतनी दयालुता और लगभग नारी सुलभ ऐसा स्नेह था, कि उसकी मुस्कान ने ठेस लगाने के बजाय शान्ति और चैन दिया। उसके चैन देनेवाले धीमे-धीमे शब्दों और मुस्कान ने बादाम रोग़न जैसी शान्ति तथा चैन देने का प्रभाव पैदा किया। आन्ना ने शीघ्र ही इसे अनुभव किया।

"नहीं, स्तीवा," वह बोली। "मैं बरबाद हो गयी, बरबाद हो

गयी! इससे भी बुरा हाल है मेरा। अभी बरबाद नहीं हुई, यह नहीं कह सकती कि सब कुछ ख़त्म हो चुका है। इसके विपरीत, मैं यह अनुभव करती हूं कि सब कुछ ख़त्म नहीं हुआ। मैं बहुत कसे हुए तार के समान हूं, जो टूटकर रहेगा। लेकिन अभी सब कुछ ख़त्म नहीं हुआ... और भयानक अन्त होगा।"

"कोई बात नहीं, तार को धीरे-से ढीला किया जा सकता है। ऐसी कोई मुश्किल नहीं, जिसका हल न हो।"

"मैंने सोचा है, बहुत सोचा है। सिर्फ़ एक ही..."

उसकी डरी-सहमी हुई नज़र से वह फिर समझ गया कि आन्ना के मतानुसार उसके लिये मौत ही एक रास्ता है और उसने उसे यह शब्द कहने नहीं दिया।

"बिल्कुल नहीं," ओब्लोन्स्की ने कहा। "तुम अपनी स्थिति को मेरी तरह नहीं समझ सकतीं। तुम मुझे साफ़-साफ़ अपनी बात कहने की अनुमति दो।" वह फिर से अपनी बादाम रोग़न वाली मुलायम मुस्कान के साथ मुस्कराया। "मैं मामले को शुरू से लेता हूं: तुमने ऐसे आदमी से शादी की, जो तुमसे बीस साल बड़ा है। तुमने प्यार के बिना या प्यार को जाने बिना शादी की। मान लेते हैं कि यह ग़लती थी।"

"बहुत भयानक ग़लती!" आन्ना ने कहा।

"लेकिन मैं दोहराता हूं – यह एक हक़ीक़त है। इसके बाद हम कह सकते हैं कि तुम्हें बदक़िस्मती से उस आदमी से प्यार हो गया, जो तुम्हारा पति नहीं है। यह बदक़िस्मती है, मगर हक़ीक़त है। तुम्हारे पति ने इसको माना और तुम्हें क्षमा कर दिया।" वह हर वाक्य के बाद उसकी आपत्ति की प्रतीक्षा करते हुए रुकता, किन्तु आन्ना ने कुछ भी नहीं कहा। "बात ऐसी ही है। अब सवाल यह है – तुम अपने पति के साथ रह सकती हो या नहीं? तुम ऐसा चाहती हो या नहीं? वह ऐसा चाहता है या नहीं?"

"मैं कुछ भी, कुछ भी नहीं जानती।"

"लेकिन तुमने ख़ुद ही यह कहा था कि तुम उसे बर्दाश्त नहीं कर सकतीं।"

"नहीं, मैंने नहीं कहा। मैं इससे इन्कार करती हूं। मैं कुछ भी नहीं जानती और कुछ भी नहीं समझती।"

"लेकिन, सुनो तो..."

"तुम नहीं समझ सकते। मुझे ऐसा लगता है कि मैं सिर के बल तेज़ी से किसी खाई में गिरती जा रही हूं, लेकिन मुझे बचना नहीं चाहिये। और बच भी नहीं सकती।"

"कोई बात नहीं, हम किसी तरह तुम्हें खाई में गिरने से बचा लेंगे। मैं तुम्हारी विवशता को समझता हूं, समझता हूं कि तुम अपनी इच्छा, अपनी भावना को व्यक्त करने का साहस नहीं कर पाती हो।"

"मैं कुछ भी, कुछ भी नहीं चाहती हूं... सिर्फ़ इतना ही कि सब कुछ ख़त्म हो जाये।"

"किन्तु वह यह देखता और जानता है। क्या तुम यह समझती हो कि उसे इससे कम परेशानी हो रही है? तुम यातना सह रही हो, वह यातना सह रहा है। लेकिन इससे नतीजा क्या निकल सकता है? जबकि तलाक़ इस सारी मुसीबत का अन्त कर देगा," स्तीवा ने किसी तरह अपना यह मुख्य विचार व्यक्त कर दिया और अर्थपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा।

आन्ना ने कोई जवाब नहीं दिया और केवल अपने कटे हुए छोटे-छोटे बालोंवाला सिर हिला दिया। किन्तु सहसा पहले जैसे सौन्दर्य से चमक उठनेवाले चेहरे के भाव से ओब्लोन्स्की ने यह समझ लिया कि आन्ना ने केवल इसी लिये ऐसा नहीं चाहा था कि उसे यह असम्भव सुख प्रतीत हुआ था।

"मुझे तुम दोनों के लिये बेहद दुख है। अगर मुझे इस मामले को निपटाने में सफलता मिल गयी तो तुम्हें बता नहीं सकता कि मुझे कितनी ख़ुशी होगी!" ओब्लोन्स्की ने अब साहस से मुस्कराते हुए कहा। "तुम कुछ भी, कुछ भी नहीं कहो! काश, भगवान मुझे वैसे ही कहने की शक्ति दे, जैसे मैं अनुभव करता हूं। मैं उसके पास जाता हूं।"

आन्ना ने सोच में डूबी, चमकती आंखों से भाई की तरफ़ देखा और कुछ नहीं कहा।

(२२)

ओब्लोन्स्की कुछ वैसी ही गम्भीर मुद्रा बनाये हुए, जिस मुद्रा में वह अपने कार्यालय में अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठता था, कारेनिन के कमरे में दाख़िल हुआ। कारेनिन पीठ पीछे हाथ बांधे और कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाते हुए उसी विषय के बारे में सोच रहा था, जिसकी स्तीवा उसकी पत्नी के साथ चर्चा कर रहा था।

"मैं कोई ख़लल तो नहीं डाल रहा हूं?" ओब्लोन्स्की ने बहनोई को देखकर अचानक घबराहट-सी महसूस करते हुए पूछा, जो उसके स्वभाव के अनुरूप नहीं था। अपनी इस घबराहट को छिपाने के लिये उसने कुछ देर पहले ख़रीदा गया नये ढंग से खुलनेवाला सिगरेट-केस निकाला और चमड़े को सूंघकर सिगरेट निकाली।

"नहीं। तुम्हें मुझसे कोई काम है क्या?" कारेनिन ने बुझे मन से जवाब दिया।

"हां, मैं चाहता था ... मुझे बात ... बात करनी है," ओब्लोन्स्की ने हैरानी से भीरुता अनुभव करते हुए, जिसका वह अभ्यस्त नहीं था, जवाब दिया।

यह अनुभूति इतनी अप्रत्याशित और अजीब-सी थी कि ओब्लोन्स्की को इस बात का विश्वास नहीं हुआ कि यह उसकी आत्मा की आवाज़ थी, जो कह रही थी – तुम जो करना चाहते हो, वह बुरा है। ओब्लोन्स्की ने अपनी इस भीरुता पर सप्रयास क़ाबू पा लिया।

"उम्मीद करता हूं कि तुम बहन के प्रति मेरे प्यार और तुम्हारे प्रति मेरे हार्दिक लगाव और आदर पर विश्वास करते हो," उसने घबराहट से लाल होते हुए कहा।

कारेनिन रुका और उसने कोई उत्तर नहीं दिया, किन्तु उसके चेहरे के इस भाव ने कि मैंने अपने को क़िस्मत के हाल पर छोड़ दिया है, उसे चकित कर दिया।

"मेरा ऐसा इरादा है, मैं चाहता हूं कि बहन और तुम दोनों की आपसी स्थिति की चर्चा करूं," ओब्लोन्स्की ने अपनी झिझक-झेंप से, जो उसके स्वभाव में नहीं थी, जूझना जारी रखते हुए कहा।

कारेनिन उदासी से मुस्कराया, उसने अपने साले की तरफ़ देखा, मेज़ के क़रीब गया और वह ख़त उठाकर साले को दे दिया, जिसे लिखना शुरू किया था।

"मैं लगातार इसी बारे में सोचता रहता हूं। यह है वह ख़त, जो मैंने ऐसा मानते हुए लिखना शुरू किया था कि मेरे लिये लिखित रूप में उसके सामने अपने विचार व्यक्त करना बेहतर रहेगा, क्योंकि मेरी उपस्थिति से उसे झल्लाहट होती है," उसने पत्र देते हुए कहा।

ओब्लोन्स्की ने पत्र ले लिया, चकराकर अपने ऊपर जमी हुई आंखों को आश्चर्य से देखा और पत्र पढ़ने लगा।

"मैं देखता हूं कि मेरी उपस्थिति से आपको परेशानी होती है। मेरे लिये इस बात का विश्वास करना बेशक कितना ही दुखद क्यों न था, मैं देखता हूं कि स्थिति ऐसी ही है और इससे भिन्न नहीं हो सकती। मैं आपको दोष नहीं देता और भगवान इस बात का साक्षी है कि आपकी बीमारी के समय आपको देखने पर मैंने सच्चे दिल से वह सब भूल जाना चाहा, जो हमारे बीच हुआ था, और नई ज़िन्दगी शुरू करनी चाही। मैंने जो कुछ किया, मुझे उसका पश्चाताप नहीं है और कभी नहीं होगा। किन्तु मैं केवल एक ही चीज़ चाहता था, आपकी भलाई, आपकी आत्मा की भलाई और अब मैं यह देख रहा हूं कि मुझे इसमें सफलता नहीं मिली। आप स्वयं ही मुझे बता दीजिये कि कैसे आपको सच्चा सुख और अपनी आत्मा की शान्ति मिल सकती है। मैं अपने को आपकी इच्छा और न्याय भावना पर छोड़ता हूं।"

ओब्लोन्स्की ने पत्र वापस दे दिया और यह न जानते हुए कि क्या कहे, पहले जैसी परेशानी में बहनोई की तरफ़ देखता रहा। यह ख़ामोशी इन दोनों के लिये इतनी बोझिल थी कि कारेनिन के चेहरे पर नज़र जमाये हुए ख़ामोशी के इन लम्बे क्षणों में उसे अपने होंठों में पीड़ायुक्त फड़कन अनुभव होने लगी।

"तो मैं यह बताना चाहता था उसे," कारेनिन ने दूसरी ओर मुंह करते हुए कहा।

"हां, हां..." गला रुंध जाने के कारण कुछ भी कह पाने में असमर्थ ओब्लोन्स्की ने कहा। "हां, हां। मैं आपके दिल की हालत को समझता हूं," आख़िर उसने कहा।

"मैं यह जानने को उत्सुक हूं कि वह क्या चाहती है," कारेनिन बोला।

"मुझे लगता है कि वह ख़ुद अपनी स्थिति को नहीं समझती है। उसके लिये कोई निर्णय करना सम्भव नहीं," ओब्लोन्स्की ने सम्भलते हुए कहा। "वह तुम्हारी उदारता के बोझ से दबी हुई है, उससे कुचली हुई है। इस पत्र को पढ़ने पर वह कुछ भी नहीं कह पायेगी, और अधिक नीचे धसक जायेगी।"

"तो ऐसी स्थिति में क्या किया जाये? मामले को कैसे निपटाया जाये?.. उसकी इच्छा कैसे मालूम की जाये?"

"अगर तुम मुझे अपना मत व्यक्त करने की अनुमति दो, तो मेरे ख़्याल में तुम पर ही उन उपायों की ओर संकेत करना निर्भर है, जिन्हें इस स्थिति का अन्त करने के लिये ज़रूरी समझते हो।"

"तो तुम्हारे मुताबिक़ उसका अन्त करना ज़रूरी है?" कारेनिन ने उसे टोका। "लेकिन कैसे?" उसने आंखों के सामने हाथों से अजीब-सा संकेत करते हुए इतना और पूछ लिया। "मुझे किसी रास्ते की कोई सम्भावना नज़र नहीं आती।"

"हर मुश्किल का कोई न कोई हल होता है," ओब्लोन्स्की ने उठते और प्रफुल्ल होते हुए कहा। "वह वक़्त भी था, जब तुमने नाता तोड़ना चाहा था... अगर तुम्हें अब इस बात का विश्वास हो गया है कि तुम दोनों एक-दूसरे को सुखी नहीं बना सकते..."

"सुख के भिन्न अर्थ हो सकते हैं। किन्तु मान लो कि मैं हर चीज़ के लिये राज़ी हूं, मैं कुछ भी नहीं चाहता हूं। तब हमारी स्थिति का क्या समाधान हो सकता है?"

"अगर तुम मेरी राय जानना चाहते हो," ओब्लोन्स्की ने उसी चैन देनेवाली कोमल मुस्कान के साथ कहा, जिसे आन्ना से बात करते हुए वह अपने होंठों पर लाया था। उसकी दयालुतापूर्ण मुस्कान इतना विश्वास पैदा करनेवाली थी कि कारेनिन अनचाहे ही अपनी दुर्बलता अनुभव करते और उसके अधीन होते हुए ओब्लोन्स्की द्वारा कही जानेवाली बात पर भरोसा करने को तैयार था। "वह कभी यह नहीं कह पायेगी। लेकिन सिर्फ़ एक ही रास्ता है, वह सिर्फ़ एक ही चीज़ चाह सकती है," ओब्लोन्स्की कहता गया, "तुम दोनों के सम्बन्धों और

उनसे जुड़ी हुई स्मृतियों का अन्त। मेरे ख़्याल में आप लोगों की स्थिति में नये सम्बन्धों का स्पष्टीकरण आवश्यक है। और ये नये सम्बन्ध दोनों पक्षों के स्वतन्त्र होने पर ही क़ायम हो सकते हैं।"

"तलाक़," कारेनिन ने घृणा से उसे टोका।

"हां, मैं समझता हूं कि तलाक़ ही एक रास्ता है, तलाक़ ही," ओब्लोन्स्की ने लाल होते हुए दोहराया। "तुम दोनों की स्थिति वाले सभी दम्पतियों के लिये सभी दृष्टियों से यही सबसे अधिक सूझ-बूझ का रास्ता है। पति-पत्नी को अगर यह पता चल गया है कि उनका एकसाथ ज़िन्दगी बिताना मुमकिन नहीं, तब चारा ही क्या रह जाता है? ऐसा तो हमेशा ही हो सकता है।" कारेनिन ने गहरी सांस लेकर आंखें मूंद लीं। "इस मामले में सिर्फ़ एक ही बात को ध्यान में रखना ज़रूरी है–पति-पत्नी में से कोई किसी अन्य से शादी करना चाहता है या नहीं? अगर नहीं, तो मामला बड़ा सीधा-सादा हो जाता है," ओब्लोन्स्की ने अपनी घबराहट पर अधिकाधिक क़ाबू पाते हुए कहा।

उत्तेजना से माथे पर बल डालते हुए कारेनिन ने अपने आपसे कुछ कहा और कोई उत्तर नहीं दिया। ओब्लोन्स्की को जो कुछ बहुत ही सीधा-साधारण प्रतीत हो रहा था, कारेनिन उस पर हज़ारों बार सोच-विचार कर चुका था। उसे यह सब कुछ न केवल बहुत सीधा-साधारण ही नहीं, बल्कि बिल्कुल असम्भव प्रतीत हुआ। तलाक़, वह अब जिसकी सभी तफ़सीलें जानता था, उसे इसलिये असम्भव प्रतीत होता था कि आत्मसम्मान की भावना और धर्म के प्रति आदर भाव उसे व्यभिचार का झूठा अपराध अपने ऊपर नहीं लेने देते थे और इससे भी अधिक इसलिये ऐसा करने से रोकते थे कि उसकी पत्नी, जिसे वह क्षमा कर चुका था तथा प्यार करता था, बेनक़ाब और बेइज़्ज़त हो। कुछ अन्य और अधिक महत्त्वपूर्ण कारणों से भी उसे तलाक़ नामुमकिन लगा।

तलाक़ हो जाने पर बेटे का क्या होगा? उसे मां के पास छोड़ना सम्भव नहीं था। तलाक़ दी गयी मां का अपना ग़ैरक़ानूनी परिवार होगा, जिसमें सौतेले बेटे की स्थिति और उसका पालन-शिक्षण सम्भवतः बुरा होगा। उसे अपने पास रखूं? वह जानता था कि उसके लिये ऐसा करना तो बदला लेना होगा और वह ऐसा नहीं करना चाहता था।

लेकिन इसके अलावा कारेनिन को तलाक़ सबसे अधिक इसलिये असम्भव प्रतीत हुआ कि तलाक़ के लिये राज़ी होने से वह आन्ना को बरबाद कर डालेगा। मास्को में डौली द्वारा कहे गये ये शब्द उसके दिल में घर कर गये थे कि तलाक़ देने की बात सोचकर वह अपना ही ख़्याल कर रहा है और यह नहीं सोचता कि ऐसा करके वह आन्ना को सदा के लिये बरबाद कर देगा। इन शब्दों को अपने क्षमादान और बच्चों के प्रति लगाव से जोड़कर अब वह अपने ही ढंग से इनका अर्थ निकालता था। तलाक़ के लिये राज़ी होने, आन्ना को आज़ादी देने का अब उसके लिये यही मतलब था कि बच्चों से, जिन्हें वह प्यार करता था, अपना अन्तिम सम्बन्ध-सूत्र तोड़ लेना, नेकी के रास्ते पर आन्ना का आख़िरी सहारा छीन लेना और उसे बरबादी के गड्ढे में धकेल देना। वह जानता था कि अगर आन्ना को तलाक़ मिल जायेगा तो वह व्रोन्स्की से अपना नाता जोड़ लेगी और यह सम्बन्ध ग़ैरक़ानूनी तथा अपराधपूर्ण होगा, क्योंकि ईसाई धर्म के क़ानून-क़ायदे के मुताबिक़ पति के ज़िन्दा रहने तक पत्नी का दूसरा विवाह नहीं हो सकता। "वह उसके साथ नाता जोड़ लेगी और एक-दो साल के बाद वह उसे छोड़ देगा या फिर वह किसी अन्य से अपना सम्बन्ध जोड़ लेगी," कारेनिन सोच रहा था, "और इस ग़ैरक़ानूनी तलाक़ के लिये राज़ी होकर मैं उसकी तबाही के लिये ज़िम्मेदार होऊंगा।" उसने सैकड़ों बार इस पर विचार किया था और उसे इस बात का यक़ीन हो गया था कि तलाक़ का मामला, जैसा कि उसका साला कह रहा था, बहुत सीधा-सरल ही नहीं, बल्कि बिल्कुल असम्भव था। वह ओब्लोन्स्की के एक भी शब्द पर विश्वास नहीं कर रहा था, उसके हर शब्द के जवाब में वह हज़ारों बातें कह सकता था, मगर वह ऐसा अनुभव करता हुआ उसे सुन रहा था कि उसके शब्दों में वह प्रबल कठोर शक्ति अपने को अभिव्यक्ति प्रदान कर रही है, जो उसके जीवन का संचालन करती है और जिसके सामने उसे घुटने टेकने होंगे।

"सवाल सिर्फ़ यह है कि कैसे, किन शर्तों पर तुम तलाक़ देने को तैयार होगे। वह कुछ नहीं चाहती, तुमसे कोई अनुरोध करने की हिम्मत नहीं कर सकती, सब कुछ तुम्हारी दरियादिली पर छोड़ती है।"

"हे भगवान! हे भगवान! किसलिये?" कारेनिन ने उस तलाक़ की तफ़सीलें याद आने पर सोचा, जिसमें पति ने सारा दोष अपने ऊपर

ले लिया था और व्रोन्स्की के अन्दाज़ में ही लज्जा से अपना मुंह ढक लिया था।

"तुम बहुत परेशान हो, मैं यह समझ सकता हूं, लेकिन अगर तुम गम्भीरता से सोच-विचार करो..."

"दायें गाल पर तमाचा मारनेवाले के सामने बायां गाल कर दो और कोट उतारनेवाले को क़मीज़ दे दो," कारेनिन ने सोचा।

"हां, हां," वह चिचियाती-सी आवाज़ में चिल्ला उठा। "मैं सारी बदनामी को अपने सिर पर लेता हूं, बेटे को भी दे दूंगा, लेकिन... लेकिन क्या यह बेहतर नहीं होगा कि सब कुछ ऐसे ही रहने दिया जाये?.. ख़ैर, जैसा चाहते हो, वैसा करो..."

और वह दूसरी तरफ़ मुंह करके, ताकि साला उसे देख न सके, खिड़की के पास कुर्सी पर जा बैठा। उसे कटुता और लज्जा अनुभव हो रही थी, किन्तु इस कटुता और लज्जा के साथ उसे अपनी विनम्रता की ऊंचाई से ख़ुशी और भावविह्वलता भी अनुभव हो रही थी।

ओब्लोन्स्की द्रवित हो उठा। वह कुछ क्षण चुप रहा।

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच, मुझ पर यक़ीन करो कि वह तुम्हारी दरियादिली को बहुत ऊंचा आंकेगी," उसने कहा। "लेकिन ऐसा लगता है कि भगवान की ऐसी ही मर्ज़ी है," उसने इतना और जोड़ दिया और इतना कहने के बाद यह महसूस किया कि उसने बेतुकी-सी बात कह दी है और इस बेवक़ूफ़ी की बात पर वह अपनी मुस्कान को बड़ी मुश्किल से वश में कर पाया।

कारेनिन ने कुछ कहना चाहा, मगर आंसुओं ने उसे ऐसा नहीं करने दिया।

"यह दुर्भाग्य अनिवार्य है और उसे स्वीकार करना चाहिये। मैं इस दुर्भाग्य को अस्तित्व में आ चुका तथ्य मानता हूं और तुम्हारी तथा आन्ना की सहायता करने की कोशिश कर रहा हूं," ओब्लोन्स्की ने कहा।

ओब्लोन्स्की जब बहनोई के कमरे से बाहर निकला, तो द्रवित था, किन्तु इस चेतना ने उसकी इस ख़ुशी में बाधा नहीं डाली कि उसने इस काम को कामयाबी से सिरे चढ़ा लिया है, क्योंकि उसे इस बात का यक़ीन था कि कारेनिन अपने शब्दों पर अटल रहेगा। इस ख़ुशी में उसके

दिमाग़ में आनेवाले इस विचार की ख़ुशी भी शामिल हो गयी कि जब यह मामला तय हो जायेगा, तो वह अपनी बीवी और नज़दीकी यार-दोस्तों से यह सवाल करेगा : "मेरे और सम्राट के बीच क्या अन्तर है? सम्राट तलाक़ की व्यवस्था करता है और इससे किसी को भी सुख नहीं मिलता। किन्तु मैंने तलाक़ दिलवाया और तीन व्यक्तियों का जीवन सुखी हो गया ... या फिर यह कि मेरे और सम्राट के बीच क्या समानता है? जब ... ख़ैर, कोई अधिक मज़ेदार बात सोच लूंगा," उसने मुस्कराते हुए अपने आपसे कहा।

(२३)

व्रोन्स्की का घाव काफ़ी ख़तरनाक था, यद्यपि गोली दिल में नहीं लगी थी। कई दिनों तक वह ज़िन्दगी और मौत के बीच लटकता रहा। जब वह पहली बार बातचीत करने के लायक़ हुआ, तो केवल उसकी भाभी वार्या ही कमरे में थी।

"वार्या!" उसने कड़ी नज़र से उसे एकटक देखते हुए कहा, "मैं भूल से अपने पर गोली चला बैठा था। कृपया कभी इस बात की चर्चा नहीं करना और दूसरों से भी ऐसा कह देना। नहीं तो यह बहुत ही बड़ी मूर्खता प्रतीत होगी!"

व्रोन्स्की के शब्दों का उत्तर दिये बिना वार्या उसके ऊपर झुक गयी और ख़ुशी भरी मुस्कान के साथ उसने उसके चेहरे को देखा। उसकी आंखें शान्त थीं, ज्वरग्रस्त नहीं थीं, किन्तु उनमें कड़ाई थी।

"शुक्र है भगवान का!" वार्या ने कहा। "तुम्हें दर्द नहीं महसूस हो रहा?"

"थोड़ा-सा इस जगह," उसने छाती की ओर इशारा किया।

"तो लाओ, मैं पट्टी बांध दूं।"

वार्या जब तक पट्टी बांधती रही, व्रोन्स्की अपने चौड़े जबड़ों को भींचे हुए चुपचाप उसकी ओर देखता रहा। पट्टी बंध जाने पर उसने कहा :

"मैं सरसाम में बहक नहीं रहा हूं। कृपया ऐसा करो कि यह चर्चा न होने पाये कि मैंने जान-बूझकर अपने को गोली मारी थी।"

"कोई भी ऐसा नहीं कह रहा है। हां, यह उम्मीद ज़रूर करती हूं कि तुम अब कभी भूल से अपने पर गोली नहीं चलाओगे," उसने प्रश्नसूचक मुस्कान के साथ कहा।

"सोचता हूं कि ऐसा नहीं करूंगा, लेकिन बेहतर होता अगर..."

और वह उदासी से मुस्करा दिया।

इन शब्दों और इस मुस्कान के बावजूद, जिनसे वार्या बहुत डर गयी थी, जब घाव की सूजन जाती रही और उसकी तबीयत सुधरने लगी, तो उसने महसूस किया कि अपने दुख के एक भाग से पूरी तरह मुक्त हो गया है। अपने को गोली मारकर उसने मानो लज्जा और अपमान का वह धब्बा धो डाला था, जिसे पहले अनुभव करता रहता था। अब वह शान्त भाव से कारेनिन के बारे में सोच सकता था। वह उसकी सारी उदारता को स्वीकार करता था और अपने को अपमानित नहीं अनुभव करता था। इसके अलावा वह फिर से अपने जीवन की पहलेवाली लीक पर चलने लगा। उसके लिये अब लज्जा के बिना लोगों से आंखें मिलाना और अपनी आदतों के मुताबिक़ जीना सम्भव था। पर लगातार कोशिश करने के बावजूद वह अफ़सोस की इस भावना को, जो कभी-कभी हताशा की सीमा तक पहुंच जाती थी, दिल से नहीं निकाल पाता था कि आन्ना को सदा के लिये खो बैठा है। अब, जब उसने आन्ना के पति के सामने अपने अपराध का प्रायश्चित कर लिया था, उसे आन्ना से इन्कार करना चाहिये और कभी आन्ना तथा उसके पश्चाताप और उसके पति के बीच नहीं खड़े होना चाहिये, इस बात का उसने अपने दिल में पक्का इरादा बना लिया था। लेकिन वह आन्ना का प्यार खो देने के दुख को हृदय से नहीं निकाल सकता था, सुख के उन क्षणों को स्मृति-पट से नहीं मिटा सकता था, जिनकी उसे उसके साथ अनुभूति हुई थी, जिनका उसने तब बहुत कम मूल्यांकन किया था और जो अपने समूचे अनूठे सौन्दर्य के साथ अब उसका पीछा करते रहते थे।

सेर्पुख़ोव्स्कोई ने ताशक़न्द में व्रोन्स्की की नियुक्ति की व्यवस्था कर दी और व्रोन्स्की ने किसी तरह की दुविधा में पड़े बिना उसे फ़ौरन स्वीकार कर लिया। किन्तु वहां जाने का वक़्त जैसे-जैसे नज़दीक आता गया, वैसे-वैसे उसके लिये वह बलिदान अधिकाधिक बोझिल होता गया, जो वह अपना कर्त्तव्य मानते हुए कर रहा था।

व्रोन्स्की का घाव भर गया और वह ताशक़न्द जाने की तैयारी करने के लिये बग्घी में इधर-उधर आने-जाने लगा।

"एक बार उससे मिल लूं और उसके बाद दफ़न हो जाऊं, मर जाऊं," वह सोचता और विदाई-भेंट के लिये बेत्सी के यहां जाने पर उसने यही भाव व्यक्त किया। बेत्सी यही सन्देश लेकर आन्ना के यहां गयी और उसका इन्कारी जवाब लेकर लौटी।

"यह और भी अच्छा हुआ," व्रोन्स्की ने यह जवाब मिलने पर सोचा। "यह दुर्बलता थी, जो मेरी बची-बचायी शक्ति का अन्त कर देती।"

अगले दिन बेत्सी सुबह ही ख़ुद उसके पास आई और उसे बताया कि उसे ओब्लोन्स्की से यह अच्छी ख़बर मिली है कि कारेनिन तलाक़ देने को राज़ी हो गया है और इसलिये वह उससे मिल सकता है।

बेत्सी को विदा करने की चिन्ता किये बिना, अपने सभी निर्णयों को भूलकर तथा यह पूछे बिना कि कब उसके यहां जा सकता है, कि पति कहां है, व्रोन्स्की उसी क्षण बग्घी में बैठकर कारेनिन के घर की ओर रवाना हो गया। वह किसी चीज़ और किसी व्यक्ति की ओर ध्यान न देकर भागता हुआ सीढ़ियां चढ़ गया और मुश्किल से अपने को भागने से रोकता हुआ तेज़ क़दमों से उसके कमरे में दाख़िल हो गया। यह सोचे और यह देखे बिना कि कमरे में कोई है अथवा नहीं, उसने आन्ना को बांहों में भर लिया और उसके चेहरे, बांहों और गर्दन पर चुम्बनों की बौछार करने लगा।

आन्ना इस मिलन के लिये अपने को तैयार करती और यह सोचती रही थी कि उससे क्या कहेगी। किन्तु वह कुछ भी नहीं कह पायी। व्रोन्स्की के भावावेश ने आन्ना को भी अपने वश में कर लिया। आन्ना ने व्रोन्स्की को, अपने को सम्भालना चाहा, पर देर हो चुकी थी। व्रोन्स्की की भावना आन्ना पर हावी हो गयी थी। उसके होंठ ऐसे कांप रहे थे कि वह देर तक कुछ नहीं कह सकी।

"हां, तुमने पूरी तरह मुझे अपने वश में कर लिया है और मैं तुम्हारी हूं," व्रोन्स्की के हाथ को अपनी छाती पर दबाते हुए उसने आख़िर कहा।

"ऐसा ही होना चाहिये था!" व्रोन्स्की बोला। "जब तक हम जीवित हैं, ऐसा ही होगा। मैं अब यह जानता हूं।"

"यह सच है," आन्ना ने अधिकाधिक पीली पड़ते और व्रोन्स्की के सिर के गिर्द बांह डालते हुए कहा। "फिर भी उस सब के बाद, जो हो चुका है, इसमें कुछ भयानक चीज़ है।"

"सब ठीक हो जायेगा, सब ठीक हो जायेगा, बहुत ही सौभाग्य-शाली होंगे हम! हमारा प्यार, अगर वह और तीव्र हो सकता था, तो इसलिये कि उसमें कुछ भयानक है," व्रोन्स्की ने सिर ऊपर करते और मुस्कराकर अपने मज़बूत दांतों की झलक देते हुए उत्तर दिया।

आन्ना उसके शब्दों के नहीं, बल्कि प्यार भरी आंखों के जवाब में मुस्कराये बिना नहीं रह सकती थी। उसने व्रोन्स्की का हाथ थाम लिया और उससे अपने ठण्डे गालों तथा सिर के कटे हुए बालों को सहलाने लगी।

"इन छोटे-छोटे बालों के साथ मैं तुम्हें पहचान नहीं सकता। तुम बहुत ही सुन्दर लगती हो। लड़के जैसी। मगर कितनी पीली हो तुम!"

"हां, मैं बहुत कमज़ोर हूं," उसने मुस्कराकर जवाब दिया। उसके होंठ फिर से कांप उठे।

"हम इटली जायेंगे और वहां तुम्हारी सेहत अच्छी हो जायेगी," व्रोन्स्की ने कहा।

"क्या यह सम्भव है कि पति-पत्नी की तरह केवल हम दोनों ही हों, हमारा अपना परिवार हो?" निकट से उसकी आंखों में ग़ौर से झांकते हुए उसने पूछा।

"मुझे केवल इसी बात की हैरानी है कि कैसे कभी इससे भिन्न कुछ हो सकता था।"

"स्तीवा का कहना है कि 'वह' हर बात के लिये राज़ी है, मगर मैं 'उसकी' दरियादिली को स्वीकार नहीं कर सकती," आन्ना ने सोचते और व्रोन्स्की के चेहरे से कहीं दूर देखते हुए कहा। "मैं तलाक़ नहीं चाहती, मुझे अब कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। मैं सिर्फ़ यह नहीं जानती कि सेर्योझा के बारे में वह क्या निर्णय करेगा।"

व्रोन्स्की किसी प्रकार यह नहीं समझ पा रहा था कि मिलन के इस क्षण में उसे कैसे बेटे और तलाक़ का ध्यान आ सकता था, वह उनकी चर्चा कर सकती थी। क्या सब महत्त्वहीन नहीं था?

"इसकी चर्चा नहीं करो, इसके बारे में नहीं सोचो," उसने आन्ना

के हाथ को अपने हाथ में उलटते-पलटते और अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करने की कोशिश करते हुए कहा। किन्तु आन्ना ने उसकी ओर नहीं देखा।

"ओह, मैं मर क्यों नहीं गयी, यह बेहतर होता!" उसने कहा और सिसकियों के बिना उसके दोनों गालों पर आंसू बह आये। किन्तु उसने मुस्कराने का प्रयास किया, ताकि व्रोन्स्की को ठेस न लगे।

व्रोन्स्की की भूतपूर्व धारणाओं के अनुसार ताशक़न्द में अत्यधिक प्रशंसनीय और ख़तरनाक नियुक्ति से इन्कार करना बड़े अपमान की तथा असम्भव बात होती। मगर अब क्षण भर को भी सोचे-विचारे बिना उसने इससे इन्कार कर दिया और इस कारण ऊंचे अधिकारियों में नाराज़गी का भाव देखकर फ़ौरन त्यागपत्र दे दिया।

एक महीने बाद कारेनिन बेटे के साथ ही अपने घर में रह गया। आन्ना तलाक़ लिये बिना और दृढ़तापूर्वक उससे इन्कार करके व्रोन्स्की के साथ विदेश चली गयी।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन से इस पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन के संबंध में आपकी राय जानकर और आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर बड़ी प्रसन्नता होगी। अपने सुझाव हमें इस पते पर भेजें:

प्रगति प्रकाशन,
१७, ज़ूबोव्स्की बुल्वार, मास्को,
सोवियत संघ।